232.7
यश/ब

बगलामुखी महासाधना

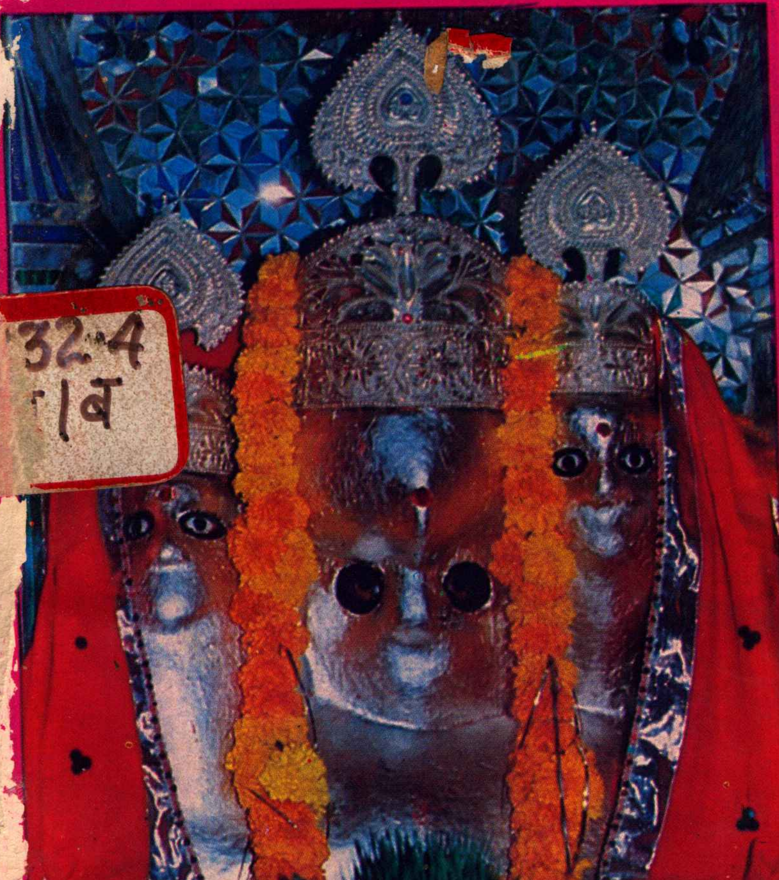

32.4
|ब

बगलामुखी महासाधना
और
दशमहाविद्या तन्त्रसार

यह शक्ति विष्णु के तेज से युक्त होने के कारण वैष्णवी है। मंगलवार युक्त चतुर्दशी की अर्द्धरात्रि में इनका आविर्भाव हुआ है। दैवी प्रकोप से बचने हेतु इसका उपयोग शाँतिकर्म, धनधान्य प्राप्ति के लिए पौष्टिक कर्म तथा शत्रु निग्रह के लिए होता है। भोग और मोक्ष दोनों की देने वाली इस देवी की उपासना से प्रत्येक दुर्लभ वस्तु की प्राप्ति की जा सकती है। इसके साथ ही पुस्तक में दशमहाविद्या तन्त्र की जानकारी भी दी है।

□□

माँ आद्यायै, !
जो तन है, यह भी तेरा है।
जो मन है, यह भी तेरा है॥
इस जग का काज चलाने को।
जो धन है, यह भी तेरा है॥
तेरा है यशपाल भी तेरा है।
बिन तेरे माँ! क्या मेरा है॥

—आद्यानन्द यशपाल
"भारती"

आद्यानन्द यशपाल भारती विरचित

त्रैलोक्य स्तम्भनी विद्या

बगलामुखी महासाधना
और
दशमहाविद्या तन्त्रसार

दश महाविद्याओं में जिन्हें श्री पीताम्बरा, वल्गामुखी, ब्रह्मास्त्र एवं त्रैलोक्य स्तम्भनी के नाम से जाना जाता है; साधना विषयक ज्ञान एवं पूजन विधि, स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम तथा प्रभावी यंत्र-मंत्रों सहित।

लेखक :
योगीराज यशपाल जी

मूल्य : ४०-००

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (२४९४०१)

☐ प्रकाशक—

रणधीर प्रकाशन

रेलवे रोड, आरती होटल के पीछे, हरिद्वार-२४९४०१

फोन नं० (०१३३) ४२६२९७

☐ वितरक—रणधीर बुक सेल्स (शो रूम)

अस्पताल के सामने, रेलवे रोड, हरिद्वार

☐ संस्करण—प्रथम : १९९४

☐ मूल्य : चालीस रुपये

☐ मुद्रक—

सुरेन्द्र प्रिंटर्स

४/१२३ सरवरिया मार्केट, विश्वास नगर,

शाहदरा, दिल्ली-३२

अनुक्रमणिका

१. दो बातें	...	९
२. बगलामुखी पूजन	...	१५
३. शोडशोपचार पूजन विधि	...	२२
४. स्वागतम्, स्थिरी कृत्यम्	...	२४
५. आसन, पाद्यम	...	२४
६. उद्वर्तनम् अर्घ्यम्, आचमनीयम्	...	२५
७. स्नानीयम्, अष्टांगार्घ्यम्	...	२६
८. मधुपर्कम	...	२६
९. पुनराचमनीयम्, श्वेत चन्दनम्	...	२७
१०. सिन्दूरम्	...	२७
११. कुंकुमम्, अक्षतम्	...	२८
१२. पुष्पम्, बिल्व पत्रम्	...	२८
१३. पुष्प मालाम्, वस्त्रम्	...	२९
१४. द्वितीय वस्त्रम्, अलंकरणम्	...	२९
१५. धूपम्, दीपम्, सुगन्धित द्रव्यम्	...	३०
१६. कर्पूर दीपम्, नैवेद्यम्	...	३१
१७. पायसम्, मोदकम्	...	३१
१८. अपूपानिम्, फलमूलादिम्	...	३२
१९. पानीयम्, करोद्वर्तन जलम्	...	३२
२०. आचमनीयम्, ताम्बूलम्, कज्जलम्	...	३३
२१. सौवीराञ्जनम्, अलक्तम्	...	३३
२२. चामरम्, व्यंजनम्	...	३४

२३. घण्टा वाद्यम्, दक्षिणाम् ... ३४
२४. पुष्पांजलिम्, नीराजनम् ... ३५
२५. अच्छिद्रावधारणम, क्षमापनम् ... ३५
२६. अथांग परिवारादि पूजन ... ३७
२७. पूजन विधि, विनियोग मन्त्र ... ३८
२८. ऋष्यादिन्यास, करन्यास ... ३९
२९. हृदयादिन्यास ... ३९
३०. यन्त्र पूजा ... ४०
३१. बगलामुखी मन्त्र ... ५०
३२. जपादि कहाँ करें ? ... ५२
३३. अलाबला क्या है ? ... ६०
३४. अभिचार क्या है ? ... ६१
३५. षट्-त्रिशदक्षरी विद्या क्या है ? ... ६१
३६. मन्दार विद्या क्या है ? ... ६१
३७. बगला पञ्चदशी मन्त्र क्या है ? ... ६१
३८. दश महाविद्यायें कौन हैं ? ... ६२
३९. आद्य महाविद्या कौन है ? ... ६२
४०. महाविद्या धर्म या शाखा कौन है ? ... ६२
४१. मुख शोधन मन्त्र क्या है ? ... ६३
४२. मन्त्र चैतन्य क्या है ? कुल्लुका क्या है ? ... ६३
४३. सेतु क्या है ? ... ६४
४४. महासेतु क्या है ? निर्वाण क्या है ? ... ६५
४५. प्राण योग क्या है ? दीपन क्या है ? ... ६५
४६. शीपोत्कीलन क्या है ? ... ६६
४७. श्रीबगला प्रातः स्मरणम् ... ६७
४८. श्री बगला पञ्जर स्तोत्र ... ६९

श्री बगलामुखी स्तोत्रम्

४९. अथ स्तोत्र (१), विनियोग मन्त्र ... ७५
५०. षडंगन्यास (२), करन्यास ... ७५
५१. अंगन्यास, ध्यान ... ७६
५२. श्री बगलामुखी स्तोत्रम् ... ७७

श्री बगलामुखी कवच

५३. विनियोग मन्त्र, षडंगन्यास (१) ... ८१
५४. अंगन्यास मन्त्र, करन्यास मन्त्र ... ८१
५५. पुनः अंगन्यास मन्त्र, ध्यान मन्त्र ... ८२
५६. बगलामुखी मन्त्र ... ८२
५७. श्री बगला उपनिषद ... ८६
५८. फल श्रुति ... ८७
५९. श्री पीताम्बरा उपनिषद (१) ... ८८
६०. श्री बगला हृदयम् ... ९३
६१. श्री बगलाष्टोत्तर शतनामा ... ९७
६२. विनियोग मन्त्र ... ९७
६३. विनियोग मन्त्र (१) ... १०३
६४. ध्यान, स्तोत्र ... १०४
६५. बगलामुखी जी की आरती ... ११९
६६. दशमहाविद्या तन्त्रसार ... १२३
६७. काली मन्त्र ... १२५
६८. जगन्मंगल काली कवच ... १३८
६९. तारा मंत्र ... १४५
७०. तारा कवच ... १४७
७१. भुवनेश्वरी मन्त्र ... १५०

७२. पातक दहन भुवनेश्वरी कवच	...	१६१
७३. छिन्नमस्ता मन्त्र	...	१७०
७४. धूमावती मन्त्र	...	१७७
७५. बगला मन्त्र	...	१७९
७६. मातंगी मन्त्र	...	१८२
७७. कमला मन्त्र	...	१८७
७८. लक्ष्मी कवच	...	२०६
७९. महाविद्या मन्त्र	...	२११
८०. महाविद्या कवच	...	२१८

दो बातें

यह बात नही सौगात है।
जगदम्बा सदा ही साथ है॥

वह, जिसे हम प्रागैतिहासिक काल के नाम से पढ़ते, समझते व जानते हैं, उसमें जब युद्ध या विश्व युद्ध हुआ करते थे तो जो तीरों के रूप में साधारण तीर छोड़े जाते थे उनकी तो नहीं परन्तु जो मारक तीर छोड़े जाते थे जिन्हें आधुनिक शब्दों में मिसाईल कह सकते हैं उनमें से ज्यादातर खतरनाक तीर रूपी मिसाईल शत्रु स्तम्भन, मारण व उच्चाटन के हुआ करते थे। आज कल आधुनिक शस्त्र रासायनादि के सम्मिश्रण से बनते हैं जबकि उस भूतकाल में यह शस्त्र विभिन्न देवी देवताओं के प्रभाव से तैयार किये जाते थे। तब जितने भी स्तम्भन के प्रयोग होते थे उनके ऊपर सर्वप्रथम श्री पीताम्बरा बगलामुखी का अधिपत्य हुआ करता था। श्री पीताम्बरा दश महाविद्याओं में एक अभूतपूर्व व अनूठा स्थान रखती है जो कि श्रीकुल से सम्बंधित है। मैंने अपनी पुस्तक 'संकट मोचिनी कालिका सिद्धि' व 'सृष्टि का रहस्य दश महाविद्या' में कुल व महाविद्या के सम्बंध में कुछ स्पष्टीकरण किया है।[1] इस विषय पर कुछ और जानने के लिए उन्हीं पुस्तकों का अवलोकन करें। यहाँ पर तो मैं केवल माता के बगलामुखी स्वरूप की ही वार्ता करूँगा क्योंकि प्रस्तुत पुस्तक का प्रमुख विषय ही यही है।

---

१. यह पुस्तकें रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार के द्वारा प्राप्त हो सकती हैं।

श्री जगदम्बा माता के एक अभिन्न स्वरूप जो कि पीले वस्त्र धारण करता है और जिसके विषय में श्री शिव जी पार्वती जी को 'स्वतन्त्र तन्त्र' के माध्यम से बताते हैं कि—

अथ वक्ष्यामि देवेशि बगलोत्पत्ति कारणम् ।
पुरा कृत युगे देवि वात क्षोभ उपस्थिते ॥

हे देवी ! बगलामुखी के आविर्भाव का कारण कहता हूं। पुरा कृत युग में एक भीषण तूफान उठा ।

चराचर विनाशाय विष्णुश्चिन्ता परायण: ।
तपस्यया च संतुष्टा महात्रिपुर सुन्दरी ॥

उस तूफान से चराचर समस्त जगतों का विनाश होने लगा । जिसे देख कर भगवान विष्णु को चिन्ता हो गई । उन्होंने तपस्या[1] करके श्री महात्रिपुर सुन्दरी को संतुष्ट किया ।

हरिद्राख्यं सरो दृष्टवा जल क्रीड़ा परायणा ।
महापीत हृदस्यान्ते सौराष्ट्रे बगलाम्बिका ॥

सौराष्ट्र नामक क्षेत्र में स्थित हरिद्रा नामक झील के किनारे जल क्रीड़ा करते हुये देवी के हृदय से एक तेज निकाला जो बगलामुखी के स्वरूप से था ।

श्री विद्या सम्भवं तेजो विजृम्भति इतस्तत: ।
चतुर्दशी भौम युता मकारेण समन्विता ॥

श्री विद्या माता श्री महात्रिपुर सुन्दरी से जो तेज निकला, उसने तत्काल उस तूफान का अन्त कर दिया ।

---

१. यह स्थान सौराष्ट्र देश में स्थित हरिद्रा नामक झील के किनारे था ।

मंगलवार को जब चतुर्दशी तिथि हो साथ में मकार हो—

कुल ऋक्ष समायुक्ता वीर रात्रि: प्रकीर्तिता ।
तस्यामेवार्ध रात्रौ तु पीत हृद निवासिनी ॥

कुल नक्षत्रों का भी योग हो तब होने वाली रात्रि को "वीर रात्रि" कहते हैं ।

इसी योग से परिपूर्ण अर्द्धरात्रि को पीताम्बरा श्री बगलामुखी का आविर्भाव हुआ था ।

भारतीय पराविज्ञान में श्रद्धा और विश्वास रखने वाले लोगों ने भारतीय धर्म क्षेत्र से बहुत कुछ प्राप्त किया । इसी श्रद्धा और विश्वास की दृढता से ही भगवान विष्णु ने श्री महात्रिपुर सुन्दरी को प्रसन्न किया था जिसके कारण त्रैलोक्य स्तम्भनी माता श्री बगला मुखी का आविर्भाव हुआ था ।

मनुष्य ही नहीं मनुष्य के रूप से देह धारण करके जब जब अविनाशी प्रभु जगत में लीला करते हैं तो मनुष्य की भाँति ही उन्हें भी हँसना और रोना पड़ता है, उन्हें भी उजड़ना और बसना पड़ता है, उन्हें भी पाना और खोना पड़ता है, उन्हें भी मित्रों की मित्रता एवं शत्रुओं की शत्रुता का सामना करना पड़ता है । सांसारिक समस्त अनुभूतियां व परिस्थितियां उन्हें भी हिला दिया करती हैं । यह अनादिकाल से ही हो रहा है । ऐसे में जगत में जीना अत्यंत कठिन हो उठता है कि समस्या के निवारणार्थ क्या किया जाये ? इन्हीं समस्त समस्याओं को बहुत पहले हमारे आर्य मनीषियों ने देख व समझ लिया था और यही कारण हुआ कि उन्होंने तपस्या कर करके जगत के कल्याणार्थ देवता से वरदान मांगे थे । इसी क्रम का परिणाम है कि जब भगवान दत्तात्रेय के मन में जगत के प्रति करुणा

उपजी तब उन्होंने कठिन तप करके शिवजी को प्रसन्न किया और जब वह बरदान देने आये तब अपने लिये नहीं बल्कि जगत के लिये प्रसाद मांगा था। वह प्रसाद रूपी ज्ञान 'दत्तात्रेय तन्त्र' के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार के अनेकों उदाहरण हैं जिनसे ज्ञात होता है कि हंसना, रोना, उजड़ना, बसना, मित्र, शत्रु, कामनाएँ आदिक लगभग प्रारम्भ से ही मनुष्य के हृदय को आतंकित करती रही हैं। इस आतंक से उभरने के लिये मनीषियों ने कठिन साधना करके षड़ कर्मों को जीवन दिया था कि किसी से काम न बनता हो तो उसे मोहित कर लो, जो व्यथा पीड़ा पहुंचाता हो उसका स्तम्भन कर दो आदि।

श्री पीताम्बरा जिन्हें कि ब्रह्मास्त्र विद्या, षड़कर्माधार विद्या, ब्रह्मास्त्र, स्तम्भिनी विद्या, त्रैलोक्य स्तम्भनी विद्या आदिक नामों से जानते हैं, साधकों के अभीष्ट की शीघ्र ही पूर्ति करती है। शत्रुओं का शमन होता और सौभाग्य का उदय होता है।

आज शत्रु स्तम्भन के लिये सर्वप्रथम जिन्हें माना, जाना जाता है या जिन्हें स्मरण किया जाता है वो भगवती बगलामुखी है।

बगला की मैं कहूं क्या, यह भोग मोक्ष की दाता है।
इसके साधक के शत्रु का, निश्चय अन्त हो जाता है॥
ये पाप ताप मिटाती है, सौभाग्य सदा जगाती है।
भव बाधा हटाती है, जीवन को सरल बनाती है॥
जो बगला बगला कहता है, निश्चय कृपा वो पाता है।
अपना वो कल्याण कर, भव सागर से तर जाता है॥

लोमश ने नारद से कहा, बगला नाम की महिमा को।
जो पूजे और चाहे इसे, वो सर्व सिद्ध हो जाता है॥
यह बात केवल बात नहीं, साधक की ये सच्चाई है।
बगला के साधक को जग में, होती सदा भलाई है॥
यह पंक्ति मैंने कही अवश्य, यशपाल के हृदय की बात है ये।
जो भी इसमें दीक्षित हुआ, उसके सदा ही साथ है ये॥
मात कहो जगदम्ब कहो, जगदम्बा बगला रानी है।
बगला बगला करने से, शत्रु को होती हैरानी है॥

आपका
आद्यानन्द यशपाल 'भारती'

यशपाल जी की अन्य प्रसिद्ध पुस्तकें

१. संकट मोचिनी कालिका सिद्धि
२. सृष्टि का रहस्य : दस महाविद्या
३. यन्त्र विधान
४. हनुमान सिद्धि
५. स्वप्न सिद्धान्त
६. यन्त्र माला
७. संजीवनी विद्या : महामृत्युंजय प्रयोग
८. सिद्ध शाबर मन्त्र
९. तन्त्र प्रयोग
१०. आदित्य हृदय स्तोत्र
११. दत्तात्रेय तन्त्र
१२. उड्डीश तन्त्र
१३. आदि मन्त्र शास्त्र
१४. मन्त्र रामायण

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार-२४९४०१

आद्यानन्द यशपाल भारती विरचित

त्रैलोक्य स्तम्भनी बगलामुखी महासाधना

श्री बगलामुखी पूजन

सर्वप्रथम प्रातः कृत्यादि करेंगे। इसके लिए गुरुदेव का ध्यान करें। यदि गुरु धारण न किया हो तो कर लेना चाहिये परन्तु जब तक गुरु धारण न हो शिव को ही गुरु मान लें।

निद्रा त्याग के पश्चात् सर्वप्रथम यदि गुरु वाले हो तो निम्नलिखित मन्त्र उच्चारण करें—

ओ३म् श्री गुरुवे नमः ॥

यदि गुरु न हो तो निम्नलिखित मन्त्र बोलें—

ओ३म् नमः शिवाय।

तदुपरांत अभी तक के जीवन के समस्त शुभाशुभ कर्म गुरु को समर्पित कर दें और फिर गुरु से (मानसिक रूप से) शुभ कर्म की आज्ञा लें। अब मूलाधार की कर्णिका के अन्दर स्थित त्रिकोण के अन्तर्गत अधोमुख स्वयम्भू लिंग को वेष्टित किये सो रही भुजंगाकार जोकि त्रिवलय वाली है—का ध्यान करे।[1]

१ साधक दोनों गुप्तांगों के मध्य जो जोड़ है ठीक उसके ऊपर, भीतरी तरफ एक त्रिकोण के ऊपर तीन बार लपेटा लेकर एक सर्प सा सो रहा है, इसे कुण्डलिनी कहते हैं। यह ध्यान करना होगा।

यह ध्यान करते करते 'हुं' का उच्चारित जप करें और भीतर ध्यान रखें। प्रारम्भ में तो ऐसा नहीं होता कि यह कुंडलिनी जग जाये परन्तु फिर भी ध्यान करें कि कुंडलिनी जग गई है और शीर्ष (सिर) की तरफ जा रही है।

अब अपने देवता श्री पीतम्बरा बगलामुखी को नमस्कार करें।

इसके बाद निम्नलिखित से सम्बन्धित स्थान पर वहीं पर कहा बीज दस बार जपें।

इसे चौर गणेश मन्त्र कहते हैं। इसके जप के बिना कोई पूजा कर्म नहीं करना चाहिये क्योंकि दोष लगता है। वर्ण विल तन्त्र प्रबल उद्घोष करके कहता है कि चौर मन्त्र को जाने बिना जो पुराण पढ़ता है, वह साक्षात् कलि होता है। अगले जन्म में वह पापी, चौर या कुत्ते की योनि में जायेगा यदि चौर गणेश मन्त्र का जप न किया जाये तो पूजन व पूजन के तेज को स्वयं गणपति हर लेते हैं। यह पूजा चाहे शक्ति, शिव, ब्रह्मा, विष्णु की भी क्यों न हो रही हो। मनुष्य के शरीर में जो कुंडलिनी कमल है वहाँ के प्रत्येक द्वार के पथ में जाकर पचास गण देवताओं के ज्योति स्वरूप जो मुनिगण हैं वो जंभाई लिया करते हैं एवं प्रति कुण्डलिनी चक्र के कमल दलों में स्थित होकर जप का तेज हर लिया करते हैं। यह सर्वदा ज्ञात रहे कि प्रत्येक लघु या विशाल पूजा, जप, तप, गायन, पाठादि में एक अभूतपूर्व तेज हुआ करता है। जहाँ जहाँ यह तेजस्वी क्रियायें होती हैं वहाँ-वहाँ पर यह चौर गणाधिप भी रहा करते हैं। इसी कारण इनके प्रबोध के निमित्त चौर मन्त्रों का जप करना अनिवार्य है। यह चौर मन्त्र महामन्त्र है जिसके प्रयोग से पचासों गणों की प्रसन्नता प्राप्त होती है। यदि चौर मन्त्र का प्रयोग

नहीं हुआ है तो शान्ति स्वस्त्ययन का फल प्राप्त नहीं होता है। अतः फिर से समझ लें कि—

—हृदय पर दस बार 'क्रों' जपना है।
—दायें नेत्र पर 'ह्रीं ह्रीं' दस बार जपना है।
—बायें नेत्र पर 'ह्रीं ह्रीं' दस बार जपना है।
—दायें कान पर 'ह्रीं ह्रीं' दस बार जपना है।
—बायें कान पर 'ह्रीं ह्रीं' दस बार जपना है।
—दांई नाक पर 'हुं हुं' दस बार जपना है।
—बांई नाक पर 'हुं हुं' दस बार जपना है।
—मुख पर 'ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं' दस बार जपना है।
—नाभि पर 'ऐं क्लीं' दस बार जपना है।
—लिङ्ग/योनि पर 'ह्सौः' दस बार जपना है।
—भ्रु मध्य पर 'हुं' दस बार जपना है।

अब आप स्नान आदिक के लिये जा सकते हैं।

प्रातः के समस्त कार्य पूर्ण करके पूजा के लिये पूजा गृह में प्रवेश करके हाथों में गन्ध पुष्प लेकर नैऋत्य कोण वाली दिशा की तरफ यह मन्त्र कहकर हाथ की सामग्री डाल दें—

ओ३म् वास्तु पुरुषायै नमः।

पुनः गन्ध पुष्पादि लेकर उसी दिशा में यह कह कर सामग्री डाल दें—

ओ३म् ईशाय नमः।

पुनः यही क्रिया यहीं पर इस मन्त्र से होगी—

ओ३म् ब्रह्मणे नमः।

अब हाथ में पीली सरसों लेकर निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़ें—

ओ३म् अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थितः ।
ये भूता विघ्न कर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अब दसों दिशाओं की तरफ क्रमशः दिव्य नेत्रों से देखें और फिर निम्नलिखित मन्त्र बोलकर सरसों चारों तरफ बिखेर दें—

ओ३म् सर्व विघ्नान उत्सारय हुं फट् स्वाहा ।

तदुपरांत निम्नलिखित मन्त्र बोलकर बाँये पांव से धरती पर तीन बार आघात करें—

ओ३म् पवित्र वज्र भूमे हूँ हूँ फट् स्वाहा ।

अब हल्दी से एक त्रिकोण बनाकर उसके ऊपर इस मन्त्र से प्रणाम करें—

ओ३म् कामरूपाय नमः ।

इसके ऊपर अपना आसन बिछा दें और निम्नलिखित पंक्तियाँ बोलें—

ओ३म् पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरु चासनम् ॥

निम्नलिखित मन्त्र के द्वारा आसन को प्रणाम करें—

क्लीं आधार शक्त्यै कमलासनाय नमः ॥

तत्पश्चात् पूर्व या उत्तर दिशा की तरफ मुख करके आसन पर बैठ जायें तथा गुरु वन्दना करें ।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाक्या ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

देवतायाः दर्शनं च करुणा वरुणालयं ।
सर्व सिद्धि प्रदातारं श्री गुरुं प्रणमाम्यहम् ॥
वराभय करं नित्यं श्वेत पद्म निवासिनं ।
महाभय निहन्तारं गुरु देवं नमाम्यहम् ॥

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्रों से क्रमशः नमस्कार या प्रणाम निवेदन करें—

ओ३म् श्री गुरुवे नमः ॥
ओ३म् क्षेत्र पालाये नमः ।
ओ३म् वास्तु पुरुषाये नमः ॥
ओ३म् विघ्न राजाये नमः ॥
ओ३म् दुर्गायै नमः ॥
ओ३म् विनायकायै नमः ॥
ओ३म् शम्भु शिवायै नमः ॥
ओ३म् भैरवायै नमः ॥
ओ३म् बटुकायै नमः ॥
ओ३म् ब्रह्मायै नमः ॥
ओ३म् नैॠतियै नमः ॥
ओ३म् चक्र पाणायै नमः ॥
ओ३म् विघ्न नाथायै नमः ॥
ओ३म् ॠषियै नमः ॥
ओ३म् देवतायै नमः ॥
ओ३म् वेद शास्त्रायै नमः ॥
ओ३म् वेदार्थायै नमः ॥
ओ३म् रामायणायै नमः ॥
ओ३म् भागवतायै नमः ॥
ओ३म् पुराणायै नमः ॥

ओ३म् ब्राह्मणायै नमः ॥
ओ३म् योगिनियै नमः ॥
ओ३म् दिक पालायै नमः ॥
ओ३म् सिद्ध पीठायै नमः ॥
ओ३म् तीर्थायै नमः ॥
ओ३म् मन्त्र तन्त्र यन्त्रायै नमः ॥
ओ३म् मातृकायै नमः ॥
ओ३म् पञ्च भूतायै नमः ॥
ओ३म् महा भूतायै नमः ॥

प्रत्येक पूजा यूँ तो अपनी अपनी श्रद्धा के अनुसार की जाती है। जब से सृष्टि का जन्म हुआ है और इस सृष्टि रूपी अभिनय मंच पर प्राणी रूपी अभिनेता ने कार्य रूपी अभिनय करना प्रारम्भ किया है तभी से पूजा पाठ होती चली आ रही है। श्रद्धा भाव में तो साधक की जैसी इच्छा होती है अपने साध्य को उसी प्रकार से आराधता है और लोकोक्ति भी है कि 'भक्त के वश में है भगवान'। इसी प्रकार से मैं मानता हूँ कि यदि 'भक्त के वश में है भगवान' तो 'भक्ति के वश में है भगवद् शक्ति'।

समझना यह है कि जपादि और पूजन क्यों अनिवार्य हैं? तो इसके उत्तर में समझ लें कि—

प्राणी के द्वारा किया गया जपादि उसके शुभ कर्मों की खेती हुआ करती है और इस खेती की चारदीवारी पूजन हुआ करता है जिसके मध्य खेती सुरक्षित रहती है।

यह मेरे अपने मौलिक विचार हैं जो कि अनुभव से सत्य सिद्ध हुए हैं। जप से पूर्व पूजन हुआ करता है। यूँ तो धूप दीप करके लोग पूजन की इति श्री समझ लेते हैं जबकि ऐसा नहीं

होता है। पूजा जब भी की जाती है तब दो विधियों में से एक के अनुसार की जाती है जिसे कि विशेष पूजा एवं सामान्य पूजा कहते हैं। विशेष पूजन तो विशेष प्रकार का होता ही है सामान्य पूजन भी यथाशक्ति संक्षेप या विस्तार से अनेकों प्रकार की विधियों के साथ सम्पन्न किया जाता है। सर्व साधारण बोलचाल की भाषा में सामान्य पूजन को उपचार कहते हैं जो कि विभिन्न प्रकार का हुआ करता है। यहाँ पर मैं देवी को षोडशोपचार प्रस्तुत कर रहा हूँ जबकि पंचोपचार (पाँच उपचार), दशोपचार (दस उपचार), द्वादशोपचार (बारह उपचार), अष्टादशोपचार (अट्ठारह उपचार) आदि आदि होते हैं।

प्रस्तुत षोडशोपचार के निमित्त निम्नलिखित सामग्री का पूर्व ही प्रबन्ध कर लेना चाहिये—

सामग्री

शुद्ध सिन्दूर	कर्पूर
कुंकुम	कपास
बिल्व पत्र	इत्र फुलेल
श्वेत चन्दन	नेवैद्य
शुद्ध शहद	खीर
शुद्ध घृत	मोदक (लड्डू)
शुद्ध दधि	फल मूलादि
केशर	केवड़ा
गोरोचन	मीठा सुगन्धित पान
पीला पुष्प—कनेर,	काजल
चमेली	सर्मा
पीला वस्त्र	अलक्तक

दो वस्त्र	व्यञ्जन
अलङ्कार	घण्टा वाद्य
धूप	एक थाली भोजन
दीप	
रक्त चन्दन	चामर

उद्वर्तन—मेदा, हल्दी व चमेली का तेल।

अर्घ्य—पीत पुष्प, अक्षत, यव, दूब, चार तिल, कुशा का अग्र भाग तथा पीली सरसों।

आचमन—जायफल, लवङ्ग व कंकोल का चूर्ण।

अक्षत—हल्दी से रंगे हुए।

पुष्पमाला—पीली चमेली या पीले कनेर की।

अथ शोडशोपचार पूजन विधि

इस पूजन के लिये एक शुद्ध व स्वच्छ आम की पटिया लेते हैं जो कि आधुनिक मेज की भाँति होती है जिसकी ऊँचाई लगभग एक फुट से अधिक न हो। इसे चारों तरफ से केले के पत्तों के द्वारा घेर कर सजा लेते हैं। मध्य में पीला कपड़ा फैलाकर उसके ऊपर देवी की प्रतिमा, तस्वीर या यन्त्र स्थापित कर लेते हैं। इस कार्य के पश्चात् देवी का ध्यान मन्त्र पढ़ते हैं—

प्रत्यालीढ परां घोरां मुण्डमाला विभूषितां।
खर्वां लम्बोदरीं भीमां पीताम्बर परिच्छदां॥
नवयौवन सम्पन्नां पञ्च मुद्रा विभूषितां।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां महाभीमां वरप्रदाम्॥

खड़्ग कर्तो समायुक्तां सव्येतर भुज द्वयां।
कपालोत्पल संयुक्तां सव्यपाणि युगान्विताम्॥
पिंगोग्रेक सुखासीनां मौलावक्षोभ्य भूषितां।
प्रज्जवलत् पितृ भू मध्यगतां दंष्ट्रा करालिनी॥
तां खेचरां स्मेर वदनां भस्मालंकार भूषितां।
विश्व व्यापक तोयान्ते पीत पद्मो परिस्थितां॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा।
ॐ ब्रह्मास्त्र विद्यायै स्वाहा॥
ॐ ब्रह्मास्त्र स्तम्भिनी विद्यायै स्वाहा॥
ॐ प्रवृत्ति रोधिनी विद्यायै स्वाहा॥
ॐ षट् कर्माधार विद्यायै स्वाहा॥

और फिर नमस्कार करेंगे—

ॐ बगलायै नमः॥
ॐ पीताम्बरायै नमः॥
ॐ गदायै नमः॥
ॐ चतुर्भुजायै नमः॥
ॐ त्रिनेत्रायै नमः॥
ॐ कमलासनायै नमः॥
ॐ त्रिशूलायै नमः।

ओ३म् देवेशि भक्ति सुलभे परिवार समन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देवि स्थिरा भव॥

अथ स्वागतम्

छः पीले पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें और तस्वीर पर चढ़ा दें—

स्वागतं ते महामाये चण्डिके सर्व मंगले।
पूजां गृहाण् विविधां सर्व कल्याण कारिणी॥

अथ स्थिरी कृत्यम्

एक पीला पुष्प निम्नलिखित मन्त्र से प्रतिमा पर चढ़ायें—

ओ३म् देवेशि भक्ति सुलभे परिवार समन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव्॥

अथ आसनम्

एक पीला फूल लेकर निम्नलिखित मन्त्र से देवी के चरणों पर चढ़ा दें—

ओ३म् आसनं भास्वरं तुंगं मांगल्यं सर्व मङ्गले।
भजस्व जगतां मातः प्रसीद जगदीश्वरी॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ पाद्यम

पाद्य पात्र में चार पल द्रव्य रखें जिसमें पीली चमेली का पुष्प, थोड़ा सा केशर, गोरोचन पड़ा हुआ हो। इसे निम्नलिखित मन्त्र से देवी को प्रदान करें।

ओ३म् गङ्गादि सलिलाधारं तीर्थं मन्त्राभिमन्त्रिम्।
दूर यात्रां श्रम हरं पाद्यं तत्प्रति गृह्यताम्॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ उद्वर्तनम्

मेदा, हल्दी चूर्ण मिलाकर सुगन्धित तेल विशेषकर चमेली के तेल को उसमें मिलाकर उद्वर्तन बनाकर निम्नलिखित मन्त्र से देवी को समर्पित करें।

ओ३म् तिल तैल समायुक्तं सुगन्धित द्रव्य निर्मितम्।
उद्वर्तनमिदं देवि गृहाण त्वं प्रसीद मे।
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ अर्घ्यम्

अर्घ्य पात्र में चार पल जल होता है जिसमें सुगन्धित सामग्री के अतिरिक्त पीत पुष्प, अक्षत्, यव, दूब, चार तिल, कुशा का अग्र भाग पीली सरसों भी पड़ी होनी चाहिये।

उपरोक्त प्रकार से अर्घ्य निर्मित करके निम्नलिखित मन्त्र से देवी को प्रदान करें।

ओ३म् तिल तिण्डुल संयुक्तं कुश पुष्प समन्वितम्।
सुगन्ध फल संयुक्तमर्घ्यं देवी गृहाण मे॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ आचमनीयम्

आचमन के लिये पंच पात्र का उपयोग करते हैं। इस पात्र में छः पल जल होना चाहिये। इस जल में जायफल का चूर्ण, लवङ्ग का चूर्ण तथा कंकोल का चूर्ण मिला होना चाहिये।

आचमन की क्रिया करने के लिए उपरोक्त प्रकार से जल बनाकर निम्नलिखित मन्त्र से देवी को प्रदान करें।

**ओ३म् स्नानादिकं विधायापि यतः शुद्धिर वाप्यते ।
इदमाचनीयं हि पीताम्बरायै देवि प्रगृह्यताम् ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।**

अथ स्नानीयम्

जगन्माता को स्नान के निमित्त प्रदान किये जाने वाले जल की मात्रा में पचास पल जल होना चाहिये। इसमें केशर व गोरोचन डालकर सुगन्धित कर लेना उचित रहता है।

इस प्रकार से जल बनाकर निम्नलिखित मन्त्र से पढ़कर देवी को प्रदान करें।

**ओ३म् स्वमापः पृथ्वी चैव ज्योतिषं वायुरेव च ।
लोक संस्मृति मात्रेण वारिणा स्नापयाम्यहम् ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।**

अथ अष्टांगाघ्यर्म

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को अष्टांगार्घ्य प्रस्तुत करें।

**ओ३म् जगत्पूज्ये त्रिलोकेशि सर्व दानव भंजनी ।
अष्टांगार्घ्यं गृहाण देवी बिश्वार्ति हारिणी ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।**

अथ मधुपर्कम्

एक कांसे के पात्र में मधुपर्क निर्मित करते हैं। इसके लिए शुद्ध घृत, शुद्ध मधु एवं शुद्ध दधि लेते हैं। इस सामग्री को एकत्र करके कांसे के पात्र में रख देते हैं। निम्नलिखित मंत्र से यह मधुपर्क देवी को प्रदान करते हैं।

**ओ३म् मधुपर्क महादेवि ब्रह्माद्यैः कल्पितं तव् ।
मया निवेदितं भक्तत्या गृहाण गिरि पुत्रिके ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।**

अथ पुनराचमनीयम्

निम्नलिखित मंत्र से देवी को पुनः आचमन प्रदान करें।

**ओ३म् स्नानादिकं पुरः कृत्वा पुनः शुद्धिरवाप्यते ।
पुनराचमनीयं च बगले देवि प्रगह्यताम् ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।**

अथ श्वेत् चन्दनम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को श्वेत चन्दन घिसकर प्रदान करें।

**ओ३म् मलयांचल सम्भूतं नाना गन्ध समन्वितम् ।
शीतलं बहुलामोदं चन्दनम् गृह्यतामिदम् ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।**

अथ रक्त चन्दनम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को रक्त चन्दन प्रदान करें।

**ओ३म् रक्तानुलेपनम् देवि स्वयम् देव्या प्रकाशितम् ।
तद गृहाण महाभागे शुभं देहि नमोऽस्तुते ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।**

अथ सिन्दूरम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को सिन्दूर प्रदान करें।

**ओ३म् सिन्दूरं सर्व साध्वीनां भूषणाय विनिर्मितम् ।
गृहाण वर दे देवि भूषणानि प्रयच्छ मे ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।**

अथ कुंकुमम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को कुंकुम प्रदान करें।

ओ३म् जपापुष्प प्रभं रम्यं नारी भाल विभूषितम्।
भास्वरं कुंकुमं रक्तं देवि दत्तं प्रगृह्य मे॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ अक्षतम्

सौ से अधिक शुद्ध व स्वच्छ अक्षत् लेकर निम्नलिखित मन्त्र से देवी को प्रदान करें।

ओ३म् अक्षतं धान्यजं देवि ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
प्राणदं सर्वभूतानां गृहाण वर दे शुभे॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ पुष्पम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को पुष्प प्रदान करें।

ओ३म् चलत्परिमलामोद मत्तालि गण संकुलम्।
आनन्दनन्दबोद्भूतं बगलायै कुसुमं नमः॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ बिल्व पत्रम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को बेल पत्र प्रदान करें।

ओ३म् अमृतोद् भवे श्री वक्षं शंकरस्य सदाप्रियम्।
पवित्रं ते प्रयच्छामि सर्व कार्यार्थ सिद्धये॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ पुष्प मालाम्

पीले करवीर या पीली चमेली के पुष्पों की माला बनाकर निम्नलिखित मन्त्र को पढ़कर देवी को चढ़ा दें या प्रदान कर दें।

ओ३म् नाना पुष्प विचित्राढयां पुष्प मालां सुशोभनाम्।
प्रयच्छामि सदा भद्रे गृहाण परमेश्वरी॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ वस्त्रम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को वस्त्र प्रदान करें। जो कि कम से कम बारह अंगुल तो होना ही चाहिये।

ओ३म् तन्तु तन्तानयुक्तं कला कौशल कल्पितं।
सर्वांगाभरण श्रेष्ठं वसनं परिधीयताम्॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ द्वितीय वस्त्रम्

सामग्री में दो प्रकार के वस्त्र कहे थे जिसमें से एक वस्त्र ऊपर का व एक वस्त्र भीतर का होता है। ऊपर का वस्त्र तो आपने पूर्व ही प्रदान कर दिया है अब आप भीतर का वस्त्र निम्नलिखित मन्त्र से देवी को प्रदान करेंगे।

ओ३म् यामाश्रित्य महादेवि जगत्संहारकः सदा।
वस्यै ते परमेशान्ये कल्पयाम्युत्तरीयकम्॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ अलंकरणम्

देवी को यथाशक्ति स्वर्ण के आभूषण बनाकर ही प्रदान

करने चाहिये। यदि किसी कारण से यह सम्भव न हो तो जिस धातु या पुष्प के आभूषण बनाये गये हों उसी का मन्त्र पढ़ेंगे। यहाँ पर मैं स्वर्ण के आभूषण चढ़ाने का मन्त्र प्रस्तुत कर रहा हूँ।

ओ३म् सौवर्णाद्यलंकार कंकणादि विभूषितम्।
हारकेयूर युक्तानि नू पुराणि गृहाण मे॥
ह्लीं बगलायै स्वाहा॥

अथ धूपम्

घृत व गुग्गुल द्वारा निर्मित धूप को कांसे के पात्र में रखकर निम्नलिखित मन्त्र से देवी को चढ़ावें।

ओ३म् गुग्गुलं घृतं संयुक्तं नानाभक्ष्यैश्च संयुतम्।
दशांग गृह्यतां धूपं बगुला देवि नमोऽस्तुते॥
ह्लीं बगलायै स्वाहा॥

अथ दीपम्

शुद्ध घृत का दीपक जलाकर निम्नलिखित मन्त्र से देवी को प्रदान करें।

ओ३म् मार्तण्ड मण्डलान्तस्थ चन्द्रबिम्बाग्नि तेजसाम्।
विधानं देवि बगले दीपोऽयं निर्मितस्तव भक्तितः॥
ह्लीं बगलायै स्वाहा॥

अथ सुगन्धित द्रव्यम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को इत्र फुलेलादि प्रदान करें।

ओ३म् परमानन्द सौरभ्यं परिपूर्णं दिगम्बरम्।
गृहाण सौरभं दिव्यं कृपया मातु जगदम्बिके॥
ह्लीं बगलायै स्वाहा॥

अथ कर्पूर दीपम्

कर्पूर की दीपक जलाकर इस मन्त्र से माता को प्रदान करें।

ओ३म् त्वं चन्द्र सूर्य ज्योतींषि विद्युदग्न्योस्तथैव च।
त्वमेव जगतां ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥
ह्लीं बगलायै स्वाहा॥

अथ नेवैद्यम्

एक थाली में एक व्यक्ति के लिये पर्याप्त खाद्य सामग्री रख करके निम्नलिखित मन्त्र से देवी को प्रदान करें।

ओ३म् दिव्यान्न रस संयुक्तं नाना भक्ष्यैस्तु संयुतम्।
चौष्यपेय समायुक्तमन्नं देवि बगलायै गृहाण मे॥
ह्लीं बगलायै स्वाहा॥

अथ पायसम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को खीर प्रदान करें।

ओ३म् गव्यसर्पिः पयोयुक्तं नाना मधुर मिश्रितम्।
निवेदितं मया भक्त्या परमान्नं प्रगृह्यताम्॥
ह्लीं बगलायै स्वाहा॥

अथ मोदकम्

निम्नलिखित मन्त्र से लड्डू माता को प्रदान करें।

ओ३म् मोदकं स्वादु रुचिरं कर्पूरादि भिरन्वितम्।
मिश्रं नाना विधैर्द्रव्यैः प्रति गृह्याशु भुज्यताम्॥
ह्लीं बगलायै स्वाहा॥

अथ अपूपानिम्

निम्नलिखित मन्त्र से अपूपानि प्रदान करें।

ओ३म् अपूपानि च पक्वानि मण्डका वटकानि च।
पायासापूपमन्नं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा।

अथ फल मूलादिम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को स्वच्छ फल चढ़ावें।

ओ३म् फल मूलानि सर्वाणि ग्राम्यांऽरण्यानि यानि च।
नानाविध सुगन्धीनि गृहण देवि ममाचिरम्।
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ पानीयम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को सुगन्धित जल प्रदान करें जिसमें केवड़ा आदिक सुगन्ध पड़ी हो।

ओ३म् पानीयं शीतलं स्वच्छं कर्पूरादि सुवासितम्।
भोजने तृप्तिकृद्यस्मात् कृपया प्रति गृह्यताम्।
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ करोद्वर्तन जलम्

एक कटोरी में जल भर करके उसमें केवड़ा कर्पूर मिलाकर सुवासित करें। इस जल को निम्नलिखित मन्त्र से देवी को प्रदान करें।

ओ३म् कर्पूरादिनि द्रव्याणि सुगन्धीनि महेश्वरि।
गृहाण जगतां नाथ करोद्वर्तन हेतवे॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ आचमनीयम्

निम्नलिखित मन्त्र से आचमन करवायें।

ओ३म् आमोद वस्तु सुरभिकृत मेतदनुत्तमम्।
गृहाणाचमनीयं त्वं मया भक्त्या निवेदित्तम्॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ ताम्बूलम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को सुगन्धित मीठा पान प्रदान करें।

ओ३म् पूगीफलम महाद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
कर्पूरैलास समायुक्तम् ताम्बूलं प्रति गृह्यताम्॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ कज्जलम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को काजल चढ़ावें।

ओ३म् स्निग्धमुष्णं हृद्यतमं दृशां शोभाकरं तव।
गृहीत्वा कज्जलं सद्यो नेत्राण्यंजय बगुले॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ सौवीराञ्जनम्

निम्नलिखित मन्त्र से सुर्मा प्रदान करें।

ओ३म् नेत्र त्रय महामाये भूषयामल कज्जलैः।
सुसौवीराञ्जनैर्दिव्यैर्जगदम्ब नमोऽस्तुते॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा॥

अथ अलक्तम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को महावर प्रदान करें।

ओ३म् त्वत्पदाम्भोजनखरद्युतिकारि मनोहरम् ।
अलक्तकमिदं देवि मया दत्तं प्रगृह्यताम् ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।

अथ चामरम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को चामर प्रदान करें।

ओ३म् चामरं चमरीपुच्छं हेमदण्ड समन्वितम् ।
मयार्पितं राजचिह्नं चामर प्रति गह्यताम् ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।

अथ व्यंजनम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को स्वादिष्ट व्यंजन चढ़ावें।

ओ३म् वर्हि बर्ह कृताकारं मध्य दण्ड समन्वितम् ।
गृह्यतां व्यंजनं बगुले वेहस्वेदापनुत्तये ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।

अथ घण्टा वाद्यम्

निम्नलिखित मन्त्र से घण्टा बजायें तदुपरान्त देवी को चढ़ावें।

ओ३म यथा भीषयसे दैत्यान् यथा पूरयसेऽसुरम् ।
तां घण्टां सम्प्रच्छामि महिषघ्नि प्रसीद मे ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।

अथ दक्षिणाम्

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को दक्षिणा प्रदान करें।

ओं कांचनं रजतोपेतं नाना रत्न समन्वितम् ।
दक्षिणार्थं च देवेशि गहाण त्वं नमोऽस्तुते ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।

अथ पुष्पांजलिम्

विभिन्न प्रकार के पुष्प दोनों हाथों से उठाकर पूर्ण श्रद्धालु भाव से निम्नलिखित कवित्त को कहकर देवी को चढ़ा दें।

जो तन है यह भी तेरा है।
जो मन है यह भी तेरा है।।
इस जग का काज चलाने को।
जो धन है यह भी तेरा है।।
तेरा है, यशपाल भी तेरा है।
बिन तेरे माँ! क्या मेरा है??

अथ नीराजनम्

अपनी श्रद्धानुसार एक दीपक, पंच दीपक, सप्त दीपक या एकादश दीपक शुद्ध घी के प्रज्वलित करके निम्नलिखित मन्त्र से बांयें हाथ से घण्टा बजाते हुए दाहिने हाथ से देवी की आरती उतारें।

ओं कर्पूरवर्ति संयुक्तं वह्निना दीपितंच यत् ।
नीराजनं च देवेशि गृह्यतां जगदम्बिके ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।

अथ अच्छिद्रावधारणम् ।

निम्नलिखित मन्त्र से देवी को अच्छिद्राव धारण करवायें।

ओं बगलामुखे महामाये येषा पूजा मया कृता ।
अच्छिद्रास्तु शिवे सांगन तव देवि प्रसादतः ।।
ह्रीं बगलायै स्वाहा ।।

अथ क्षमापनम्

यह क्षमायाचना है। पाठ पूजा करते समय किसी भी प्रकार की त्रुटि सम्भव है। इन्हीं त्रुटियों को क्षमा करवाने के लिए

निम्नलिखित मन्त्रात्मक स्तोत्र को दोनों हाथ जोड़कर श्रद्धा भाव से पढ़ें।

ह्लीं बगुलायै स्वाहा ।।

अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ।।
अपराध शतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मदयः सुरः ।।
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्त स्त्वां जगदम्बिके ।
इदानी मनुकम्पयोऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ।।
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ।।
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्द विग्रहे ।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ।।
गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्[1] ।
सिद्धिर्भवतु[2] मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ।।

---

१. यदि केवल पूजा ही की जायेगी तो 'जपम्' की जगह पर 'पूजनम्' कहेंगे।

२. 'सिद्धिर्भवतु' की जगह 'कृपा करहु' भी कह सकते हैं।

इस प्रकार से षोडशोपचार पूजन सम्पन्न होता है। इसके पश्चात देवी के अंगों की व परिवार आदि की पूजा की जाती है।

यदि आप अंग व परिवारादि की पूजा नहीं करेंगे तो समस्त प्रयास अपूर्ण ही रहेगा। अतः आगे वर्णित विधि के अनुसार पूजन करें।

अथांग परिवारादि पूजनम्

इस पूजन को करने के लिये सर्वप्रथम अपने समक्ष रेत या आटे का चौकोर टीला सा बना लें तदुरान्त टीले के ऊपर हल्दी चूर्ण से निम्नलिखित यन्त्र निर्मित कर लें।

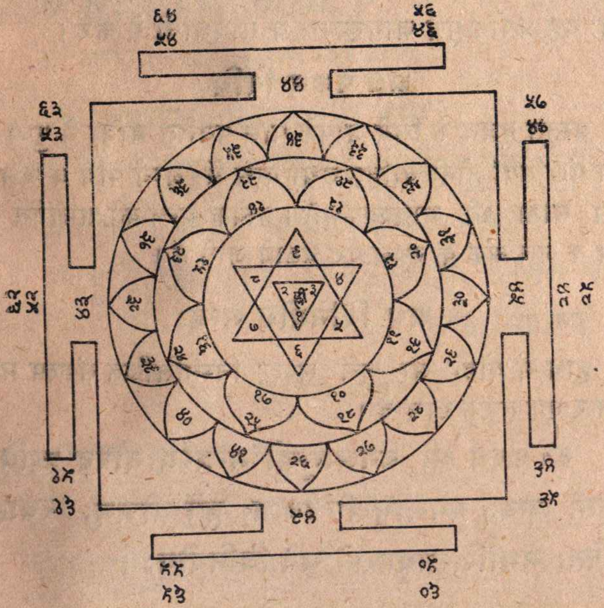

श्री बगलामुखी पूजन यन्त्रम्

चेतावनी

प्रस्तुत श्री बगलामुखी यन्त्र का ही साधक निर्माण करेगा। यह स्मरणीय तथ्य है। यन्त्र के चित्र पर दर्शायी गई संख्यायें आप नहीं लिखेंगे क्योंकि कही गई संख्यायें यन्त्र का हिस्सा नहीं हैं। यहाँ पर अंक इसलिये कहे गये हैं कि आगे कहे गये मन्त्र, मन्त्र के समक्ष अंकित अंकों के अनुसार, यन्त्र में कहे गये अंक स्थल पर जप कर पूजा की जायेगी। मूलतः यह समझ लें कि यन्त्र देवता का निवास स्थल होते हैं और मन्त्र देवता की आत्मा हुआ करते हैं जोकि अपनी शक्तियों के साथ अपने पूजन यन्त्र पर सर्वदा स्थित रहकर जगत का कल्याण किया करते हैं अतः यह प्रयोग पूर्ण जागरुकता व सावधानी से करें।

अथ पूजन विधि

प्रस्तुत पूजन के लिये आपके पास पर्याप्त मात्रा में पुष्प या पुष्प पंखुड़ियाँ होनी चाहिए तथा पास में अर्घ्य पात्र व जल से भरा लोटा भी आवश्यक है। प्रत्येक मन्त्र की समाप्ति पर पुष्प व जल अंक के स्थल पर चढ़ाये जाते हैं।

अथ विनियोग मन्त्रः

हाथ में थोड़ा सा जल लेकर निम्नलिखित संकल्प मन्त्र पढ़कर एक तरफ डाल दें।

ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषिः, बृहती छन्दः, बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः ममाखिलावाप्तये जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादि न्यासः

ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि स्वाहा।
ॐ बृहतीच्छंदसे नमः मुखे नमः
ॐ बगलादेवतायै नमः हृदि नमः।
ॐ ह्लीं बीजायै नमः गुह्ये
ॐ स्वाहा शक्तये नमः सर्वांगे फट्॥

अथ करन्यासः

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ वाचं मुखं पदं स्तंभय अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ बुद्धिं विनाशाय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल कर-पृष्ठाभ्यां नमः॥

अथ हृदयादिन्यासः

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः।
ॐ बगलामुखी शिर से स्वाहा।
ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्।
ॐ वाचं मुखं पदं स्तंभय कवचाय हुम्।

ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय बौषट् ।

ॐ बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

अथ श्री यन्त्र पूजा

ॐ जयायै नमः ।

ॐ विजयायै नमः ।

ॐ अजितायै नमः ।

ॐ अपराजितायै नमः ।

ॐ नित्यायै नमः ।

ॐ विलासिन्यै नमः ।

ॐ दोग्ध्र्य नमः ।

ॐ अघोरायै नमः ।

ॐ मंगलायै नमः । (यन्त्र के मध्य में)

उपरोक्त पीठ शक्ति पूजन है । यह पूजन करके यन्त्र को दुग्ध धारा, जल धारा आदि प्रदान करके निम्नलिखित यन्त्र बोलें—

ॐ ह्लीं बगलामुखी योग पीठाय नमः ।

अब पुष्प चढ़ावें ।

निम्नलिखित मन्त्र बोलकर यन्त्रराज एक अंजुलि पुष्पों से भरकर प्रदान करें ।

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरस प्रिये ।
अनुज्ञां देहि बगले परिवारार्चनाय मे ॥

अब यन्त्र की परिवार पूजा प्रारम्भ होती है । प्रत्येक मन्त्र को पढ़कर क्रमशः चेतावनी में कहे गये नियमानुसार क्रिया करें ।

ॐ सत्त्वाय नमः ।

ॐ सत्त्व श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।१।

ॐ रजसे नमः ।

ॐ रजः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।२।

ॐ तमसे नमः ।

ॐ तमः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।३।

निम्नलिखित मन्त्र से पुष्पांजलि यन्त्र पर चढ़ावें—

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्थनम् ॥

अब यन्त्र पूजा क्रम प्रारम्भ करें—

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः ।

ॐ हृदय पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।४।

ॐ बगलामुखी शिर से स्वाहा ।

ॐ शिरःश्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।५।

ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् ।

ॐ शिखा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।६।

ॐ वाचं पदं मुखं स्तंभय कवचाय हुम् ।

ॐ कवच श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।७।

ॐ जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट् ।

ॐ नेत्र त्रय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।८।

ॐ बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ॐ अस्त्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।९।

एक अंजलि पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र से यन्त्रराज को प्रदान करें।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावणार्चनम् ॥

अब यन्त्र पूजा का क्रम प्रारम्भ करें।

ॐ ब्राह्म्यै नमः ।

ॐ ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।१०।

ॐ माहेश्वर्य्यै नमः ।

ॐ माहेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।११।

ॐ कौमार्य्यै नमः ।

ॐ कौमारी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।१२।

ॐ वैष्णवै नमः ।

ॐ वैष्णवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।१३।

ॐ वाराह्यै नमः ।

ॐ वाराही श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।१४।

ॐ इन्द्राण्यै नमः ।

ॐ इन्द्राणी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।१५।

ॐ चामुण्डायै नमः ।

ॐ चामुण्डा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।१६।

ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।

ॐ महालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।१७।

अब पुनः पुष्पांजलि लेकर निम्नलिखित मन्त्र से यन्त्रराज को प्रदान करें।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत् वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

इसके बाद यन्त्र पूजा का क्रम जारी रखें।

ॐ असितांग भैरवाय नमः ।

ॐ असितांण भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।१८।

ॐ रुरु भैरवाय नमः ।

ॐ रुरु भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।१९।

ॐ चण्डभैरवाय नमः ।

ॐ चण्ड भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।२०।

ॐ क्रोध भैरवाय नमः ।

ॐ क्रोध भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।२१।

ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः ।

ॐ उन्मत्त भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।२२।

ॐ कपाल भैरवाय नमः ।

ॐ कपाल भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।२३।

ॐ भीषण भैरवाय नमः ।

ॐ भीषण भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।२४।

ॐ संहार भैरवाय नमः ।

ॐ संहार भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।२५।

अब पुष्पांजलि लेकर निम्नलिखित मन्त्र को पढ़कर यन्त्र-राज पर अर्पित कर दें।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत् वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

तपदुरान्त यन्त्रपूजा क्रमबद्ध रहेगी ।

ॐ मंगलायै नमः ।

ॐ मंगला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।२६।

ॐ स्तंभिन्यै नमः ।

ॐ स्तंभिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।२७।

ॐ जृंभिण्यै नमः ।

ॐ जृंभिणी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।२८।

ॐ मोहिन्यै नमः ।

ॐ मोहिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।२९।

ॐ वश्यायै नमः ।

ॐ वश्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।३०।

ॐ बलायै नमः ।

ॐ बला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।३१।

ॐ अचलायै नमः ।

ॐ अचला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।३२।

ॐ भूधरायै नमः ।

ॐ भूधरा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।३३।

ॐ कल्मषायै नमः ।

ॐ कल्मषा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।३४।

ॐ धात्र्यै नमः ।

ॐ धात्री श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।३५।

ॐ कलनायै नमः ।

ॐ कलना श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।३६।

ॐ कालार्कार्षिण्यै नमः ।

ॐ कालार्कार्षिणी श्री पादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ।३७।

ॐ भ्रामिकायै नमः ।

ॐ भ्रामिका श्री पादुकाँ पूजयामि तर्पयामि नमः ।३८।

ॐ मंदगमनायै नमः ।

ॐ मंदगमना श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।३९।

ॐ भोगस्थायै नमः ।

ॐ भोगस्था श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।४०।

ॐ भाविकायै नमः ।

ॐ भाविका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।४१।

अब पुष्पांजलि लेकर निम्नलिखित मन्त्र से यन्त्रराज को प्रदान करें ।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

तदुपरान्त पूजन का क्रम आगे चलता रहेगा ।

ॐ गणपतये नमः ।

ॐ गणपति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।४२।

ॐ बटुकायै नमः ।

ॐ बटुक श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।४३।

ॐ योगिनीभ्यो नमः ।

ॐ योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।४४।

ॐ क्षेत्रपालाय नमः ।

ॐ क्षेत्रपाल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।४५।

अब पुनः पुष्पांजलि लेकर निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ें। तदुपरान्त यन्त्रराज को यह पुष्पांजलि प्रदान कर दें ।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत् वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ॥

पूजा का क्रम आगे बढ़ायें ।

ॐ लं इन्द्राय नमः ।

ॐ इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।४६।

ॐ रं अग्नये नमः ।

ॐ अग्नि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।४७।

ॐ मं यमाय नमः ।

ॐ यम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।४८।

ॐ क्षं निऋत्यै नमः ।

ॐ निऋति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।४९।

ॐ वं वरुणाय नमः ।

ॐ वरुण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।५०।

ॐ यं वायवे नमः ।

ॐ वायु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।५१।

ॐ कुं कुबेराय नमः ।

ॐ कुबेर श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।५२।

ॐ हं ईशानाय नमः ।

ॐ ईशान श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।५३।

ॐ आं ब्रह्मणे नमः ।

ॐ ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।५४।

ॐ ह्रीं अनन्तायै नमः ।

ॐ अनन्त श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।५५।

ॐ वं वज्रायै नमः ।

ॐ वज्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।५६।

ॐ शं शक्त्यै नमः ।

ॐ शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।५७।

ॐ दं दंडाय नमः ।

ॐ दंड श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।५८।

ॐ खं खंगायै नमः ।

ॐ खंग श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।५९।

ॐ पं पाशाय नमः ।

ॐ पाश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।६०।

ॐ अं अंकुशायै नमः ।

ॐ अंकुश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।६१।

ॐ गं गदायै नमः ।

ॐ गदा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।६२।

ॐ त्रि त्रिशूलाय नमः ।

ॐ त्रिशूल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।६३।

ॐ पं पद्मायै नमः ।

ॐ पद्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।६४।

ॐ चं चक्राय नमः ।

ॐ चक्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।६५।

अब फिर एक पुष्पांजलि निम्नलिखित मन्त्र से श्री यन्त्रराज को चढ़ावें ।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत् वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ।।

इस पूजन के पश्चात् बगलामुखी मन्त्र का जप किया जाता है । आपने यदि साधना करनी है तो मन्त्र का पुरुश्चरण करना होगा परन्तु केवल पूजा पाठ के निमित्त किया जाने वाला कार्य यथाशक्ति जप मांगता है अतः निम्नलिखित मन्त्र को एक सौ आठ बार या एक हजार आठ बार जपें तो कल्याण की आशा कर सकते हैं ।

अथ बगलामुखी मन्त्रम्

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ॥

आपके सूचनार्थ निवेदन है कि इस मन्त्र का एक लाख बार जप करने से इसका पुरुश्चरण पूर्ण हो जाया करता है। जप की समाप्ति पर जप का दशांश हवन करना चाहिए जिसमें कि चम्पा के फूलों की आहुति दी जाती है। इसी प्रकार से दशांश तर्पण, दशांश मार्जन, दशांश ब्राह्मण भोजन भी कराना होगा तभी मन्त्र को सिद्ध जानना चाहिए।

उपरोक्त मन्त्र या कोई भी मन्त्र सिद्ध करने से पूर्व निम्नलिखित स्तोत्र का पाठ कर लेने से प्रयोग की सफलता प्रायः निर्विघ्न हो जाया करती है।

ॐ मातर्देवि नमस्तेऽस्तु ब्रह्म रूप धरे अनघे।
कृपया हर विघ्नं मे मन्त्र सिद्धिं प्रयच्छ मे ॥
महेश्विवर दे देवि परमानन्द रूपिणी।
कृपया हर विघ्नं मे मन्त्र सिद्धिं प्रयच्छ मे ॥
कौमारि सर्व विद्येशि कुमार क्रीडने चरे।
कृपया हर विघ्नं मे मन्त्र सिद्धिं प्रयच्छ मे ॥
विष्णु रूप धरे देवि विनतासुत वाहिनी।
कृपया हर विघ्नं मे मन्त्र सिद्धिं प्रयच्छ मे ॥

वाराही वर दे देवि दंष्ट्रोद्धृत वसंधुरे।
कृपया हर विघ्नं मे मन्त्र सिद्धिं प्रयच्छ मे ॥
शक्र रूप धरे देवि शक्रादि सुर पूजिते।
कृपया हर विघ्नं मे मन्त्र सिद्धिं प्रयच्छ मे ॥
चामुण्ड़े मुण्डमालास्त्रर्चाचिते विघ्न नाशिनी।
कृपया हर विघ्नं मे मन्त्र सिद्धिं प्रयच्छ मे ॥
महालक्ष्मी महोत्साहे क्षोभ संताप हारिणी।
कृपया हर विघ्नं मे मन्त्र सिद्धिं प्रयच्छ मे ॥
मितिमातृमये देवि मितिमातृ बहिष्कृते।
एके बहुविधे देवि विश्व रूपे नमोऽस्तुते ॥

(इति श्री बगलामुखी पूजनं, षोडशोपचार पूजनं एवं अंग परिवारादि पूजनं मायापुर निवासी आद्यानन्द यशपाल 'भारती' कृत पूर्ण मार्गदर्शनं सहित सम्पूर्णम् ॥)

—:०:—

विशेष साधनोपयोगी ज्ञान

प्रिय साधकगण ! आपके ज्ञान वर्द्धनार्थ यहाँ पर विशेष साधनोपयोगी जानकारी प्रस्तुत कर रहा हूँ जोकि आपके लिए जानना हितकारी रहेगा। आद्या भगवती जगदम्बा की कृपा व आध्यात्मिक गुरु माँ भारती जी की शिक्षा दीक्षा के परिणाम से जो भी मुझे ज्ञात हुआ है वह सब क्रमशः पुस्तकों में प्रस्तुत कर रहा हूँ। प्रस्तुत पुस्तक बगलामुखी से सम्बन्धित है जोकि एक प्रबल व जाग्रत सिद्ध महा विद्या है। चूँकि आप सिद्ध महाविद्या का अनुष्ठान करने जा रहे हैं अतः आपके लिये कुछ बातें जानना अति अनिवार्य है जो यहाँ प्रस्तुत हैं।

जपादि कहाँ करें ?

इस विषय पर मैं प्राचीन ग्रंथों का विवरण व उनकी आज्ञायें प्रस्तुत कर रहा हूँ।

नित्या तन्त्र का आदेश है कि भूमि के मध्य स्थल पर, शक्ति पीठ पर, महापीठ पर, शिव मन्दिर (जहाँ पर प्राण प्रतिष्ठा की गई हो) या आंवले के वृक्ष के नीचे बैठकर जपादि करना चाहिये।

शारदा तन्त्र का कहना है कि पर्वत की चोटी, नदी का तट या संगम, तीर्थ, गुफा बेल वृक्ष, देव मन्दिर (जहाँ प्राण प्रतिष्ठा हुई हो) समुद्र का तट या अपना घर हो तो जपादि कर सकते हैं।

सामान्य नदियों पर साधना निषेध की गई है।

मुण्डमाला तन्त्र दो प्रकार के प्राप्त होते हैं। इसकी आज्ञा है कि श्मशान, एक लिङ्ग महादेव, चौराहा, भीषण वन, जल के मध्य गले तक गहरे जल में, युद्ध व योनि स्थल, देवालय में जपादि करने से साधना प्रशस्त होती है।

अन्नदा कल्प के अनुसार गुरु के पास, गाय के पास, पर्वत, शिवलिङ्ग (प्राण प्रतिष्ठित), माता की प्रतिमा के पास, नव यौवना सौन्दर्यवती के पास, बिल्व वृक्ष के नीचे, अपने घर में साधना वा दीक्षा प्रशस्त होती है।

समयातार तन्त्र का कथन भी विशेष प्रयोजनीय है। यह कहता है कि खाट पर, चौराहे पर, केले, बेल, बरगद के वन या वृक्ष के नीचे, शिवालय, गुफा, पर्वत की चोटी, सिद्ध पीठ, शक्ति पीठ पर जप करने से सफलता मिलती है।

परम पूजनीय राघव भट्ट का कथन ग्रहण करने योग्य है क्योंकि यह इसी प्रकार से प्रमाणित भी हुआ है। यह कहते हैं कि—

□निज निवास पर किया गया जप सामान्य लाभ देता है।

□गोशाला में किया गया जप सौ गुणा लाभ देता है।

□वन में किया गया जप हजार गुणा लाभ देता है।

□पर्वत पर किया गया जप दस हजार गुणा लाभ करता है।

□नदी तट या संगम पर किया गया जप लक्ष गुणा लाभ देता है।

□देवालय में जहाँ पर कि देवता की प्राण प्रतिष्ठा विधिवत् हुई हो, जप करने से करोड़ गुणा लाभ मिलता है।

□प्राण प्रतिष्ठित शिवलिंग, एक लिंग के पास जप करने से अनन्त गुणा लाभ प्राप्त होता है।

मैंने यह भी देखा है कि जगदम्बा के पास या शक्ति पीठ पर बैठ कर जप करने से शीघ्रातिशीघ्र अनन्त गुणा लाभ परिलक्षित होता है।

एक तथ्य सर्वदा स्मरण रखना चाहिये कि—

सूर्य स्वर में देवता का जप करें।

चन्द्र स्वर में देवी का जप करें।

सुषुम्णा स्वर में काल का जप करें।

इस प्रकार करने से मन्त्र शीघ्र जगता है।

साधकों या जिज्ञासुओं को यह शिकायत सर्वदा रहती है कि कलियुग में तो समस्त मन्त्र कीलित हैं। यह श्रवण करके या पढ़ करके आपको आश्चर्य होगा कि मैंने तो मन्त्र को कीलित नहीं पाया। हो सकता है कि यह 'मेरी भक्ति गुरु की शक्ति' हो।

मैंने एक बात देखी है और आपके कल्याणार्थ बता रहा हूँ कि—

कीलित हैं सब मन्त्र, तन्त्र, है सत्य इसे ही जानो।
पर कठिन जग में कुछ नहीं, तुम खुद को ही पहचानो॥

और जानना होगा कि—

□जो मन्त्र जपते समय त्रिकुटी के मध्य लाया जाता है वह तत्काल जाग्रत हो जाता है।

मैंने आपको सिद्धि का वह गुप्त भेद बता दिया है जोकि या तो कोई जानता नहीं है या फिर प्रकट करने को तैयार नहीं है।

अब आपको महापीठों, शक्ति पीठों के विषय में विस्तार से बता रहा हूँ क्योंकि आपके लिए इसे जानना अत्यधिक आवश्यक है। महानील नामक प्राचीन तन्त्र का कथन है कि—

□पीठ की अर्चना करने से सिद्धि मिलती है।

□समस्त पीठों में कामरूप श्रेष्ठ पीठ हैं।

□कामरूप पर पूजा करने वाले की देह में देवी स्वयं निवास करती है।

□इससे भी अधिक लाभकारी 'कामाख्या योनि मण्ड़ल' है। जहाँ पर कामरूप से भी सौ गुणा अधिक शक्ति जाग्रत होती है।

अतः प्रत्येक साधक को यथाशक्ति यह प्रयास करना चाहिये कि वह कामरूप में और विशेषतः कामरूप योनि मण्डल के पास पूजार्चन व जपादि करे।

इन शक्तिप्रद स्थानों पर साधना करने से पहले यह जान

लेना अत्यन्त आवश्यक है कि साधना किये जाने वाले शक्ति पीठ पर कौन से भैरव और कौन सी शक्ति का निवास है। क्योंकि इस ज्ञान के बिना वहाँ पर साधना करने से स्वयं भैरव ही विघ्न पैदा करते हैं और साधक का व साधना का सारा तेज हर लेते हैं। यही कारण है कि कुछ फल प्राप्त नहीं होता है।

मूलतः इक्यावन शक्ति पीठ हैं। यह वो स्थल है जहां पर देवी सती के अङ्ग-प्रत्यङ्ग गिरे थे। इससे सम्बन्धित कथा तो आप जानते ही होंगे। माता सती के जिस जिस स्थान पर जो जो अङ्ग गिरे थे वहाँ पर भैरव व शक्ति निवास कर रही है जिस कारण वह परम पुनीत पवित्र स्थल जाग्रत हो गये हैं। इन्हें इनकी जाग्रत शक्ति के कारण शक्ति पीठ कहा जाता है। नीचे एक सारणी के द्वारा शक्ति पीठ, उनके स्थल, उनके भैरव व शक्ति बताई गई है—

अङ्ग प्रत्यङ्ग	**शक्ति**	**भैरव**	**स्थान**
ब्रह्मरन्ध्र	कोट्टरी	भीमलोचन	हिंगुला
त्रिनेत्र	महिषमर्दिनी	क्रोध	करवीर
नाक	सुनन्दा	त्र्यम्बक	सुगन्धा
गला	महामाया	त्रि संधेश्वर	कश्मीर
जीभ	अम्बिका	उन्मत्त	ज्वालामुखी
वक्ष	त्रिपुर मालिनी	भीषण	जालन्धर
हृदय	जय दुर्गा	वैद्यनाथ	वैद्यनाथ
जाँघ	महामाया	कपाली	नेपाल
दाहिना हाथ	दाक्षायणी	अमर	मानस
नाभि	विमला	जगन्नाथ	विरज़ा
गण्ड	चण्डी	चक्रपाणि	गण्डकी

अङ्ग प्रत्यङ्ग	**शक्ति**	**भैरव**	**स्थान**
बाँई भजा	बहुला	भीरुक	बहुला
दाहिनी भुजा	भवानी	चन्द्र शेखर	चट्टल
बायाँ पाँव	भ्रामरी	ईश्वर	त्रि स्त्रोता
दाहिना पाँव	त्रिपुर सुन्दरी	त्रिपुरेश	त्रिपुरा
कूर्पर	मंगलचण्डी	कपिलाम्बर	उज्जैयनी
योनि	कामाख्या	उमानन्द	कामगिरी
हाथ की अंगुलियाँ	ललिता	भव	प्रयाग
कुण्डल	विशालाक्षी	काल	वाराणसी
मुकुट	विमला	सम्वर्त	किरीट
मणिवन्ध	गायत्री	सर्वानन्द	मणिवेद
पीठ	शर्वाणी	निमिष	कन्याश्रम
बाँई जाँघ	जयन्ती	कुमुदीश्वर	जयन्ती
दाँये पाँव का अंगूठा	भूत धात्री	क्षीर कण्ठ	काली पीठ
दाहिना गुल्फ	सावित्री	अश्व नाथ	कुरुक्षेत्र
ग्रीवा	महालक्ष्मी	संवरानन्द	श्री शैल
दाहिना नितम्ब	काली	काली	काल माधव
बायाँ नितम्ब	नर्मदा	भद्रसेन	शोण
कङ्काल	देव गर्भा	रुरु	काञ्ची
नाला	शिवानी	चण्ड	राम गिरि
केश	उमा	भूतेश	वृन्दावन
दाँत (ऊपरी)	नारायणी	संहार	शुचि
दाँत (नीचे के)	वाराही	महारुद्र	पञ्च सागर
कान (बाँया)	अपर्णा	वामन	करतोयातट
उदर	चन्द्रभागा	वक्रतुण्ड	प्रभास
मुण्ड	जय दुर्गा	क्रोधीश	काली घाट

अङ्ग प्रत्यङ्ग	शक्ति	भैरव	स्थान
चिबुक	भ्रामरी	सर्व सिद्धेश्वर	किकुम (जल में)
गण्ड बाँया	राकिणी	वत्स	गोदावरी
गण्ड दाँया	कुमारी	शिव	रत्नावली
नला	कालिका	योगीश	नलाहाटी
होंठ	फुल्लरा	विश्वेश	अट्टहास
नूपुर	इन्द्राक्षी	राक्षसेश्वर	लङ्का
हार	नन्दिनी	नन्दिकेश्वर	नन्दिपुर
मन	महिष मर्दिनी	वक्रनाथ	वक्रेश्वर
बाँया कन्धा	महादेवी	महोदर	मिथिला
पाँव की अंगुलियाँ	अम्बिका	अमृत	विराट
पाणि	यशोहरेश्वरी	चण्ड	यशोहर
ऊपरी होंठ	अवन्ती	लम्ब कर्ण	भैरव गिरि
दाहिना गुल्फ	श्री सुन्दरी	सुनन्दानन्द	श्री पर्वत
बायाँ गुल्फ	कपालिनी	सर्वानन्द	विभाषक
दाहिना गण्ड	विश्वमातृका	विश्वेश	गोदावरी

उपरोक्त सारणी में व्यक्त सभी शक्ति पीठ हैं। पूर्व वर्णनानुसार पुनः स्पष्ट किया जाता है कि कामगिरि पर जगन्माता की योनि गिरी थी। यहाँ पर उमानन्द भैरव निवास करते हैं और यहाँ पर जाग्रत शक्ति महामाया कामाख्या भक्तों का कल्याण कर रही हैं। कामरूप (आसाम) समस्त अभिलाषाओं का पूरक महापीठ है। मान्यता है और प्रमाणित भी हुआ है कि आजकल अर्थात कलियुग में यहाँ पर जपादि अनुष्ठान्न करने से शीघ्र लाभ प्रकट होता है। यहाँ पर प्रत्येक मास माता को मासिक रुधिर स्राव होता है। यहाँ का रुधिर

वाला वस्त्र कुछ भक्तों में पुजारी वितरित कर दिया करता है। इस वस्त्र को स्वर्ण के ताबीज में भरकर कण्ठ पर या सिर पर धारण करके जपादि पूजा करने से साधक प्रत्येक कार्य में सफल हुआ करता है। यह साधकों की गुप्त बात है जिसे कि यहाँ पर स्पष्ट किया गया है।

हमारी गुप्त विद्याओं में एक विद्या है 'ज्योतिष'। इसमें ग्रहों की स्थिति के अनुसार व्यक्ति का भाग्य जाना जाता है। ग्रह नक्षत्रान्तर्गत भ्रमण करते हैं। मूलतः भविष्य कहने की प्रथा नौ ग्रहों से ही है परन्तु सूक्ष्म भविष्य व सत्य कथन के लिये नक्षत्र द्वारा फलादेश कहना चाहिये। मैं यहाँ पर भविष्य कथन या ज्योतिष प्रस्तुत करने नहीं जा रहा हूँ अपितु नक्षत्र पुरश्चरण बताने जा रहा हूँ कि किस नक्षत्र में मूल मन्त्र का कितना जप करने से क्या फल मिलता है।

अश्विनी नक्षत्र में एक हजार जप से सिद्धि होती है।
भरणी में दो हजार जप लाभ देते हैं।
कृत्तिका में दो हजार जपों से लाभ होता है।
रोहिणी में सौ या एक हजार कामना पूरी होती है।
मृगशिरा में पांच हजार जप से बुद्धि तीव्र होती है।
आर्द्रा में छः हजार जप करें तो कार्य सिद्ध होता है।
पुनर्वसु में हजार जप से देवत्व मिलता है।
पुष्य में सात हजार जप से सुसिद्ध होता है।
आश्लेषा में छः हजार जप से इच्छा पूरी होती है।
मघा में दश हजार जप से अधिकार प्राप्त होता है।
पूर्वा (तीनों) में ग्यारह हजार जप से धन लाभ होता है।
उत्तरा (तीनों) में बारहा हजार जपने से कामना पूरी होती है।

हस्त में तेरह हजार जप करने से तेज बढ़ता है।
चित्रा में दो हजार जप करने से सफलता मिलती है।
विशाखा में चार हजार जप करने से सौम्यता आती है।
अनुराधा के पूरे समय जप करने से परिवार सुख प्राप्त होता है और किसी किसी को सिद्धि प्राप्त हुई है।
ज्येष्ठा में दो हजार जप से मन्त्र सिद्ध होता है।
मूला में पाँच हजार जप से साधन सफल होता है।
श्रवण में दो हजार जप से कार्य सिद्ध होता है।
धनिष्ठा में दो हजार जप करने से यशस्वी होता है।
शतभिषा के दो हजार जप पाप नाश करते हैं।
रेवती में चार हजार जप करने से अधिकार बढ़ता है।

इन सब उपलब्धियों के लिये गुरु से सिद्ध व जाग्रत मन्त्र प्रसाद रूप में ग्रहण करना चाहिये और विधि विधान से अनुष्ठान्न करके जप करना होता है। यह सब पढ़ करके कृपा करें और मुझे गुरु बनाने का विचार न करें और न ही मैं आपको गुरु समान मिल सकूँगा और न ही मार्ग प्रदर्शन कर सकूँगा क्योंकि मुझे जो कहना है वह किसी एक से नहीं समस्त पाठक पाठिकाओं से कहना है और यह लेखन के द्वारा ही सम्भव हो सकता है। इस कारण आप अपने आस-पास किसी योग्य व्यक्ति को ढूँढ़कर गुरु बनायें और उसी से मार्ग दर्शन प्राप्त करें। मैंने जो बताना है वह पुस्तक के माध्यम से ही कहूँगा।

अला बला क्या है ?

किसी देह को जब भूत-प्रेत या टोना-टोटका लगकर उसे परेशान कर रहे होते हैं तो उसे अला-बला लगना कहते हैं अर्थात किसी को भूत-प्रेत होना अला-बला होना है।

अभिचार क्या है ?

किसी के ऊपर किसी भी प्रकार से षड़कर्मों में से कोई एक या अधिक कर्म अर्थात प्रयोग करना अभिचार करना कहलाता है।

षट्-त्रिशदक्षरी विद्या क्या है ?

यह एक कल्प वृक्ष के समान सर्वाभीष्ट पूरक मन्त्र है। इसको ब्रह्मास्त्र कहते हैं। इस विद्या को ग्रहण काल में जबकि साधक को ग्रहण अनुकूल हो तब जपना चाहिये। ऐसा करने से साधक विशेषता प्राप्त करता है। षट त्रिशदक्षरी विद्या रूपक यह मन्त्र है—

"ओ३म् हरांघ्रि स्वाहा।।"

मन्दार विद्या क्या है ?

देवी बगलामुखी का एक विशेष मन्त्र व उससे सम्बन्धित प्रयोग मन्दार विद्या कहलाता है। यह प्रयोग यदि विधि से किया जाये तो साधक कभी दरिद्र नहीं होता है और शत्रु तो उसके समक्ष टिक ही नहीं पाते हैं। मन्दार विद्या निम्नलिखित है—

"श्रीं ह्रीं ऐं भगवति बगले मे श्रियं देहि देहि स्वाहा।।"

बगला पञ्चदशी मन्त्र क्या है ?

त्रैलोक्य स्तम्भिनी माता बगलामुखी का पञ्चदशी मन्त्र निम्नलिखित है—

"ह्रीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदा धारिण्यै स्वाहा।।"

इसे कुल क्रम से जपना पड़ता है। महानिशा के समय निर्वस्त्र किसी नवयौवन शक्ति (सुन्दरी) को साथ रखकर उसका अर्चन तर्पण करके उपरोक्त मन्त्र का जाप करने से समस्त कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

दश महाविद्यायें कौन हैं ?

काली, तारा, छिन्नमस्ता, त्रिपुर भैरवी, बगलामुखी, मातंगी, भुवनेश्वरी, षोड़शी, धूमावती व कमला ही दश महाविद्याएँ हैं।

आद्य महाविद्या कौन है ?

आद्य महाविद्या काली है।

महाविद्या धर्म या शाखा कौन है ?

महाविद्या को मानने वाले को कौल[1] कहते हैं और इनके द्वारा ग्रहण किया गया धर्म कुल धर्म कहलाता है। इस धर्म में दो शाखाएँ व्याप्त हैं जोकि अपना अत्यधिक महत्व प्रदर्शित करती हैं। इसमें प्रथम शाखा काली कुल की है एवं द्वितीय शाखा श्री कुल की है। इन्हीं दो शाखाओं में दश महाविद्याएँ मानी जाती हैं।

१. सम्भवतः आजकल पाई जाने वाली कौल जाति इस विषय से सम्बन्धित नहीं है।

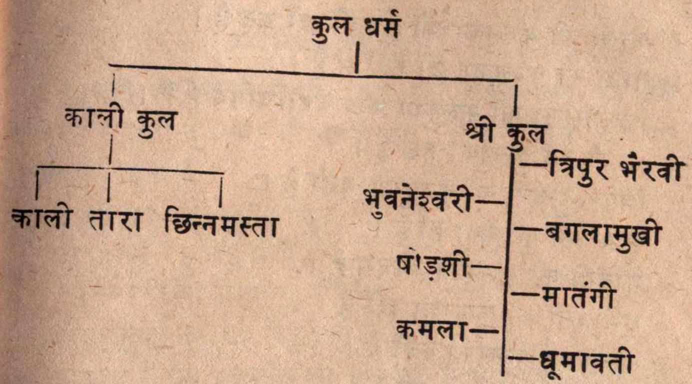

मुख शोधन मन्त्र क्या है ?

प्रायः मुख को धो लेने व जिह्वा को साफ कर लेने पर भी शुद्धि नहीं होती है अतः बीज मन्त्र से मुख शोधन करते हैं। प्रस्तुत विषय का मुख शोधन मन्त्र '**ऐं ह्रीं ऐं**' है। इसे मुख में जपते हैं।

मन्त्र चैतन्य क्या है ?

मन्त्र को जगाना ही मन्त्र चैतन्यता है। प्रायः मन्त्रों के चेतना मन्त्र अलग अलग होते हैं। प्रस्तुत पूजा में मन्त्र चैतन्य विद्या का हृदय में एक सौ आठ बार '**ईं मूलं ईं**' का जप किया जायेगा।

कुल्लुका क्या है ?

अनेक विद्याओं की कुल्लुकाएँ विभिन्न होती हैं। आगे कहे गये विवरण के अनुसार सम्बन्धित मन्त्र सिर पर जपा जाये तो कुल्लुका करना कहते हैं।

काली की कुल्लुका **क्रीं हूँ स्त्रीं ह्रीं फट्** है।
तारा की कुल्लुका **ह्रीं स्त्रीं हूँ** है।
छिन्नमस्ता की कुल्लुका **वज्र वैरोचिनियै हूँ** है।
भैरवी की कुल्लुका **हसैं** है।
त्रिपुर सुन्दरी की कुल्लुका **क्लीं** है।
शम्भु की कुल्लुका **ह्रौं** है।
मातंगी की कुल्लुका **ओ३म्** है।
धूमावती की कुल्लुका **ह्रीं** है।
बाला की कुल्लुका **स्त्रीं** है।
लक्ष्मी की कुल्लुका **श्रीं** है।
शारदा की कुल्लुका **ऐं** है।
अनन्दा की कुल्लुका **क्लीं** है।
बगलामुखी की कुल्लुका **ओ३म् हुँ क्षौं** है।

कुल्लुका के बिना जो जप करता है उसके जप का तेज हर लिया जाता है। सिद्धि में विघ्न आते हैं और प्रयोग व्यर्थ रह जाया करता है।

सेतु क्या है ?

सेतु भी एक मन्त्रात्मक क्रिया है जिसे करना आवश्यक होता है। सेतु का जप हृदय में किया जाता है। इसको जपे बिना तो मन्त्र साधना का अधिकार ही नहीं मिलता है। सेतु मन्त्र वर्णानुसार है जोकि निम्नलिखित सारणी में व्यक्त है।

सेतु मन्त्र

विप्र का सेतु मन्त्र **ओ३म्** है।
क्षत्रिय का सेतु मन्त्र **ओ३म्** है।
वैश्य का सेतु मन्त्र **फट्** है।
शूद्र का सेतु मन्त्र **ह्रीं** है।

महासेतु क्या है ?

महासेतु की क्रिया साधक को सर्वं काल जप के लिये उपयुक्त बनाती है। यह भी मन्त्रात्मक बीज है जिसे कि कण्ठ में जपना पड़ता है।

काली का महासेतु **क्रीं** है।
तारा का महासेतु **हुँ** है।
भुवनेश्वरी का महासेतु **ह्रीं** है।
बगलामुखी का महासेतु **स्त्रीं** है।

साधना में इस महासेतु का प्रारम्भ में जप करके फिर जो मन्त्र सिद्ध किया है वह विशेष प्रभावी होता है।

निर्वाण क्या है ?

यह एक ऐसी क्रिया है जिसे जाने बिना या किये बिना साधक को सिद्धि प्राप्त नहीं होती है। यदि किसी को सिद्धि मिल भी गई हो तो वह देव कृपा या भाग्य प्रबलता ही कही जायेगी। मणिपूर में ओ३म् का जप करके मातृकाद्य अं का उद्धार करते हैं। इसके बाद मूल मन्त्र और फिर ऐं का जप करते हैं। इस क्रिया को अ से ल तक किया जाता है।

प्राण योग क्या है ?

अपने मन्त्र को 'ह्रीं' से पुटित करना प्राण योग कहलाता है। यह क्रिया भी अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि जिस प्रकार प्राण के बिना देह मृत है उसी प्रकार प्राण योग के बिना मन्त्र मृत है।

दीपन क्या है ?

प्रणव अर्थात ओ३म् से अपने मन्त्र को पुटित करके सात

बार जपने को दीपन कहते हैं। जिस प्रकार बन्द कमरे में प्रकाश के बिना कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता है उसी प्रकार इस क्रिया के बिना सिद्धि दृष्टिगोचर नहीं होती है।

शापोत्कीलन क्या है ?

यह जगत प्रसिद्ध मान्यता है कि प्रत्येक मन्त्र कीलित या श्रापित है। मन्त्र को श्राप मुक्त करना या उसे कीलन से मुक्त करना ही शापोत्कीलन कहलाता है। प्राय: सभी मन्त्रों के अलग अलग श्राप व कीलन होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक देवी बगलामुखी की है अत: बगलामुखी का शापोत्कीलन प्रस्तुत है।

ॐ ह्रूं ह्रूं क्लीं क्लीं क्लीं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं बगला शापमुत्कीलयोत्कीलय स्वाहा ॥

—: ० :—

१

श्री पीताम्बरा प्रातः स्मरणम्

प्रत्येक कार्य व जीवन का शुभारम्भ प्रात: काल व प्रात: कृत्यों के साथ हुआ करता है। रात्रि विश्राम के पश्चात् शरीर अपने समस्त धातुओं को सन्तुलित किये रहता है जिसके कारण मन मस्तिष्क शान्त होते हैं। किसी भी प्रकार का हृदय सम्बन्धी कार्य शान्त मनोमस्तिष्क में ही करना चाहिये। इससे हृदय व कार्य दोनों प्रसन्न होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के अपने-अपने ईष्ट होते हैं और यह अत्यधिक आवश्यक है कि प्रात: निद्रा त्याग के पश्चात् सर्वप्रथम यह देखा जाये कि कौन सा स्वर चल रहा है। जो स्वर चल रहा हो उसी तरफ के हाथ से मुखादि का मार्जन करें तदुपरांत सीधे बैठकर दोनों हाथ जोड़कर अपने ईष्ट का प्रात: स्मरण करना चाहिये और उसके बाद दोनों हाथों को फैलाकर हाथों पर समस्त तीर्थों, पितृ व देव तीर्थ मानकर प्रसन्नता से हाथों पर भी नमस्कार (सिजदा) करे। ऐसा करने से समय अच्छा व्यतीत होता है और देव भी प्रसन्न रहता है। यहाँ पर श्री पीताम्बरा माता बगलामुखी का प्रात: स्मरण प्रस्तुत है जो कि शत्रु नाशक, त्रैलोक्य स्तम्भनी तो है ही ब्रह्म विद्या भी है।

श्रीबगला प्रातः स्मरणम्

प्रातः स्मरामि मधु पूर्ण सुधा समुद्रम्,
तन्मध्य दिव्य मणिद्वीप मनोहरं च।

कल्पाटवीममित रत्न विभूष कोटम्,
श्रीमण्डपं विशद शोभि हृदि स्फुरन्तम् ।१।
प्रातर्नमामि मधुसूदन त्रीक्षणाजैः,
नीराजितं ह्यति नतैः मुकुट प्रदीपैः ।
सौवर्ण वर्णमतुलं तं पाद पीठम्,
देव्या निवेषित सदंध्रि द्वयं ललामम् ।२।
प्रातर्भजामि भव भूरि भयापहां ताम्,
पीताम्बरां कर सु मुद्गर वैरि जिह्वाम् ।
सु स्तम्भिनीं सु वदनां करुणार्द्र चित्ताम्,
सृष्ट्युत्पत्ति स्थिति नियामिनि ब्रह्म विद्याम् ।३।

—:०:—

२

श्री पीताम्बरा बगलामुखी पञ्जर स्तोत्रम्

मैंने अपनी पुस्तक 'दुर्गा उपासना' में एक दुर्लभ 'वज्र पञ्जर स्तोत्र' प्रस्तुत किया था। उसी प्रकार से यहाँ पर श्री बगलामुखी पञ्जर स्तोत्र प्रस्तुत है। इस प्रकार के स्तोत्र कवचादि आज दुर्लभ हैं जो कि साधकों को गुरु कृपा से या ईष्ट कृपा से ही प्राप्त होते हैं। ऐसे स्तोत्र बेहद प्रभावी व शीघ्र लाभकारी हुआ करते हैं। प्रस्तुर पञ्जर स्तोत्र ब्रह्मास्त्र तक का स्तम्भन करता है। साधक के घोर दारिद्रय का नाश करता प्रातः सांय इसका पाठ करने वाले के शत्रुओं को बहुत विकलता होती है। जो साधक तीनों संध्याओं में इसका जप करता है उसके शरीर की रक्षा स्वयं पीताम्बरा करती हैं। इसके प्रति विपक्ष की बुद्धि स्तम्भित होती है। साधक के प्रति किए गये अभिचारों का क्षय होता है।

श्रीबगला पञ्जर स्तोत्र

अथ विनियोग—

अस्य श्रीमत्-पीताम्बरा-बगलामुखी-पञ्जर-रूप-मन्त्रस्य भगवान् नारद ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। जगद्-वशंकरी पीताम्बरा बगला देवता। ह्लीं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। क्लीं कीलकम्। अमुक-गोत्रोत्पन्नस्य

अमुक शर्मणः मम स्व-शरीर-रक्षा-पूर्वकं पर-सैन्य-मन्त्र-तन्त्र-यन्त्रादि-विपक्ष-क्षयार्थे स्वाभीष्ट-सिद्धये च जपे विनियोगः ।

अथ ऋष्यादि-न्यास—

भगवते नारद-ऋषये नमः शिरसि ।
अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे जगद्-वशंकरी-
पीताम्बरा-बगला-देवतायै नमः हृदये ।
ह्लीं बीजाय नमः दक्ष-स्तने ।
स्वाहा-शक्तये नमः वाम-स्तने ।
क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ।
मम स्व-शरीर-रक्षा-पूर्वकं स्वाभीष्ट-सिद्धये
विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

अथ षडंग-न्यास—

कर-न्यास	अंग-न्यास
अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥	ह्लां हृदयाय नमः ॥
तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥	ह्लीं शिरसे स्वाहा ॥
मध्यमाभ्यां वषट् ॥	ह्लूं शिखायै वषट् ॥
अनामिकाभ्यां हुं ॥	ह्लैं कवचाय हुं ॥
कनिष्ठाभ्यां वौषट् ॥	ह्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट् ॥
करतल-करपृष्ठाभ्यां फट् ॥	ह्लः अस्त्राय फट् ॥

अथ व्यापक न्यास—

मन्त्रराज से ही किया जाता है ।

अथ ध्यान—

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्न-वेदी-
सिंहासनोपरि-गतां परि-पीत-वर्णाम् ।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषितांगीं
देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम् ॥

अथ मानस-पूजन—

श्रीपीताम्बरायै नमः लं पृथिव्यात्मकं गंधं परि-कल्पयामि ।
श्रीपीताम्बरायै नमः हं आकाशात्मकं पुष्पं परि-कल्पयामि ॥
श्रीपीताम्बरायै नमः यं वाय्वात्मकं धूपं परि-कल्पयामि ।
श्रीपीताम्बरायै नमः वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परि-कल्पयामि ॥

अब योनि-मुद्रा से प्रणाम करके पञ्जर स्तोत्र का पाठ किया जायेगा ।

सूत उवाच

सहस्रादित्य-संकाशं शिवं साम्बं सनातनम् ।
प्रणम्य नारदः प्राह विनम्र-नत-कन्धरः ।१।

श्री नारद उवाच

भगवन्, साम्ब, तत्वज्ञ, सर्व-दुःखापहारक !
श्रीमत्-पीताम्बरा-देव्याः पंजरं पुण्यदं सदा ।२।

प्रकाशय विभो, नाथ ! कृपां कृत्वा ममोपरि ।
यद्यहं तव पादाब्ज-धूलि-धूसरितः सदा ।३।

श्रीशिव उवाच

पंजरं तत्प्रवक्ष्यामि देव्याः पाप-प्रणाशनम् ।
यं प्रविश्य न वाधन्ते बाणैरपि नरा भुवि ।४।

ओ३म् ऐं ह्लीं श्रीं
श्रीमत्-पीताम्बरा देवी बगला बुद्धि-वर्द्धिनी ।
पातु मामनिशं साक्षात्-सहस्रार्क-युत-द्युतिः ।५।
शिखादि-पाद-पर्यन्तं वज्र-पंजर-धारिणी ।

ओ३म् ऐं ह्लीं श्रीं
ब्रह्मास्त्र-संज्ञा या देवी पीताम्बर-विभूषिता ।६।
श्रीबगला ह्यवत्वत्र चोर्ध्व-भागं महेश्वरी ।

ओ३म् ऐं ह्लीं श्रीं
कामांकुशा कला पातु बगला-शास्त्र-बोधिनी ।७।
पीताम्बरा सहस्राक्षा ललाटं कामितार्थदा ।

ओ३म् ऐं ह्लीं श्रीं
पातु मां बगला नित्यं पीताम्बर सुधारिणी ।८।
कर्णयोश्चैव युग - पदति - रत्न - प्रपूजिता ।

ओ३म् ऐं ह्लीं श्रीं
पातु मां बगला-देवी नासिकां मे गुणाकरा ।९।
पीत-पुष्पैः पीत-वस्त्रैः पूजिता वेद-दायिनी ।

ओ३म् ऐं ह्लीं श्रीं
पातु मां बगला नित्यं ब्रह्म-विष्ण्वादि-सेविता ।१०।
पीताम्बरा प्रसन्नास्या नेत्रयोर्युग-पद्-भ्रुवौ ।

ओ३म् ऐं ह्लीं श्रीं
पातु मां बगला नित्यं बलदा पीत-वस्त्र-धृक् ।११।
अधरोष्ठौ तथा दंतान् जिह्वां च मुखगा समाः ।

ओ३म् ऐं ह्लीं श्रीं
पातु मां बगला देवी पीताम्बर-सुधारिणी ।१२।
गले हस्तौ तथा बाहौ युग-पद्-बुद्धिदासताम् ।

ओ३म् ऐं ह्लीं श्रीं
पातु मां बगला देवी दिव्य-स्रगनुलेपना ।१३।
हृदये च स्तनौ नाभौ वटावपि कृशोदरी ।

ओ३म् ऐं ह्लीं श्रीं
पातु मां बगला नित्यं पीत-वस्त्रावृता घना ।१४।
जंघायां च तथा चोरौ गुल्फयोश्चाति-वेगिनी ।
अनुक्रमेण यत्-स्थानं त्वक्-केश-नख-लोममे ।१५।
असृङ्-मासं तथास्थीनि संधयः सन्ति मे पराः ।
ताः सर्वा बगला देवी रक्षेन्मे च मनोहरा ।१६।

श्री शिव उवाच

इत्येतद् वरदं गोप्यं कलावपि विशेषतः ।
पंजरं बगला-देव्या घोर-दारिद्रय-नाशनं ।१७।

पंजरं यः पठेत् भक्त्या स विघ्नैर्नाभि-भूयते ।
अव्याहत-गतिश्चापि ब्रह्मा-विष्ण्वादि-सत्परे ।१८।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले तारकं परमाद्भुतम् ।
न बाधन्ते नर-व्याघ्र-पंजरस्थं कदाचन ।१९।
अतो भक्तैः कौलिकैश्च स्व-रक्षार्थं-सदैव हि ।
पठनीयं प्रयत्नेन सर्वानर्थविनाशनम् ।२०।
महा-दारिद्रय-शमनं सर्व - मांगल्य - वर्धनम् ।
विद्या-विनय-सत्सौख्यं महा-सिद्धिकरं परं ।२१।
यः पंजरं प्रविश्यैवं मन्त्रं जपति वै भुवि ।
कौलिको वाऽकौलिको वा व्यासवद्विचरेद्भुवि ।२२।
इदं ब्रह्मास्त्रविद्याया पंजरं साधु गोपितम् ।
पठेत् स्मरेद् ध्यानसंस्थः स जयेन्मरणं नरः ।२३।
चन्द्र-सूर्य-समो भूत्वा वसेत् कल्पायुतं भुवि ।

सूत उवाच

इति कथितमशेषं श्रेयसामादि - बीजं ।२४।
भव - शत - दुरितघ्नं ध्वस्त - मोहान्धकारम् ।
स्मरणमतिशयेन प्रातरेवाऽत्र मर्त्यो ।२५।
यदि विशति सदा वै पंजरं पण्डितः स्यात् ।२६।

'श्रीपीताम्बरार्पणमस्तु'

३

श्री बगलामुखी स्तोत्रम्

प्रस्तुत श्री बगलामुखी स्तोत्र एक प्राचीन दुर्लभ तन्त्र ग्रन्थ 'रुद्रयामल तन्त्र' से उद्धृत है। यह स्तोत्र भी शत्रु स्तम्भन, विघ्नादि का शमन, दारिद्रय का नाश करता है। जो इसका तीनों संध्याओं में पाठ करता है उसके विपक्षी मूक होकर उसे देखते रह जाते हैं। सौभाग्य का उदय होता है। क्रोधित व्यक्ति का क्रोध नष्ट हो जाता है। दूसरे का गर्व खण्डित होता है और माता की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

अथ स्तोत्रम्

अथ विनियोग मन्त्रः

ॐ अस्य श्री बगलामुखी स्तोत्रस्य नारद ऋषिः, श्री बगलामुखी देवता मम सन्निहितानां विरोधिनां वांगमुख पद बुद्धिनां स्तम्भनार्त्थे पाठे विनियोगः ॥

अथ षडंगन्यास मन्त्र

अथ करन्यासः

ॐ ह्लां अगुष्ठाभ्यां नमः ॥
ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः ॥

ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट् ॥
ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हुं ॥
ॐ ह्लौं कनिष्ठाभ्यां वौषट् ॥
ॐ ह्लः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट् ॥

अथ अंग न्यासः

ॐ ह्लां हृदयाय नमः ॥
ॐ ह्लीं शिर से स्वाहा ॥
ॐ ह्लूं शिखायै वषट् ॥
ॐ ह्लैं कवचाय हुम् ॥
ॐ ह्लौं नेत्र त्रयाय वौषट् ॥
ॐ ह्लः अस्त्राय फट् ॥

अथ ध्यानम्

ॐ मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्न वेदि ।
सिंहासनो परिगतां परिपीत वर्ण्णाम् ॥
पीताम्बरा भरण माल्य विभूषितांगी ।
श्री देवीम्भजामि धृत मुद्गर वैरि जिह्वाम् ॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं ।
वामेन शत्रून्परि पीड़ यन्तीम् ॥
गदाभिघातेन च दक्षिणेन् ।
पीताम्बराढ्यान्द्वि भुजाम्भजामि ॥

श्री बगलामुखी-स्तोत्रम्

चलत् - कनक - कुण्डलोल्लासित - चारु - गण्ड - स्थलीम् ।
लसत् - कनक - चम्पक - द्युतिमदिन्दु - बिम्बाननाम् ॥
गदा - हत - विपक्षकां कलित - लोल - जिह्वाञ्चलाम् ।
स्मरामि बगलामुखीं विमुख-वाङ् - मनस - स्तम्भिनीम् ।१।

पीयूषोदधि-मध्य - चारु - विलसद् - रत्नोज्ज्वले मण्डपे ।
तत् - सिंहासन - मूल - पातित-रिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम् ॥
स्वर्णाभ्यां कर-पीड़ितारि-रसनां भ्राम्यद् गदां बिभ्रतीम् ।
यस्त्वां ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः ।२।

देवि ! त्वच्चरणाम्बुजार्चन-कृते यः पीत-पुष्पाञ्जलिम् ।
भक्त्या वाम-करे निधाय च मनुं मन्त्री मनोज्ञाक्षरम् ॥
पीठ-ध्यान-परोऽथ कुम्भक-वशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवम् ।
तस्यामित्र-मुखस्य वाचि हृदये जाडयं भवेत् तत्क्षणात् ।३।

वादी मूकति रङ्कति क्षिति-पतिर्वैश्वानरः शीतति ।
क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति ॥
गर्वी खर्वति सर्व-विच्च जड़ति त्वन्मन्त्रिणा यन्त्रितः ।
श्री-नित्ये, बगलामुखि ! प्रति-दिनं कल्याणि ! तुभ्यं नमः ।४।

मन्त्रस्तावदलं विपक्ष - दलने स्तोत्रं पवित्रं च ते ।
यन्त्रं वादि-नियन्त्रणं त्रि-जगतां जैत्रं च चित्रं च ते ॥
मातः ! श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे ।
त्वन्नाम-स्मरणेन संसदि मुख-स्तम्भो भवेद् वादिनाम् ।५।

दुष्ट - स्तम्भनमुग्र - विघ्न - शमनं दारिद्र्य - विद्रावणम् ।
भूभृद् - संदमनं चलन्मृग - दृशां चेतः समाकर्षणम् ॥
सौभाग्यैक - निकेतनं सम - दृशः कारुण्य - पूर्वेक्षणम् ।
मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ।६।

मातर्भञ्जय मद् - विपक्ष - वदनं जिह्वां च संकीलय ।
ब्राह्मीं मुद्रय दैत्य - देव - धिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय ॥
शत्रूंश्चूर्णय देवि ! तीक्ष्ण - गदया गौराङ्गि, पीताम्बरे !
विघ्नौघं बगले ! हर प्रणमतां कारुण्य - पूर्णेक्षणे ।७।

मातर्भैरवि ! भद्र - कालि विजये ! वाराहि ! विश्वाश्रये !
श्रीविद्ये ! समये ! महेशि ! बगले ! कामेशि ! वामे रमे !!
मातङ्गि ! त्रिपुरे ! परात्पर - तरे ! स्वर्गापवर्ग - प्रदे !
दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि ! त्राहि माम् ।८।

संरम्भे चोर-सङ्घे प्रहरण - समये बन्धने व्याधि - मध्ये ।
विद्या-वादे विवादे प्रकुपित-नृपतौ दिव्य-काले निशायाम् ॥
वश्ये वा स्तम्भने वा रिपु-वध-समये निर्जने वा वने वा ।
गच्छँस्तिष्ठंस्त्रि-कालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः ।९।

नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादरात् ।
धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले ।
राजानोऽप्यरयो मदान्ध - करिणः सर्पा मृगेन्द्रादिकाः ।
ते वै यान्ति विमोहिता रिपु - गणा लक्ष्मी स्थिरा सर्वदा ।१०।

त्वं विद्या परमा त्रिलोक - जननी विघ्नौघ - संच्छेदिनी ।
योषाकर्षण - कारिणी त्रि - जगतामानन्द - सम्वर्द्धिनी ॥
दुष्टोच्चाटन - कारिणी पशु - मनः - सम्मोह-सन्दायिनी ।
जिह्वा - कीलन - भैरवी विजयते ब्रह्मास्त्र - विद्या परा ।११।

विद्या - लक्ष्मीर्नित्य - सौभाग्यमायुः,
पुत्रैः पौत्रैः सर्व - साम्राज्य सिद्धिः ।
मानं भोगो वश्यमारोग्य - सौख्यं,
प्राप्तं सर्वं भू - तले त्वत् - परेण ।१२।

यत् - कृतं जप - सन्नाहं गदितं परमेश्वरि !
दुष्टानां निग्रहार्थाय तद् गृहाण नमोऽस्तु ते ।१३।

पीताम्बरां च द्वि - भुजां त्रि - नेत्रां गात्र - कोमलाम् ।
शिला - मुद्गर - हस्तां च स्मरेत् तां बगलामुखीम् ।१४।

ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।
गुरु - भक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ।१५।

—: ० :—

४

श्री बगलामुखी कवचम्

यह कवच एक दुर्लभ ग्रन्थ 'विश्वसार तन्त्र' से लिया गया है। माता पार्वती के प्रश्न करने पर कैलाश पर स्थित शिवजी बताते हैं कि श्री बगलामुखी रिपुओं का नाश करती है। ऐश्वर्य प्रदान करती है। साधक के लिये तो देवी वाञ्छा कल्पलता ही है। प्रस्तुत कवच के पाठ के अनेकों लाभ कहे गये हैं जिनमें से मुख्यतः अपुत्र को पुत्र होना, निर्धन को धन मिलना आदिक हैं यदि महानिशा के समय इसका पाठ किया जाये तो सात रातों में ही देवी कृपा करती है। गुरु का ध्यान करके शक्ति संयुक्त होकर महानिशा का पाठ करना चाहिए। कहा गया है कि तीन बार पाठ करने से वशीकरण करता है। हल्दी से शत्रु की प्रतिमा बनाकर उसके ऊपर शत्रु का नाम लिखकर इस विद्या का अनुष्ठान्न करना चाहिये। इक्कीस दिनों में इस कवच के एक हजार पाठ करने चाहिये। ऐसा करने से शत्रु का स्तम्भन होता है। नवनीत को इस कवच से शक्तिकृत करके बन्ध्या को पिलाने से वह माता बनती है। इस कवच के अत्यधिक प्रभावी व शत्रु को हानिकारक प्रयोग किये जाते हैं। भावी अनिष्ट को रोकने के लिये यहां पर वह खतरनाक प्रयोग प्रस्तुत नहीं कर रहा हूँ। केवल इतना समझ लें कि पुरुष इसे लिखकर दाहिनी भुजा व स्त्री बाँयी भुजा पर धारण करे तो लाभ ही रहता है। एक सौ ग्यारह बार इस स्तोत्र का पाठ करने से इसका

पुरश्चरण पूर्ण होता है। बिना पुरश्चरण के माना जाता है कि अधिक लाभ प्राप्त नहीं होता है। इसे धारण करने के लिये अष्टगन्ध से भोजपत्र के ऊपर लिखते हैं।

अथ विनियोग मन्त्र

ॐ अस्य श्री बगलामुखी ब्रह्मास्त्र मन्त्र कवचस्य भैरव ऋषिर्विराट् छन्दः, श्री बगलामुखी देवता, क्लीं बीजम् ऐं शक्तिः श्री कीलकम्, मम परस्य च मनोभिलाषितेष्ट कार्यं सिद्धये पाठे विनियोगः ॥

अथ षडंगन्यासः

अथ अंगन्यास मन्त्रः

ॐ भैरव ऋषये नमः ॥ (शिर पर)
ॐ विराट छन्दसे नमः ॥ (मुख पर)
ॐ बगलामुखी देवतायै नमः ॥ (हृदय पर)
ॐ क्लीं बीजाय नमः ॥ (गुप्तांग पर)
ॐ ऐं शक्तयै नमः ॥ (पांवों पर)
ॐ श्रीं कीलकायै नमः ॥ (सभी अंगों पर)

अथ करन्यास मन्त्र

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥

ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकायभ्यां नमः ॥
ॐ ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ॥

अथ पुनः अंगन्यास मन्त्र

ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॥
ॐ ह्रीं शिर से स्वाहा ॥
ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ॥
ॐ ह्रैं कवचाय हुम् ॥
ॐ ह्रौं नेत्र त्रयाय वौषट् ॥
ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ॥

अथ ध्यान मन्त्र

ॐ सौवर्णासन संस्थितान्त्रि नयनाम्पीतां शुकोल्लासिनी हेमाभांगरुचिं शशांक मुकुटां स्त्रक चम्पकस्त्रग्युताम् हस्तैर्म्मुद्‌गर पाश बद्ध रसनां सम्बिभ्रतीम्भूषण व्याप्तांगीं बगलामुखी त्रि जगतां संस्तम्भिनीञ्चन्तये ॥

अथ बगलामुखी मन्त्र

ॐ ह्लां ऐं श्रीं क्लीं श्री बगलानने मम रिपून्नाशय नाशय, ममैश्वर्याणि देहि देहि, शीघ्रं मनोवांछित कार्य साधय साधय ह्लीं स्वाहा ।

इस मन्त्र को एक सौ आठ बार जपें ।

शिरो मे पातु ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम् ।
सम्बोधनपदम्पातु नेत्रे श्रीबगलानने ।१।

श्रुतौ मम रिपुम्पातु नासिकान्नाशय द्वयम् ।
पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्य्याण्यन्तन्तु मस्तकम् ।२।

देहि द्वन्द्वं सदा जिह्वाम्पातु शीघ्रं व्वचो मम ।
कण्ठदेशं स न पातु वाञ्छितम्बाहुमूलकम् ।३।

कार्य्यं साधय द्वन्द्वन्तु करौ पातु सदामम ।
मायायुक्ता तथा स्वाहा हृदयम्पातु सर्व्वदा ।४।

अष्टाविकचत्त्वारिंशदण्डाढ्या बगलामुखी ।
रक्षांकरोतु सर्व्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम ।५।

ब्रह्मास्त्राख्यो मनु पातु सर्वांगे सर्व्वसन्धिषु ।
मन्त्रराजः सदा रक्षांकरोतु मम सर्व्वदा ।६।

ॐ ह्रीं पातु नाभिदेशम्मे कटिम्मे बगलावतु ।
मुखी वर्ण्णद्वयम्पातु लिंगम्मे मुष्कयुग्मकम् ।७।

जानुनी सर्व्वदुष्टानाम्पातु मे वर्ण्णपञ्चकम् ।
वाचम्मुखन्तथा पादं षड्वर्ण्णा परमेश्वरी ।८।

जंघायुग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी ।
स्तम्भयेति पदम्पृष्ठम्पातुवर्ण्णत्रयम्मम ।९।

जिह्वां व्वर्ण्णद्वयम्पातु गुल्फौ मे कीलयेति च ।
पादोर्द्ध्वं सर्व्वदा पातु बुद्धि पादतले मम ।१०।

विनाशय पदम्पातु पादांगुल्योर्न्नखानि मे ।
ह्रीं बीजं सर्व्वदा पातु बुद्धीन्द्रियवचांसि मे ।११।

सर्व्वांगम्प्रणव पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु ।
ब्राह्मी पूर्व्वदले पातु चाग्नेय्यां विष्णुवल्लभा ।१२।

माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु ।
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता ।१३।

वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु ।
ऊर्द्ध्वम्पातु महालक्ष्मी पाताले शारदाऽवतु ।१४।

इत्यष्टौ शक्तय पान्तु सायुधाश्च सवाहनाः ।
राजद्वारे महादुर्ग्गे पातु मांगणनायकः ।१५।

श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु ।
द्विभुजा रक्तवसनाः सर्व्वाभरणभूषिताः ।१६।

योगिन्यः सर्व्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम ।

—: ० :—

५

श्री बगला उपनिषद

हमारा मानवाद्य ग्रन्थ वेद माने जाते हैं जिसमें ज्ञान विज्ञान का अद्‌भुत प्रस्तुतीकरण हुआ है। वेदों के अन्तिम भाग को वेदान्त कहते हैं। वेदान्त का अर्थ होता है वेदों का अन्त और यह अन्त सम्भव नहीं है क्योंकि वेद अजर हैं, अमर हैं। इन पूजनीय वेदों के ही अन्तर्गत उपनिषदों का प्रकाश हुआ है जिसके द्वारा मानव को आत्मोद्धार के साधन आदिक का ज्ञान प्राप्त होता है। वेद तो महत्वपूर्ण होते ही हैं परन्तु उपनिषदों के भीतर एक ऐसी विचित्रता पाई जाती है कि कहा जा सकता है 'समुद्र समाया बूंद में'। 'बूंद समायी समुद्र में' ऐसा नहीं क्योंकि वेद रूपी समुद्र में उपनिषद बूंद के समान ही है परन्तु उपनिषदों को यदि गम्भीरता से देखा जाये तो वेद का महत्वपूर्ण अंश या सन्देश उपनिषदों के द्वारा व्यक्त होता है, इसी कारण मैं 'बूंद समायी समुद्र में' न कह कर 'समुद्र समाया बूंद में' कहता हूँ। हमारे आदरणीय गुरुजनों के सन्देशानुसार वेद यदि पुरुष माने जायें तो उपनिषद उन पुरुषों का सिर स्वीकारा जायेगा। इस प्रकार की महत्वपूर्ण विषय वस्तु का त्याग करना सम्भवतः मानव देह से आत्मा का ही त्याग करना होगा। कोई भी पूजा पाठ की जाये उसमें उपनिषद का पाठ आवश्यक होता है क्योंकि उपनिषद पूजा पाठ का प्राण होता है। आत्मा होता है। अतः साधकों को तीनों संध्याओं में उपनिषद का

पाठ अवश्य करना चाहिये। यह वेदोक्त समर्थन है कि जो साधक इस पवित्र वाणी का श्रवण, मनन या जप करता है उसके शत्रु का उच्चाटन निश्चय ही होता है। कालाग्नि रुद्र का कहना है कि यह एक ऐसी तामसी व राजसी शक्ति है जो कल्पों तक शत्रु का उच्चाटन करती है।

अथ श्री बगला उपनिषद

ॐ अथारि-मोचिनीं पीतां प्रणमामि ॥
यां ब्रह्म-पत्नीं ब्रह्माणीं पीतां भास्वत् ॥
तनुमिवाराध्यमानो निपतति शिरः ॥
यद् द्वेष्टि कुलं पुरुषं परि-तापयति ॥
संनक्ष्यमानो निपतति ॥
यः पीतामनुस्मरति स सर्वज्ञतामेति ॥
अथ ह मणि-बन्धे पुरुष-चतुष्टय-ज्ञान ॥
वर्तिनीं शरणमहं प्रपद्ये ॥
यन्नितान्तमाविष्करोति विद्विषः ॥
सेयं पीतावयवैः पूज्यां ॥
यो यं कालात्मको बोधः संसारमनु ॥
मर्दयति शत्रुः स लुप्यते ॥
यच्चिन्तनीया तच्चिन्तयामि ॥
तच्चिन्तयामि तद् - भावयामि ॥
तारं मायां तदनु बगलामुखि ॥

सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं ॥
स्तम्भय जिह्वां कीलय ॥
कीलय बुद्धि नाशयेति पदं तारं ॥
मायां वन्हि - वल्लभान्तम् ॥
जपन्नरीन् प्रोच्चाटयति प्रोत्साद ॥
यति इत्यं वेदेष्वागमेषु प्रसिद्ध ॥
मूर्ति बगलां श्रद्धामि ॥

अथ फल श्रुतिः

यः श्रावयति सूनृतया गिरा तद्
द्वेष्ट्र् रुच्चाटनयैव कल्पेरन्।
एषा तामसी शक्तिरित्याह भगवान् कालाग्नि रुद्रः।

—:०:—

६

श्री पीताम्बरा उपनिषद

पूर्व वर्णित श्री बगला उपनिषद के प्रारम्भ में वर्णित पंक्तियों के अनुसार ही इसे उपनिषद भी मानें। पाठ करने में किसी एक उपनिषद का प्रयोग किया जा सकता है। यथार्थ में साधक को समस्त उपनिषद जानने ही चाहिये क्योंकि इसमें कही गई बातें शीर्षक से सम्बन्धित देवी या देवता की पूजा या सिद्धि में सहायक होती है। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि इसमें सम्बन्धित देव की सिद्धि का प्रयोग स्पष्ट कहा गया होता है। विचार यह है कि आपको दो अद्भुत पुस्तकें अलग से प्रदान करूँ जो कि क्रमशः 'देवी उपनिषद' एवं 'देव उपनिषद' के नाम से हों और उनमें आपको सम्बन्धित देवता की पूजन एवं सिद्धि प्रणाली का लाभ प्राप्त हो।

अथ श्री पीताम्बरा उपनिषद

ॐ सह नावतु, सह नौ भुनक्तु,
सह वीर्यं करवावहै,
तेजस्विनावधीतमस्तु,
मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ अथ हैनां ब्रह्म-रन्ध्रे सुभगां,
ब्रह्मास्त्र स्वरूपिणीमाप्नोति।
ब्रह्मास्त्रां महा विद्यां शाम्भवीं
सर्व स्तम्भ करीं सिद्धां चतुर्भुजां।
दक्षाभ्यां कराभ्यां मुद्‌गर-पाशौ
वामाभ्यां शत्रु जिह्वा.वज्रे दधानां।
पीत-वाससं पीतालंकार सम्पन्नां
दृढ़ पीनोन्नत पयोधर युग्माढ्यां।
तप्त कार्तस्वर कुण्डल द्वय-
विराजित मुखाम्भोजां।
ललाट पट्टोल्लसत् पीत-चंद्रार्धमनु
विभ्रतीमुद्यद् दिवाकरोद्यतां।
स्वर्ण सिंहासन मध्य कमल संस्थां
धिया संचिन्त्य, तदुपरि त्रिकोण।
षट्कोण वसुपत्र वृत्तान्तः
षोडश दल कमलोपरि।
भू बिम्ब त्रयमनुसन्धाय
तत्राद्य-योन्यन्तरे देवीमाहूय ध्यायेत्।
योनिं जगद्-योनिं स-मायमुच्चार्य।
शिवान्ते भूमाग्र बिन्दुमिन्दुखण्डमग्नि बीजं।

ततो वर्णांक-गुणार्थ त्रि-युतं

स्थिरामुखि इति सम्बोध्य ।

सर्व दुष्टानामिदं चाभाष्य ।

वाचमिति मुखमिति पदमिति स्तम्भयेति चोच्चार्य ।

जिह्वां वैशारवीं कीलयेति

बुद्धि विनाशयेति प्रोच्चार्य ।

भू.मायां वेदाद्यं ततोयज्ञ भू गुहायां योजयेत् ।

स महा स्तम्भेश्वरः सर्वेश्वरः,
स सेना स्तम्भं करोति,
किं बहुना विवस्वद धृति स्तम्भ कर्ता,
सर्व वात स्तम्भ कर्तेति ।
किं दिवा कर्षयति स,
सर्व विद्येश्वरः सर्व मन्त्रेश्वरी,
भूत्वा पूजाया आवर्तनं,
त्रैलोक्य स्तम्भिन्याः कुर्यात् ।

अंगमाद्यं द्वारतो गणेशं बटुकं योगिनीं

क्षेत्राधीशं च पूर्वादिकमभ्यर्च्य ।

गुरु पंक्तिमीशानुरान्तमन्तः प्राच्यादौ

क्रमानुगता मंगला ।

स्तम्भिनी, जृम्भिणी, मोहिनी, वश्या,

अचला, चला, दुर्धरा ।

अकल्मषा, धीरा, कलना, काल-कर्षिणी, भ्रामिका ।

मन्द गमना, भोगदा, योगिका ।

ह्यष्ट-दलानुगताः पूज्याः—ब्राह्मी, माहेश्वरी ।

कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, चामुण्डा ।

महालक्ष्मीश्च, षड्-योनि-गर्भान्ता, डाकिनी, राकिनी ।

लाकिनी, काकिनी, शाकिनी, हाकिनी

वेदाद्य स्थिर मायायाः समभ्यर्च्य ।

शक्राग्नि यम निर्ऋति - वरुण - वायव्य धनदेशान ।

प्रजापति-नागेशाः परिवाराभिमताः

स्थिरादि-वेदाद्याः संवाहनाः ।

सदस्त्रका बाह्यतोभ्यर्च्य ।

तां योनिं रति - प्रीति - मनोभवाः एताः ।

सर्वा समाः पीतांशुका ध्येयाः ।

तदन्त-मूलायां दलादि-षोडशानुगताः पूज्याः

नीराजनैः सहैश्वर्य युक्तो भवति ।

य एनां ध्यायति, स वाग्मो भवति ।

सोऽमृतमश्नुते, सर्व-सिद्धि-कर्ता भवति,
सृष्टि स्थिति संहार कर्ता भवति ।
स सर्वेश्वरो भवति, स तु ऋद्धीश्वरो भवति ।
स शक्तिः, स वैष्णवः, स गणप-,
स शैवः, स जीवन्मुक्तो भवति ।
स संन्यासी भवति, न तु मुण्डित - मुण्डः ।
षट्-त्रिंशदस्त्रेश्वरो भवेत्, सौभाग्यार्चने-
नेति प्रोतं वेद ।
ॐ शिवम् सह नाववतु इति मन्त्रेण शान्तिः ।

—: ० :—

७

श्री बगला हृदय स्तोत्रम्

किसी भी देवी या देवता से सम्बन्धित हृदय स्तोत्र पाठ देवता का हृदय ही हुआ करता है । प्रस्तुत श्री बगला हृदय स्तोत्र एक दुर्लभ व प्राचीन ग्रन्थ श्री सिद्धेश्वर तन्त्र के उत्तर खण्ड से लिया गया है जहाँ पर भगवती बगलामुखी के विभिन्न प्रयोग व्यक्त किये गये हैं ।

इसे तीनों संध्याओं में जपना चाहिए । एक विशेष प्रयोग है कि आश्विन मास की महाष्टमी के दिन बगला देवी की प्रीति प्राप्त करने के निमित्त पीले वस्त्र पहनकर पीला पुष्पादि लेकर किसी देवालय में इस हृदय का अनुष्ठान्न करने से माता साधक की इच्छा पूर्ण करती है । इसके प्रयोगशर्त्ता के शत्रु हानि को प्राप्त होते हैं ।

अथ श्री बगला हृदयम्

वन्देऽहम्बगलान्देवीम्पीतभूषणभूषिताम् ।
तेजोरूपमयीन्देवीम्पीततेजस्स्वरूपिणीम् ।१।
गदाभ्रमणाभिन्नाभ्राम्भ्रकुटीभीषणाननाम् ।
भीषयन्तीम्भीमशत्रून्भजे भक्तस्य भव्यदाम् ।२।
पूर्णचन्द्रसमानास्याम्पीतगन्धानुलेपनाम् ।
पीताम्बरपरीधानाम्पवित्रामाश्रयाम्यहम् ।३।

पालयन्तीमनुपलम्प्रसमीक्ष्यावनीतले ।
पीताचाररताम्भक्तांस्ताम्भवानीम्भजाम्यहम् ।४।

पीतपद्मपदद्वन्द्वाञ्चम्पकारण्यरोपिणीम् ।
पीतवतंसाम्परमां व्वन्दे पद्मजवन्दिताम् ।५।

लसच्चारुसिञ्जत्सुमञ्जीरपादाञ्च-
लत्स्वर्णकर्ण्णावतंसाञ्चितास्याम् ।
वलत्पीतचन्द्राननाञ्चन्द्रवन्द्याम्भजे
पद्मजादीड्यसत्पादपद्माम् ।६।

सुपीताभया मालया पूतमन्त्रम्परन्ते
जपन्तो जयं संल्लभन्ते ।
रणे रागरोषाप्लुतानां रिपूणां व्विवादे
बलाद्वैरकृद्धातमातः ।७।

भरत्पीतभास्वत्प्रभाहस्कराभांगदाग-
ञ्जितामित्रगर्व्वां गरिष्ठाम् ।
गरीयो गुणागारगात्रांगुणाढ्यांगणेशा-
दिगम्यां श्रये निर्ग्गुणाढ्याम् ।८।

जना ये जपन्त्युग्रबीजञ्जगत्सु परम्प्रत्यहन्ते
स्मरन्तः स्वरूपम् ।
भवेद्वादिनां व्वाङ्मुखस्तम्भ आद्ये जयो
जायते जल्पतामाशु तेषाम् ।९।

तव ध्याननिष्ठा प्रतिष्ठात्मप्रज्ञाव-
ताम्पादपद्मार्च्चने प्रेमयुक्ताः ।
प्रसन्ना नृपा : प्राकृता : पण्डिता वा
पुराणादिगा दासतुल्या भवन्ति ।१०।

नमामस्ते मात : कनककमनीयांघ्रिजलजं
व्वलद्विद्युद्वर्ण्णांघनतिमिरविध्वंसकरणम् ।
भवाब्धौ मग्नात्मोत्तरणकरणं सर्व्वशरण-
म्प्रपन्नानाम्मातञ्जगति बगले दुःखदमनम् ।११।

ज्वलज्ज्योत्स्नारत्नाकरमणिविषक्तांकच-
भवनं स्मरामस्ते धाम स्मर-हर-हरीन्द्रेन्दुप्रमुखैः ।
अहोरात्रम्प्रात : प्रणयनवनीयं सुविशदं
परम्पीताकारम्परिचितमणिद्वीपवसनम् ।१२।

वदामस्ते मातश्श्रुतिसुखकरन्नाम ललितं
ल्लसन्मात्रावर्ण्णाञ्जगति बगलेति प्रचरितम् ।
चलन्तस्तिष्ठन्तो वयमुपविशन्तोपि शयने न
भेमो यच्छ्रेयो दिवि दुरबलभ्यन्दिविषदाम् ।१३।

पदार्च्चायाम्प्रीति : प्रतिदिनमपूर्व्वा प्रभवतु
यथा ते प्रासन्न्यम्प्रतिपलमपेक्ष्यम्प्रणमताम् ।
अनल्पन्तन्मातर्म्भवति भूतभक्त्या भवतु नो
दिशातस्सद्भक्तिम्भुवि भगवताम्भूरि भवदाम् ।१४।

मम सकलरिपूणां व्वाङ्मुखे स्तम्भयाशु
भगवति रिपुजिह्वांकीलय प्रस्थतुल्याम् ।
व्यवसितखलबुद्धिन्नाशयाशु प्रगल्भां मम
कुरु बहु कार्य्यं सत्कृपेऽम्ब प्रसीद ।१५।
व्रजतु मम रिपूणां सद्मनि प्रेतसंस्था
करधृतगदया तान्घातयित्वाशु रोषात् ।
सधनवसनधान्यसद्म तेषाम्प्रदह्य पुनरपि
बगला स्वस्थानमायातु शीघ्रम् ।१६।
करधृतरिपुजिह्वापीडनव्यग्रहस्ताम्पुनरपि
गदया तांस्ताडयन्तीं सुतन्त्राम् ।
प्रणतसुरगणानाम्पालिकाम्पीतवस्त्रां
बहुबलबगलान्ताम्पीतवस्त्रान्नमामः ।१७।
हृदयवचनकायै कुर्वताम्भक्तिपुञ्जम्प्रकटित-
करुणार्द्राम्प्रीणती जल्पतीति ।
धनमथ बहुधान्यम्पुत्रपौत्रादिवृद्धिः सकल-
मपि किमेभ्यो देयमेवन्त्ववश्यम् ।१८।
तव चरणसरोजं सर्व्वदा सेव्यमानन्द्रुहिण-
हरि-हराद्यैर्द्देववृन्दैश्शरण्यम् ।
मृदुमपि शरणन्ते शर्म्मदं सूरिसेव्यं
व्ययमिह करवामो मातरेतद्विधेयम् ।१९।

—:०:—

८

श्री बगलाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

प्रस्तुत श्री बगलाष्टोत्तर शतनामा यथार्थ में देवी के एक सौ आठ नामों का परम पुनीत पवित्र पाठ है जो कि एक बार पढ़ने से एक आवृत्ति को पूर्ण करता है। इसी प्रकार एक माला पर सात बार पढ़ने से देवी का प्रत्येक नाम सात बार जपा जाता है। यदि हो सके तो किसी कालरत्रि के अवसर पर इसे क्रमशः एक सौ आठ बार जप लेना चाहिए। इस प्रकार देवी के एक सौ आठ नामों का प्रतिनाम एक सौ आठ बार जप हो जाता है। यह पाठ 'विष्णुयामल' से लिया गया है जहाँ पर कि नारद विष्णु सम्वाद से यह व्यक्त हुआ है।

अथ श्री बगलाष्टोत्तर शतनामा

ॐ अस्य श्रीपीताम्बर्य्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य सदाशिव ऋषिरनुष्टुप्छन्दश्श्रीपीताम्बरी देवता श्रीपीताम्बरीप्रीतये जपे विनियोगः ॥

अथ श्री विनियोग मन्त्र

ॐ बगला विष्णुवनिता विष्णुशंकरभामिनी ।
बहुला वेदमाता च महाविष्णुप्रसूरपि ।१।

महामत्स्या महाकूर्म्मा महावाराहरूपिणी ।
नरसिंहप्रिया रम्या वामना बटुरूपिणी ।२।

जामदग्न्यस्वरूपा च रामा रामप्रपूजिता ।
कृष्णा कपर्द्दिनी कृत्या कलहा कलविकारिणी ।३।

बुद्धिरूपा बुद्धभार्य्या बौद्धपाखण्ड-खण्डिनी ।
कल्किरूपा कलिहरा कलिदुर्ग्गतिनाशिनी ।४।

कोटिसूर्य्यप्रतीकाशा कोटिकन्दर्प्पमोहिनी ।
केवला कठिना काली कला कैवल्यदायिनी ।५।

केशवी केशवाराध्या किशोरी केशवस्तुता ।
रुद्ररूपा रुद्रमूर्त्ती रुद्राणी रुद्रदेवता ।६।

नक्षत्ररूपा नक्षत्रा नक्षत्रेशप्रपूजिता ।
नक्षत्रेशप्रिया नित्या नक्षत्रपतिवन्दिता ।७।

नागिनी नागजननी नागराजप्रवन्दिता ।
नागेश्वरी नागकन्या नागरी च नगात्मजा ।८।

नगाधिराजतनया नगराजप्रपूजिता ।
नवीना नीरदा पीता श्यामा सौन्दर्य्यकारिणी ।९।

रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्यदायिनी ।
सुन्दरी सौभगा सौम्या स्वर्ण्णभा स्वर्गतिप्रदा ।१०।

रिपुत्रासकरी रेखाशत्रुसंहारकारिणी ।
भामिनी च तथा माया स्तम्भिनी मोहिनी शुभा ।११।

रागद्वेषकरी रात्री रौरवध्वंसकारिणी ।
यक्षिणी सिद्धनिवहा सिद्धेशा सिद्धिरूपिणी ।१२।

लंकापतिध्वंसकरी लंकेशरिपुवन्दिता ।
लंकानाथकुलहरा महारावणहारिणी ।१३।

देवदानवसिद्धौघ - पूजिता परमेश्वरी ।
पराणुरूपा परमा परतन्त्रविनाशिनी ।१४।

वरदा वरदाराध्या वरदानपरायणा ।
वरदेशप्रिया वीरा वीर भूषणभूषिता ।१५।

वसुदा बहुधा वाणी ब्रह्मरूपा वरानना ।
वलदा पीतवसना पीतवसना पीतभूषण-भूषिता ।१६।

पीतपुष्पप्रिया पीतहारा पीतस्वरूपिणी ।

—:०:—

९

श्रीबगला कीलक-स्तोत्रम्

ह्लीं ह्लीं ह्लींकार वाणे, रिपु दल
दलने, घोर गम्भीर नादे ।
ह्रीं ह्रीं ह्रींकार रूपे, मुनि-गण
नमिते, सिद्धिदे, शुभ्र देहे ॥

भ्रों भ्रों भ्रोंकार नादे, निखिल
रिपु घटा त्रोटने, लग्न-चित्ते ।
मातर्मातर्नमस्ते सकल भय हरे !
नौमि पीताम्बरे ! त्वाम् ॥

क्रौं क्रौं क्रौमीश रूपे, अरि कुल
हनने, देह-कीले, कपाले ।
हस्रौं हस्रौं स्वरूपे, सम रस
निरते, दिव्य रूपे, स्वरूपे ॥

ज्रौं ज्रौं ज्रौं जात रूपे, जहि
जहि दुरितं जम्भ रूपे, प्रभावे ।

कालि, कंकाल रूपे, अरि जन
दलने देहि सिद्धि परां मे ॥

हस्रां हस्रीं च हस्रैं त्रिभुवन
विदिते, चण्ड-मार्तण्ड-चण्डे ।
ऐं क्लीं सौं कौल विधै, सतत
शम परे ! नौमि पीत स्वरूपे ॥

द्रौं द्रौं द्रौं दुष्ट चित्ताऽऽदलन
परिणते, बाहु युग्म त्वदीये ।
ब्रह्मास्त्रे, ब्रह्म रूपे, रिपु दल
हनने, ख्यात दिव्य प्रभावे ॥

ठं ठं ठंकार वेशे, ज्वलन प्रति-
कृति ज्वाला माला स्वरूपे ।
धां धां धां धारयन्तीं रिपु कुल
रसनां मुद्‌गरं वज्र-पाशम् ॥

डां डां डां डाकिन्याद्यैर्डिमक-
डिमडिमं डमरुं वादयन्तीम् ।
मातर्मातर्नमस्ते प्रबल-खल-जनं पीडयन्ती भजामि ॥

वाणीं सिद्धि करे ! सभा विशद मध्ये वेद शास्त्रार्थदे ।
मातः, श्रीबगले, परात्पर-तरे ! वादे विवादे जयम् ॥

देहि त्वं शरणागतोऽस्मि विमले, देवि प्रचण्डोद्धृते ।
मांगल्यं वसुधासु देहि सततं सर्व-स्वरूपे, शिवे ॥

निखिल-मुनि-निषेव्यं स्तम्भनं शर्व शत्रोः ।
शम परमिह नित्यं ज्ञनिनां हार्द-रूपम् ॥

अहरहर-निशायां यः पठेद् देवि ! कीलम् ।
स भवति परमेशि ! वादिनामग्र-गण्यः ॥

—: ० :—

१०

श्री पीताम्बरी सहस्रनाम स्तोत्रम्

भगवान कण-कण में व्याप्त है। जो कण-कण में व्याप्त हो उसकी पूजार्चना भला किस प्रकार की जा सकती है। यह तो हुआ एक विचारणीय प्रश्न जो कि सम्भवतः आपको पसन्द न आये पर एक बात है जो कि नितान्त सत्य है कि 'कौन जाने किस भेष में मिल जायें भगवान। महामाया तो एक ही है पर लीला भेद से वह विभिन्न चरित्र प्रस्तुत किया करती है। जिस स्वरूप से वह लीला करती है उसका एक नाम व प्रतीक हुआ करता है। महामाया के अनन्त स्वरूप व भेद हैं जिनको कि जान पाना भी सरल नहीं है फिर भी साधक लोग जगदम्बा को किसी न किसी नाम से प्रसन्न करने में लगे रहते हैं। क्यों न हो ? जगदम्बा सबकी माता जो है इसी क्रम या प्रयास की एक कड़ी होती है सहस्रनाम अर्थात हजार नाम। प्रस्तुत श्री पीताम्बरी सहस्रनाम स्तोत्र प्राचीन व दुर्लभ ग्रन्थ श्री उत्कट शम्बर नागेन्द्र प्रयाण तन्त्र से प्रस्तुत की गई है।

विनियोग मन्त्रः

ओमस्य श्रीपीताम्बरीसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान्सदाशिव ऋषिनुष्टुप्छन्दश्श्रीजगद्वश्यकरी पीताम्बरी देवता सर्व्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनि-योगः ॥

अथ ध्यानम्

पीताम्बरपरीधानां पीनोन्नतपयोधराम् ।
जटामुकुटशोभाढचाम्पीतभूमिसुखासनाम् ।
शत्रोर्जिह्वां मुद्गरश्च विभ्रतीम्परमांकलाम् ॥

स्तोत्र

ॐ ब्रह्मास्त्रम्ब्रह्मविद्या च ब्रह्ममाता सनातनी ।
ब्रह्मेशी ब्रह्मकैवल्यबगला ब्रह्मचारिणी ॥
नित्यानन्दा नित्यसिद्धा नित्यरूपा निरामया ।
सन्धारिणी महामाया कटाक्षक्षेमकारिणी ॥
कमला विमला नीलारत्नकान्तिगुणाश्रिता ।
कामप्रिया कामरता कामकामस्वरूपिणी ॥
मंगला विजया जाया सर्व्वमंगलकारिणी ।
कामिनी कामिनीकाम्या कामुका कामचारिणी ॥
कामप्रिया कामरता कामाकामस्वरूपिणी ।
कामाख्या कामबीजस्था कामपीठनिवासिनी ॥
कामदा कामहा काली कपाली च करालिका ।
कंसारि : कमला कामा कैलासेश्वरवल्लभा ॥
कात्यायनी केशवा च करुणा कामकेलिभुक् ।
क्रियाकीर्ति : कृत्तिका च काशिका मथुरा शिवा ॥

कालाक्षी कालिका काली धवलाननसुन्दरी ।
खेचरी च खमूर्त्तिश्च क्षुद्रा क्षुद्रक्षुधावरा ॥
खंगहस्ता खंगरता खंगिनी खर्प्परप्रिया ।
गंगा गौरी गामिनी च गीता गोत्रविर्वाद्धनी ॥
गोधरा गोकरा गोधा गन्धर्व्वपुरवासिनी ।
गन्धर्व्वा गन्धर्व्वकला गोपनी गरुडासना ॥
गोविन्दभावा गोविन्दा गान्धारी गन्धमादिनी ।
गौरांगी गोपिकामूर्त्तिर्गोपीगोष्ठनिवासिनी ॥
गन्धा गजेन्द्रगामान्या गदाधरप्रिया ग्रहा ।
घोरघोरा घोररूपा घनश्रोणी घनप्रभा ॥
दैत्येन्द्रप्रबला घण्टावादिनी घोरनिस्स्वना ।
डाकिन्युमा उपेन्द्रा च उर्व्वशी उरगासना ॥
उत्तमा उन्नता उन्ना उत्तमस्थानवासिनी ।
चामुण्डा मुण्डिता चण्डी चण्डदर्प्पहरेति च ॥
उग्रचण्डा चण्डचण्डा चण्डदैत्यविनाशिनी ।
चण्डरूपा प्रचण्डा च चण्डाचण्डशरीरिणी ॥
चतुर्भुजा प्रचण्डा च चराचरनिवासिनी ।
क्षत्रप्रायश्शिरोवाहा छला छलतरा छली ॥

क्षत्ररूपा क्षत्रधरा क्षत्रियक्षयकारिणी ।
जया च जयदुर्ग्गा च जयन्ती जयदा परा ॥

जायिनी जयिनी ज्योत्स्ना जटाधरप्रिया जिता ।
जितेन्द्रिया जितक्रोधा जयमाना जनेश्वरी ॥

जितमृत्युर्जरातीता जाह्नवी जनकात्मजा ।
झंकारा झञ्झरी झण्टा झकारी झकशोभिनी ॥

झखा झमेशा झंकारी योनिकल्याणदायिनी ।
झञ्झरा झमुरी झारा झराझरतरा परा ॥

झञ्झा झमेता झंकारी झणाकल्याणदायिनी ।
ईमना मानसी चिन्त्या ईमुना शंकरप्रिया ॥

टंकारी टिटिका टीका टंकिनी च टवर्गगा ।
टापा टोपा टटपतिष्टमनी टमनप्रिया ॥

ठकारधारिणी ठीका ठंकरी ठिकरप्रिया ।
ठेकठासा ठकरती ठामिनी ठमनप्रिया ॥

डारहा डाकिनी डारा डामरा डमरप्रिया ।
डखिनी डडयुक्ता च डमरूकरवल्लभा ॥

ढक्का ढक्की ढक्कनादा ढोलशब्दप्रबोधिनी ।
ढामिनी ढामनप्रीता ढगतन्त्रप्रकाशिनी ॥

अनेकरूपिणी अम्बा अणिमासिद्धिदायिनी ।
अमन्त्रिणी अणुकरी अणुमद्भानुसंस्थिता ॥

तारा तन्त्रावती तन्त्रत्त्वरूपा तपस्विनी ।
तरंगिणी तत्त्वपरा तन्त्रिका तन्त्रविग्रहा ॥

तपोरूपा तत्त्वदात्री तपःप्रीतिप्रधर्षिणी ।
तन्त्रा यन्त्रार्च्चनपरा तलातलनिवासिनी ॥

तल्पदा त्वल्पदा काम्या स्थिरा स्थिरतरा स्थितिः ।
स्थाणुप्रिया स्थपरा स्थिता स्थानप्रदायिनी ॥

दिगम्बरा दयारूपा दावाग्नि दमनीदमा ।
दुर्ग्गा दुर्ग्गापरा देवी दुष्टदैत्य विनाशिनी ॥

दमनप्रमदा दैत्यदयादानपरायणा ।
दुर्ग्गार्तिनाशिनी दान्ता दम्भिनी दम्भवर्ज्जिता ॥

दिगम्बरप्रिया दम्भा दैत्यदम्भविदारिणी ।
दमना दशनसौन्दर्य्या दानवेंद्रविनाशिनी ॥

दया धरा च दमनी दर्भपत्रविलासिनी ।
धरिणी धारिणी धात्री धराधरधरप्रिया ॥

धराधरसुता देवी सुधर्म्मा धर्म्मचारिणी ।
धर्म्मज्ञा धवला धूला धनदा धनवर्द्धिनी ॥

धीरा धीरा धीरतरा धीरसिद्धिप्रदायिनी ।
धन्वन्तरिधराधीरा ध्येया ध्यानस्वरूपिणी ॥

नारायणी नारसिंही नित्यानन्दनरोत्तमा ।
नक्ता नक्तावती नित्या नीलजी महा-
लक्ष्मीर्म्महत्पदप्रदायिनी ॥

यमरूपा च यमुना जयन्ती च जयप्रदा ।
याम्या यमवती युद्धा यदो : कुलविर्वादिनी ॥

रमा रामा रामपत्नी रत्नमाला रतिप्रिया ।
रत्नसिंहासनस्था च रत्नाभरणमण्डिता ॥

रमणी रमणीया च रत्यारसपरायणा ।
रतानन्दा रतवती रघूणांकुलवर्द्धिनी ॥

रमणारिपरिभ्राज्या रैधाराधिकरत्नजा ।
रावी रसस्वरूपा च रात्रिराजसुखावहा ॥

ऋतुजा ऋतुदा ऋद्धा ऋतुरूपा ऋतुप्रिया ।
रक्तप्रिया रक्तवती रंगिणी रक्तदन्तिका ॥

लक्ष्मीर्ल्लज्जा लतिका च लीलालग्नानिताक्षिणी ।
लीला लीलावती लोमाहर्ष्षाह्लादनपट्टिका ॥

ब्रह्मस्थिता ब्रह्मरूपा ब्रह्मणा वेदवन्दिता ।
ब्रह्मोद्भवा ब्रह्मकला ब्रह्माणी ब्रह्मबोधिनी ॥

वेदांगना वेदरूपा वनिता विनता वसा ।
बाला च युवती वृद्धा ब्रह्मकर्म्मपरायणा ॥

विन्ध्यस्था विन्ध्यवासी च बिन्दुयुग्बिन्दुभूषणा ।
विद्यावती वेदधारी व्यापिका बर्हिणी कला ॥

वामाचारप्रिया वह्निर्व्वामाचारपरायणा ।
वामाचाररता देवी वामदेवप्रियोत्तमा ॥

बुद्धेन्द्रिया विबुद्धा च बुद्धाचरणमालिनी ।
बन्धमोचनकर्त्री च वारुणा वरुणालया ॥

शिवा शिवप्रिया शुद्धा शुद्धांगी शुक्लवर्ण्णिका ।
शुक्लपुष्पप्रिया शुक्ला शिवधर्म्मपरायणा ॥

शुक्लस्था शुक्लिनी शुक्लरूपशुक्लपशुप्रिया ।
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रा शुक्ररूपा च शुक्रिका ॥

षण्मुखी च षडंगा च षट्चक्रविनिवासिनी ।
षड्ग्रन्थियुक्ता षोढा च षण्माता च षडात्मिका ॥

षडंगयुवती देवी षडंगप्रकृतिर्व्वशी ।
षडानना षड्रसा च षष्ठी षष्ठेश्वरीप्रिया ॥

षंगवादा षोडशी च षोढान्यासस्वरूपिणी ।
षट्चक्रभेदनकरी षट्चक्रस्थस्वरूपिणी ॥

षोडशस्वरूपा च षण्मुखी षड्रदान्विता ।
सनकादिस्वरूपा च शिवधर्म्मपरायणा ॥

सिद्धा सप्तस्वरी शुद्धा सुरमाता स्वरोत्तमा ।
सिद्धविद्या सिद्धमाता सिद्धा सिद्धस्वरूपिणी ॥

हरा हरिप्रिया हारा हरिणी हारयुक् तथा ।
हरिरूपा हरिधारा हरिणाक्षी हरिप्रिया ॥

हेतुप्रिया हेतुरता हिताहितस्वरूपिणी ।
क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्रघण्टाविभूषणा ॥

क्षयंकरी क्षितीशा च क्षीणमध्य सुशोभना ।
अजानन्ता अपर्णा च अहल्याशेषशायिनी ॥

स्वान्तर्गता च साधूनामन्तरानन्तरूपिणी ।
अरूपा अमला चार्द्धा अनन्तगुणशालिनी ॥

स्वविद्या विद्यकाविद्या विद्या चार्व्विन्दलोचना ।
अपराजिता जातवेदा अजपा अमरावती ॥

अल्पा स्वल्पा अनल्पाद्या अणिमासिद्धिदायिनी ।
अष्टसिद्धिप्रदा देवी रूपलक्षणसंयुता ॥

अरविन्दमुखा देवी भोगसौख्यप्रदायिनी ।
आदिविद्या आदिभूता आदिसिद्धिप्रदायिनी ॥

सीत्काररूपिणी देवी सर्व्वासनविभूषिता ।
इन्द्रप्रिया च इन्द्राणी इन्द्रप्रस्थनिवासिनी ॥

इन्द्राक्षी इन्द्रवज्रा च इन्द्रमद्योक्षणी तथा ।
ईला कामनिवासा च ईश्वरीश्वरवल्लभा ॥

जननी चेश्वरी दीना भेदाचेश्वरकर्म्मकृत् ।
उमा कात्यायनी ऊर्द्ध्वा मीना चोत्तरवासिनी ॥

उमापतिप्रिया देवी शिवा चोंकाररूपिणी ।
उरगेन्द्रशिरोरत्ना उरगोरगवल्लभा ॥

उद्यानवासिनी माला प्रशस्तमणिभूषणा ।
उद्ध्र्वदन्तोत्तमांगी च उत्तमा चोर्ध्वकेशिनी ॥

उमासिद्धिप्रदा या च उरगासनसंस्थिता ।
ऋषिपुत्री ऋषिच्छन्दा ऋषिसिद्धिप्रदायिनी ॥

उत्सवोत्सवसीमन्ता कामिका च गुणान्विता ।
एला एकारविद्या च एणीविद्याधरा तथा ॥

ॐकारवलयोपेता ॐकारपरमा कला ।
ॐवदवदवाणी व ॐकाराक्षरमण्डिता ॥

ऐन्द्री कुलिशहस्ता च ॐलोकपरवासिनी ।
ॐकारमध्यबीजा च ॐनमोरूपधारिणी ॥

परब्रह्मस्वरूपा च अंशुकांशुकवल्लभा ।
ॐकारा अःफड्मन्त्रा च अक्षाक्षरविभूषिता ॥

अमन्त्रा मन्त्ररूपा च पदशोभासमन्विता ।
प्रणवोंकाररूपा च प्रणवोच्चारभाक् पुनः ॥

ह्रींकाररूपा ह्रींकारी वाग्बीजाक्षरभूषणा ।
हृल्लेखा सिद्धियोगा च हृत्पद्मासनसंस्थिता ॥

बीजाख्या नेत्रहृदया ह्रीम्बीजा भुवनेश्वरी ।
क्लींकामराजा क्लित्रा च चतुर्व्वर्गफलप्रदा ॥

क्लींक्लींक्लींरूपिका देवी क्रींक्रींक्रींनामधारिणी ।
कमलाशक्तिबीजा च पाशांकुशविभूषिता ॥

श्रीं श्रींकारा महाविद्या श्रद्धा श्रद्धावती तथा ।
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रींपरा च क्लींकारीं परमा कला ॥

ह्रीं क्लीं श्रींकारस्वरूपा सर्व्वकर्म्मफलप्रदा ।
सर्व्वाढ्या सर्व्वदेवीं च सर्व्वसिद्धिप्रदा तथा ॥

सर्वज्ञा सर्व्वशक्तिश्च वाग्विभूतिप्रदायिनी ।
सर्व्वमोक्षप्रदा देवी सर्व्वभोगप्रदायिनी ॥

गुणेन्द्रवल्लभा वामा सर्व्वशक्तिप्रदायिनी ।
सर्व्वानन्दमयी चैव सर्व्वसिद्धिप्रदायिनी ॥

सर्व्वचक्रेश्वरी देवी सर्वसिद्धेश्वरी तथा ।
सर्व्वप्रियंकरी चैव सर्व्वसौख्यप्रदायिनी ॥

सर्व्वानन्दप्रदा देवी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ।
मनोवाञ्छितदात्री च मनोवृद्धिसमन्विता ॥

अकारादि-क्षकारान्ता दुर्ग्गा दुर्ग्गार्त्तिनाशिनी ।
पद्मनेत्रा सुनेत्रा च स्वधास्वाहावषट्करी ॥

स्ववर्ग्गा देववर्ग्गा च तवर्ग्गा च समन्विता ।
अन्तस्स्था वेश्मरूपा च नवदुर्ग्गा नरोत्तमा ॥

तत्त्वसिद्धिप्रदा नीला तथा नीलपताकिनी ।
नित्यरूपा निशाकारी स्तम्भिनी मोहिनीति च ॥

वशंकरी तथोच्चाटी उन्मादी कर्षिणीति च ।
मातंगी मधुमत्ता च अणिमा लघिमा तथा ॥

सिद्धा मोक्षप्रदा नित्या नित्यानन्दप्रदायिनी ।
रक्तांगी रक्तनेत्रा च रक्तचन्दनभूषिता ॥

स्वल्पसिद्धिस्सुकल्पा च दिव्यचारणशुक्रभा ।
सङ्क्रान्तिस्सर्व्वविद्या च स स्यवासरभूषिता ॥

प्रथमा च द्वितीया च तृतीया च चतुर्त्थिका ।
पञ्चमी चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा ॥

अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा ।
द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्द्दश्पथ पूर्ण्णिमा ॥

अमाबस्या तथा पूर्व्वा उत्तरा परिपूर्ण्णिमो ।
खंगिनी चक्रिणी घोरा गदिनी शूलिनी तथा ॥

भुशुण्डी चापिनी बाणा सर्व्वायुधविभूषणा ।
कुलेश्वरी कुलवती कुलाचारपरायणा ॥

कुलकर्म्मसुरक्ता च कुलाचारप्रवर्द्धिनी ।
कीर्तिश्श्रीश्च रमा रामा धर्म्मायै सततन्नमः ॥

क्षमा धृतिः स्मृतिर्म्मेधा कल्पवृक्षनिवासिनी ।
उग्रा उग्रप्रभा गौरी वेदविद्याविबोधिनी ॥

साध्या सिद्धा सुसिद्धा च विप्ररूपा तथैव च ।
काली कराली काल्या च कलादैत्यविनाशिनी ॥

कौलिनी कालिकी चैव क-च-ट-त पर्वर्ण्णिका ।
जयिनी जययुक्ता च जयदा जृम्भिनी तथा ॥

स्राविणी द्राविणी देवी भरुण्डा विन्ध्यवासिनी ।
ज्योतिर्भूता च जयदा ज्वालामालासमाकुला ॥

भिन्ना भिन्नप्रकाशा च विभिन्ना भिन्नरूपिणी ।
अश्विनी भरणी चैव नक्षत्रसम्भवानिला ॥

काश्यपी विनता ख्याता दितिजादितिरेव च ।
कीर्ति : कामप्रिया देवी कीर्त्या कीर्तिविवर्द्धिनी ॥

सद्योमांससमालब्धा सद्यश्छिन्नासिशंकरा ।
दक्षिणा चोत्तरा पूर्व्वा पश्चिमा दिक् तथैव च ॥

अग्निनैर्ऋतिवायव्या ईशान्यादिक् तथा स्मृता ।
ऊर्ध्वांगधोगता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका ॥

चतुर्व्वर्ग्गा चतुर्व्वर्ण्णा चतुर्म्मात्रात्मिकाक्षरा ।
चतुर्म्मुखी चतुर्व्वेदा चतुर्व्विद्या चतुर्म्मुखा ॥

चतुर्ग्गणा चतुर्म्माता चर्व्वर्ग्गफलप्रदा ।
धात्री विधात्री मिथुना नारी नायकवासिनी ॥

सुरामुदा मुदवती मोदिनी मेनकात्मजा ।
ऊर्ध्वकाली सिद्धिकाली दक्षिणाकालिका शिवा ॥

नील्या सरस्वती सात्वम्बगला छिन्नमस्तका ।
सर्व्वेश्वरी सिद्धविद्या परा परमदेवता ॥

हिंगुला हिंगुलांगी च हिंगुलाधरवासिनी ।
हिंगुलोत्तमवर्ण्णाभा हिंगुलाभरणा च सा ॥

जाग्रती च जगन्माता जगदीश्वरवल्लभा ।
जनार्द्दनप्रिया देवी जययुक्ता जयप्रदा ॥

जगदानन्दकारी च जगदाह्लादकारिणी ।
ज्ञानदानकरी यज्ञा जानकी जनकप्रिया ॥

जयन्ती जयदा नित्या ज्वलदग्निसमप्रभा ।
विद्याधरा च बिम्बोष्ठी कैलासाचलवासिनी ॥

विभवा वडवाग्निश्च अग्निहोत्रफलप्रदा ।
मन्त्ररूपा परा देवी तथैव गुरुरूपिणी ॥

गया गंगा गोमती च प्रभासा पुष्करापि च ।
विन्ध्याचलरता देवी विन्ध्याचलनिवासिनी ॥

बहू बहुसुन्दरी च कंसासुरविनाशिनी ।
शूलिनी शूलहस्ता च वज्रा वज्रहरापि च ॥

दुर्ग्गा शिवा शान्तिकरी ब्रह्माणी ब्राह्मणप्रिया ।
सर्व्वलोकप्रणेत्री च सर्व्वरोगहरापि च ॥

मंगला शोभना शुद्धा निष्कला परमा कला ।
विश्वेश्वरी विश्वमाता ललिता वसितानना ॥

सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका चण्डविक्रमा ।
सर्व्वदेवमयी देवी सर्व्वागमभयापहा ॥

ब्रह्मेशविष्णुनमिता सर्व्वकल्याणकारिणी ।
योगिनी योगमाता च योगीन्द्रहृदयस्थिता ॥

योगिजाया योगवती योगीन्द्रानन्दयोगिनी ।
इन्द्रादिनमिता देवी ईश्वरी चेश्वरप्रिया ॥

विशुद्धिदा भयहरा भक्तद्वेषिभयंकरी ।
भववेषा कामिनी च भरुण्डा भयकारिणी ॥

बलभद्रप्रियाकारा संसाराण्र्णवतारिणी ।
पञ्चभूता सर्व्वभूता विभूतिर्भूतिधारिणी ॥

सिंहवाहा महामोहा मोहपाशविनाशिनी ।
मन्दुरा मदिरा मुद्रा मुद्रामुद्गरधारिणी ॥

सावित्री च महादेवी परप्रियनिनायिका ।
यमदूती च पिंगाक्षी वैष्णवी शंकरी तथा ॥

चन्द्रप्रिया चन्द्ररता चन्द्रनारण्यवासिनी ।
चन्दनेन्द्रसमायुक्ता चण्डदैत्यविनाशिनी ॥

सर्व्वेश्वरी यक्षिणी च किराती राक्षसी तथा ।
महाभोगवतीं देवी महामोक्षप्रदायिनी ॥

विश्वहन्त्री विश्वरूपा विश्वसंहारकारिणी ।
धात्री च सर्व्वलोकानां हितकारणकारिणी ॥

कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हरविनाशिनी ।
सुरेन्द्रपूजिता सिद्धा महातेजोवतीति च ॥
परारूपवती देवीं त्रैलोक्याकर्ष्षकारिणी ।

—:०:—

११

श्री बगलामुखी जी की आरती

प्रत्येक पूजन के समापन पर देवता की आरती उतारी जाती है। लगभग दो सौ वर्षों से पूर्व तक तो वेदोक्त मन्त्रों से ही आरती उतारी जाती थी परन्तु जैसे-जैसे शिक्षा का प्रचार बढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे ही कवित्व प्रतिभा रखने वाले साधक देवता से सम्बन्धित आरती आदि का आधुनिकीकरण करते चले गये हैं। इस प्रकार के प्रयोग पूर्णतः सफल भी हुए हैं जिसे कि श्रद्धालु जब बड़े ही मनोयोग से गाते दृष्टिगोचर होते हैं। यह बात सही भी है कि सरल पूजा पद्धति आदि के पाठादि भी सरल ही होने चाहिए। आरती करने के सभी के अपने-अपने तरीके होते हैं परन्तु मुख्यतः पंच दीप को ही प्राप्त है क्योंकि पंच दीप पाँच तत्त्वों का भी प्रतीक हो जाता है एवं सनातन धर्म के प्रमुख पाँच उपास्यों का सूचक भी है। यह तो आप जानते ही हैं कि प्रत्येक देह पाँच तत्त्वों से बनी है और पांच शक्तियों से सृष्टि कार्यरत् है। पृथ्वी तत्त्व, आकाश तत्त्व, वायु तत्त्व, जल तत्त्व तथा अग्नि तत्त्व ही पाँच तत्त्व कहलाते हैं। इन्हीं तत्त्वों का सारा खेल है—प्राणी। इसी प्रकार ब्रह्मा, विष्णु, महेश शक्ति व गणेश को सनातनी प्रमुख पंच देव कहते हैं। इनमें से ब्रह्मा सृष्टि करते हैं। विष्णु पालन करते हैं। शिव संहार करते हैं। गणपति आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं व शक्ति सभी को मातृ भाव से शक्तिकृत किये रहती है।

आरती एक प्रमुख कार्य है जो कि शुभ से शुभ है और आवश्यक भी है। तान्त्रिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो यह दृष्टि दोष समाप्त करने की प्रक्रिया मात्र है। साधक की जैसी भी दृष्टि हो उसे आरती तो उतारनी चाहिए परन्तु यह क्रिया खड़े होकर करनी चाहिये। आरती के दीपक में शुद्ध घृत होना चाहिये। आरती के समापन पर कर्पूर के दीपक से भी देव अर्चन करना चाहिये।

भारत में मध्य प्रदेश स्थित एक क्षेत्र है जिसे कि दतिया कहते हैं। यहाँ पर श्री पीताम्बरा पीठ नामक शक्ति साधना का एक विशेष संस्थान है। इसी जगह देवार्चना में जो आरती गाई जाती है, वही यहाँ पर प्रस्तुत है।

—: ० :—

बगलामुखी जी की आरती

जय पीताम्बर - धारिणि जय सुखदे
वरदे, मातर्जय सुखदे वरदे !
भक्त-जनानां क्लेशं, भक्त-जनानां
क्लेशं सततं दूर करे ॥ जय देवि, जय देवि ।

असुरैः पीडित - देवास्तव शरणं
प्राप्ताः, मातस्तव शरणं प्राप्ताः ।
धृत्वा कौर्म - शरीरं, धृत्वा कौर्म-
शरीरं दूरी-कृत-दुःखम् ॥ जय देवि, जय देवि ।

मुनि-जन-वन्दित-चरणे, जय विमले
बगले, मातर्जय विमले बगले !
संसारार्णव - भीतिं, संसारार्णव-
भीतिं नित्यं शान्ति करे ॥ जय देवि, जय देवि ।

नारद - सनक - मुनीन्द्रैर्ध्यातं पदं-
कमलं, मातर्ध्यातं पद - कमलम् ।
हरि-हर-द्रुहिण-सुरेन्द्रैः, हरि-हर-द्रुहिण-
सुरेन्द्रैः सेवित-पद-युगलं ॥ जय देवि, जय देवि ।

काञ्चन-पीठ-निविष्टे मुद्गर-पाश-
युते, मातर्मुद्गर - पाश - युते ।
जिह्वा-वज्र-सुशोभित, जिह्वा-वज्र-
सुशोभित पीतांशुक-लसिते ॥ जय देवि, जय देवि ।

विन्दु-त्रिकोण-षड स्त्रंरष्ट - दलीपरि
ते, मातरष्ट - दलीपरि ते ।
षोडश-दल-गत-पीठं, षोडश-दल-गत-
पीठं भूपुर-वृत्त-युतम् ।। जय देवि, जय देवि ।

इत्थं साधक - वृन्दश्चिन्तयते
रूपं, मातश्चिन्तयते रूपम् ।
शत्रु-विनाशक-बीजं, शत्रु - विनाशक-
बीजं धृत्वा हृत्-कमले ।। जय देवि, जय देवि ।

अणिमादिक-बहु-सिद्धि लभते सौख्य-
युतां, मातर्लभते सौख्य - युताम् ।
भोगान् भुक्त्वा सर्वान्, भोगान् भुक्त्वा
सर्वान् गच्छति विष्णु-पदं ।। जय देवि, जय देवि ।

पूजा - काले कोऽपि आर्तिक्यं
पठते, मातरार्तिक्यं पठते ।
धन-धान्यादि-समृद्धो, धन-धान्यादि-
समृद्धः सान्निध्यं लभते ।। जय देवि, जय देवि ।

—:०:—

दश महाविद्या तन्त्रसार

(द्वितीय खण्ड)

काली मन्त्र[1]

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा ।

कालीध्यानम्

करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम् ।
कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमालाविभूषिताम् ।
सद्यश्छिन्नशिरः खंगवामाधोर्द्ध्वकराम्बुजाम् ।
अभयं वरदञ्चैव दक्षिणाधोर्द्ध्वपाणिकाम् ।
महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बरीम् ।
कण्ठावसक्तमुण्डालीगलद्रुधिरचर्चिताम् ।
कर्णावतंसतानीतशवयुग्मभयानकाम् ।
घोरदंष्ट्राकरालास्यां पीनोन्नतपयोधराम् ।
शवानां करसंघातैः कृतकाञ्चीं हसन्मुखीम् ।
सृक्कच्छटागलद्रक्तधाराविस्फूरिताननाम् ।
घोररावां महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीम् ।
बालार्कमण्डलाकारलोचनत्रितयान्विताम् ।
दन्तुरां दक्षिणव्यापिमुक्तालम्बिकचोच्चयाम् ।

---

१. इस विषय पर विस्तृत ज्ञान मेरी पुस्तक 'संकट मोचिनी कालिका सिद्धि' में देखें ।

शवरूपमहादेवहृदयोपरि संस्थिताम् ।
शिवाभिर्घोररावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ।
महाकालेन च समं विपरीतरतातुराम् ।
सुखप्रसन्नवदनां स्मेराननसरोरुहाम् ॥

कालिकादेवी भयंकर मुखवाली, घोरा, खुले बालों वाली, चार हाथों से और मुण्डमाला से अलंकृत हैं। उनके बायीं तरफ के दोनों हाथों में तत्काल काटे गये शव का सिर एवं खंड और दक्षिण तरफ के दोनों हाथों में अभय और वरमुद्रा सुशोभित हैं। कण्ठ में मुण्डमाला है काले मेघ के समान श्यामवर्ण है, दिगम्बरी है। कण्ठ में स्थित मुण्डमाला से टपकते हुए रुधिर से लिप्त शरीर वाली है। घोर दंष्ट्रा है करालवन्दना है और उन्नत पीन स्तन वाली हैं। उनके दोनों कानों में मृतक के मुण्ड भूषण रूप से शोभा पा रहे हैं। देवी की कमर में शव के हाथों की करधनी विद्यमान है। वह हास्यमुखी हैं। उनके दोनों होठों से रुधिरधारा क्षरित हो रही है जिसके कारण हृदय कम्पित होता हैं। देवी घोर शब्द करने वाली हैं महाभयंकरी हैं और यह श्मशानवासिनी हैं। उनके तीनों नेत्र नवीन सूर्य के समान हैं। वह बड़े दाँत और लम्बे लहराते केशों से युक्त हैं। वह शवरूपी महादेव के हृदय पर स्थित हैं। उनके चारों ओर भीषण गीदड़ियाँ भ्रमण करती हैं। देवी महाकाल के सहित विपरीत रता (अर्थात मैथुन) में आसक्त हैं। वह प्रसन्नमुखी सुहास्यवदना है यह समस्त कामनाओं की दात्री है।

कालीस्तव

कर्पूरं मध्यमान्त्यस्वरपररहितं सेन्दुवामाक्षियुक्तं ।
बीजन्ते मातरेतत्त्रिपुरहरवधु त्रिःकृतं ये जपन्ति ।
तेषां गद्यानि च मुखकुहराडुल्लसन्त्येव वाचः ।
स्वच्छन्दं ध्वान्तधाराधररुचिरुचिरे सर्व्वं सिद्धिं
गतानाम् ।

हे जननि ! हे सुन्दरी ! तुम्हारे देह की कान्ति श्यामवर्ण मेघ के समान मनोहर है। जो तुम्हारे एकाक्षरी बीज को त्रिगुना करके जप करते हैं, वह शिव की अणिमादि अष्टसिद्धियों को प्राप्त करते हैं और उनके मुख से गद्यपद्यमयी वाणी निकलती हैं।

ईशानः सेन्दुवामश्रवणपरिगतं बीजमन्यन्महेशि
द्वन्द्वं ते मन्दचेता यदि जपति जनो बारमेकं
कदाचित् ।
जित्वा वाचामधीशं धनदमपि चिरं
मोहयन्नम्बुजाक्षीवृन्दं
चन्द्रार्द्धचूडे प्रभवति स महाघोरबाणावतंसे ॥

हे महेश्वरी ! तुम्हारे भाल पर अर्द्धचन्द्र शोभा पाता है। दोनों कानों में दो महाभयंकर बाण अलंकार स्वरूप से विद्यमान हैं। विषयों से घिरे पुरुष भी तुम्हारे 'हूं' बीज को दूना करके पवित्र अथवा अपवित्र काल में एक बार जप करने से विद्या और धन द्वारा सुरगुरु भृगु और कुबेर को परास्त करने में समर्थ

हो जाता हैं। वह पुरुष सुन्दरी स्त्रियों को भी मोहित कर सकता हैं, इसमें सन्देह नहीं।

ईशौ वैश्वानरस्थः शशधरविलसद्वामनेत्रेण युक्तो बीजं ते द्वन्द्वमन्यद्वि गलितचिकुरे कालिके ये जपन्ति द्वेष्टारं घ्नन्ति ते च त्रिभुवनमपि ते वश्यभावं नयन्ति सृक्कद्वन्द्वास्त्रधाराद्वयधरवदने दक्षिणे कालिकेति ॥

हे खुले एवं लहराते केशों वाली ! तुम विश्वसंहर्त्ता काल के संग विहार करती हो। इसी कारण तुम्हारा नाम 'कालिका' है। तुम बाँये होकर दक्षिण में स्थित महादेव को पराजित करती हुई स्वयं निर्वाण का दान करती हो। इसी कारण 'दक्षिणा' नाम से तुम प्रसिद्ध हुई हो। तुमने प्रणवरूपी शिव का अपने महात्म्य से तिरस्कार किया है। तुम्हारे दोनों होठों से रुधिरधारा क्षरित होने के कारण तुम्हारा बदन परम शोभा को पाता है। जो तुम्हारे 'ह्लीं ह्लीं' इन दोनों बीजों को जप करते हैं, वह शत्रुओं को पराजित कर त्रिभुवन को वशीभूत कर सकते हैं। अथवा जो इस मन्त्र को जपते हैं, वह शत्रु कुल को वशीभूत कर त्रिभुवन में विचरण किया करते हैं।

उर्ध्द्वं वामे कृपाणं करतलकमले छिन्नमुण्डं तथाधः सव्ये चाभीर्वरञ्च त्रिजगदघहरे दक्षिणे कालिकेति।

जप्त्वैतन्नामवर्णं तव मनुविभवं भावयन्त्येतदम्ब तेषामष्टौ करस्थाः प्रकटितवदने सिद्धयस्त्र्यम्बकस्य ॥

हे जगन्मातः ! तुम संसार के पापियों का पाप हरती हो। तुम्हारे दाँतों को पंक्ति महाभयंकर है। तुमने ऊपर के बाँये हाथ में खड्ग नीचे के बाँये हाथ में मुण्ड, ऊपर के दाहिने हाथ में अभय मुद्रा और नीचे के दक्षिण हाथ में वर मुद्रा को धारण किया हैं। जो तुम्हारे नाम के स्वरूप 'दक्षिणकालिके' जपा करते हैं जो तुम्हारे स्वरूप का मनन किया करते हैं, उनके पास अणिमादि अष्ट सिद्धियाँ उपस्थित हुआ करती हैं।

वर्गाद्यं वह्निसंस्थं विधुरति ललितं तत्त्रयं कूर्च्चयुग्मं लज्जाद्वन्द्वञ्च पश्चात्स्मितमुखि तदधष्टद्वयं योजयित्वा मातर्ये ये जपन्ति स्मरहर महिले भावयन्ते स्वरूपं ते लक्ष्मीलास्यलीलाकमलदलदृशः कामरूपा भवन्ति ॥

हे स्मरहर की महिले ! तुम्हारा श्रीमुखमण्डल मृदु-मधुर हास्य सर्वदा शोभित है, जो मनुष्य तुम्हारे स्वरूप का ध्यान करते हुए तुम्हारा नवाक्षरमंत्र अर्थात क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्लीं ह्लीं स्वाहा का जप किया करते हैं, वह साक्षात् कामदेव के समान मनोहर आकर्षण शक्ति को प्राप्त करते हैं। उनके नेत्र कमल की लीला पद्म दल के सदृश लम्बी और रमणीय होते हैं।

प्रत्येकं वा त्रयं वा द्वयमपि च परं बीजमत्यन्तगुह्यं त्वन्नाम्ना योजयित्वा सकलमपि सदा भावयन्तो जपन्ति। तेषां नेत्रारविन्दे विहरति कमला वक्त्रशुभ्रांशुबिम्बे वाग्देवी दिव्यमुण्डस्रगतिशयलसत्कण्ठपीनस्तनाढ्ये ॥

हे जगन्मातः ! तुम्हारे उपदेशानुसार यह त्रिभुवन अपने-अपने कार्य्य में नियुक्त होता है, इसी कारण तुम 'देवी' नाम से कथित हो। तुम्हारा कण्ठ मुण्डमाला के धारण से, परम शोभा को पाता है। तुम्हारे वक्ष पर पुष्ट ऊँचे स्तन शोभित हो विराजित हैं। हे महेश्वरी ! जो पुरुष तुम्हारा ध्यान करते हुए 'दक्षिणेकालिके' और अन्त में पूर्वकथित एकाक्षर मंत्र अथवा यह त्रिगुणित तीन अक्षर मंत्र, वा 'ईशो वैश्वानरस्थं' श्लोक-कथित द्वयक्षर मंत्र या 'वर्गाद्यं' इत्यादि श्लोक में कहे नवाक्षर मंत्र अथवा गुह्य बाइसाक्षर मंत्र मिलाकर जप करते हैं, लक्ष्मी उनके नेत्र, पद्मों में और सरस्वती जिह्वा पर निवास करती है।

गतासूनां बाहु प्रकरकृतकञ्चीपरिलस—
न्नितम्बां दिग्वस्त्रां त्रिभुवनविधात्रीं त्रिनयनाम् ॥
श्मशानस्थे तल्पे शवहृदि महाकालसुरत—
प्रसक्तां त्वां ध्यायञ्जजननि जडचेता अपि कविः ॥

हे जननि ! तुम त्रिलोक की सृष्टिकर्त्री त्रिलोचना हो। तुम दिगम्बरी हो। तुम्हारे नितम्ब बाहुनिर्म्मित कर काञ्ची से अलंकृत हैं। तुम श्मशान में स्थित शवरूपी महादेव के हृदय पर महाकाल के संग रति क्रीडा में रत हो। विषयमत्त व्यक्ति भी तुम्हारा इस प्रकार ध्यान करने से अलौकिक कवित्वशक्ति पाता है।

शिवाभिर्घोराभिः शवनिवसमुण्डास्थिनिकरैः।
परं संकीर्णायां प्रकटितचितायां हरवधूम् ॥
प्रविष्टां सन्तुष्टामुपरि सुरतेनातियुवतीं।
सदा त्वां ध्यायन्ति क्वचिदपि न तेषां परिभवः ॥

हे देवि ! हे कालिके ! तुम महादेव की प्रियतमा हो। तुम विपरीत विहार में सन्तुष्ट होती हो। तुम नवयुवती हो। जिस स्थान में भयंकर शिवायें भ्रमण करती हैं तुम उसी शव मुंडों की अस्थियों से आच्छादित श्मशान में नृत्य किया करती हो। तुम्हारा इस प्रकार मनन करने से पराभव को प्राप्त नहीं होना पड़ता है।

वदामस्ते किं वा जननि वयमुच्चैर्जडधियो।
न धाता नापीशो हरिरपि न ते वेत्ति परमम् ॥
तथापि त्वद्भक्तिर्मुखरयति चास्माकमसिते।
तदेतत्क्षन्तव्यं न खलु शिशुरोषः समुचितः ॥

हे जननि ! जब महादेव, ब्रह्मा और नारायण भी तुम्हारा परमतत्व नहीं जानते, तब मूढ़मति हम तुम्हारा तत्त्व किस प्रकार से वर्णन कर सकते हैं ? हम जो तुम्हारे विषय में प्रवृत्त हुए हैं। तुम्हारे प्रति भजन में हमारी उत्सुकता ही उसका कारण है। हमें अनधिकार विषय में उद्यम करता हुआ देखकर तुमको क्रोध उत्पन्न हो सकता है किन्तु मूर्ख सन्तान जानकर हमको क्षमा कर देना।

समन्तादापीनस्तनजघनधृग्यौवनवती ।
रतासक्तो नवतं यदि जपति भक्तस्तवमनुम् ॥
विवासास्त्वां ध्यायन् गलितचिकुरस्तस्य वशगाः ।
समस्ताः सिद्धौघा भुवि चिरतरं जीवति कविः ॥

हे हरमहिले ! जो पुरुष नग्न और मुक्तकेश होकर पुष्ट ऊँचे पीन कुम्भ स्तन वाली युवती नारी के साथ रति क्रीडा करते

समय तुम्हारा मनन करते हुए तुम्हारे मन्त्र का जप करते रहते हैं, वह सरस्वती की कृपा से कवित्व की शक्तियुक्त होकर बहुत कालपर्य्यंन्त पृथिवी पर रहते हैं और सम्पूर्ण अभीष्ट उसको प्राप्त होता है।

समः सुस्थीभूतो जपति विपरीतो यदि सदा।
विचिन्त्य त्वां ध्यायन्नतिशयमहाकालसुरताम् ॥
तदा तस्य क्षोणीतलविहरमाणस्य विदुषः।
कराम्भोजे वश्याः स्मरहरवधु सिद्धिनिवहाः ॥

हे हरवल्लभे ! तुम महाकाल के संग विहार सुख अनुभव करती हो, विपरीतरतासक्त होकर जो साधक स्थिर मन से तुम्हारा ध्यान करता है उसे सर्वशास्त्र में पारदर्शी शक्ति प्राप्त हो जाती है और समस्त सिद्धिसमूह उसके करतलों में रहता है।

प्रसूते संसारं जननि जगतीं पालयति च।
समस्तं क्षित्यादि प्रलयसमये संहरति च ॥
अतस्त्वां धातापि त्रिभुवनपतिः श्रीपतिरपि।
महेशोऽपि प्रायः सकलमपि किं स्तौमि भवतीम् ॥

हे जगन्मातः ! तुम से ही चराचर जगत के सम्पूर्ण पदार्थ उत्पन्न हुए हैं, अतएव तुम्हीं सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा हो। तुम्हीं सम्पूर्ण जगत को पालती हो, अतः तुम्हीं नारायण हो। महाप्रलय काल के समय यह जगत तुम से ही लय को प्राप्त होता है। अतः तुम्हीं महेश्वरी हो; किन्तु स्पष्ट यही समझा जाता है कि तुम्हारे पति होने के कारण ही महेश्वर प्रलय काल में लय को प्राप्त नहीं होते हैं।

अनेके सेवन्ते भवदधिकगीर्व्वाणनिवहान्।
विमूढास्ते मातः किमपि न हि जानन्ति परमम् ॥
समाराध्यामाद्यां हरिहरविरिञ्चादिविबुधैः।
प्रसक्तोऽस्मि स्वैरं रतिरस महानन्दनिरताम् ॥

हे जगदम्बे ! तुम निरन्तर रति रस के आनन्द में निमग्न रहती हो। तुम्हीं सबकी आदिस्वरूपिणी हो। अनेक मूढ़ बुद्धि मनुष्य अन्यान्य देवताओं की आराधना करते हैं किन्तु वे अवश्य ही तुम्हारे उस अनिर्वचनीय परम तत्त्व को नहीं जानते। उनके उपास्य ब्रह्मा, विष्णु, शिव इत्यादि देवता लोग भी सदा तुम्हारी उपासना में ही लगे रहते हैं।

धरित्री कीलालं शुचिरपि समीरोऽपि गगनं।
त्वमेका कल्याणी गिरिशरमणी कालि सकलम् ॥
स्तुतिः का ते मातस्तवकरुणया मामगतिकं।
प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान्मम जनुः ॥

हे जननि ! क्षिति, जल, तेज, वायु और आकाश यह पंच-भूत भी तुम्हारे ही स्वरूप हैं। तुम्हीं भगवान् महेश्वर की हृदय रञ्जिनी हो। तुम्हीं इस त्रिभुवन का मंगल करती हो। हे जननि ! इस अवस्था में तुम्हारी फिर क्या स्तुति करूँ ? क्योंकि किसी विलक्षण गुण का आरोप न करके वर्णन करने को स्तुति कहते हैं। हे माता ! तुम में कौन सा गुण नहीं है, जो उसको जान करके तुम्हारा स्तव न करूँ ? तुम स्वयं जगन्मयी माता हो। तुम्हारे विषय में जो कीर्तन है वह सब तुम्हारे स्वरूप वर्णन पर आश्रित है। हे कृपामयि ! तुम दया प्रकाश

करके इस निराश्रय सेवक के प्रति सन्तुष्ट प्रसन्न हो तो फिर इस सेवक को संसार में पुनः जन्म लेना नहीं पड़ेगा।

श्मशानस्थस्स्वस्थो गलितचिकुरो दिक्पटधरः।
सहस्रन्त्वर्काणां निजगलितवीर्य्येण कुसुमम्॥
जपंस्त्वत्प्रत्येकममुमपि तव ध्याननिरतो।
महाकालि स्वैरं स भवति धरित्रीपरिवृढः॥

हे महाकालिके ! जो मनुष्य श्मशान भूमि में वस्त्रहीन और बाल खोलकर यथाविधि आसन पर बैठकर स्थिर मन से तुम्हारे स्वरूप का मनन/ध्यान करते हुए तुम्हारे मन्त्र का जाप करता है, और अपने निकले वीर्य में सहस्र आक के फूल एक-एक करके तुम्हारी प्रसन्नता के निमित्त अर्पण करता है, वह सम्पूर्ण धरती का स्वामी होता है।

गृहे सम्मार्जन्या परिगलितवीर्यं हि चिकुरं।
समूलं मध्याह्ने वितरति चितायां कुजदिने॥
समुच्चार्य्य प्रेम्णा जपमनु सकृत कालि सततं।
गजारूढो याति क्षितिपरिवृढः सत्कविवरः॥

हे देवी ! जो मंगलवार के दिन मध्याह्न काल के समय कंघी द्वारा श्रृंगार किये गृहणी वाले कंघो के समूल केश लेकर पूर्व वर्णित तुम्हारे जिस किसी एक मन्त्र का जप करता हुआ तुम्हें भक्ति सहित वह सामग्री चिताग्नि में अर्पण करता है, वह धरा का अधीश्वर होकर निरन्तर हाथी पर चढ़कर विचरण करने में समर्थ होता है और व्यासादिक कवि कुल की प्रधानता को प्राप्त होता है।

सुपुष्पैराकीर्णं कुसुमधनुषो मंदिरमहो।
पुरो ध्यायन् यदि जपति भक्तस्स्तवममुम्॥
स गन्धर्व्वश्रेणीपतिरिव कवित्वामृतनदी।
नदीनः पर्य्यन्ते परमपदलीनः प्रभवति॥

हे जगन्मातः ! साधक यदि स्वयं फलों से रंजित कामगृह को अभिमुख करके मन्त्रार्थ के सहित तुम्हारा ध्यान करता-करता पूर्व वर्णित किसी एक मन्त्र का जप करे, तो वह कवित्व रूपी नदी के सम्बन्ध में समुद्रस्वरूप हो जाता है। और महेन्द्र की समानता प्राप्त कर लेता है। वह देहान्त के समय तुम्हारे चरणकमल में लीन होकर मुक्ति प्राप्त करता है तो यह विचित्र बात नहीं है।

त्रिपञ्चारे पीठे शवशिवहृदि स्मेरवदनां।
महाकालेनोच्चैर्मदनरसलावण्यनिरताम्॥
महासक्तो नक्तं स्वयमपि रतानन्दनिरतो।
जनो यो ध्यायेत्त्वामयि जननि स स्यात्स्मरहरः॥

हे जगन्मातः ! तुम्हारे मुखमण्डल पर मृदु हास्य विराजित है। तुम सदा शिव के संग विहार अनुभव करती हो। जो साधक रात्रि में अपना विहार सुख अनुभव करता हुआ शव हृदय रूप आसन पर पाँच दशकोण युक्त तुम्हारे यंत्र में तुम्हारा पूर्वोक्त प्रकार से ध्यान करता है, यह शीघ्र शिवत्व का लाभ प्राप्त करता है।

सलोमास्थि स्वैरं पललमपि मार्ज्जारमसिते।
परञ्चौष्ट्रं मैषं नरमहिषयोश्छागमपि वा॥

बलिन्ते पूजायामपि वितरतां मर्त्यवसतां ।
सतां सिद्धिः सर्व्वा प्रतिपदमपूर्व्वा प्रभवति ॥

हे जननि ! पृथ्वीवासी साधकगण यदि तुम्हारी पूजा में बिल्ली का माँस, ऊँट का माँस, नरमाँस, महिषमाँस अथवा छाग माँस रोमयुक्त और अस्थियों के सहित अर्पण करे, तो उनके चरण कमल में आश्चर्य भरे विषय सिद्ध होकर विराजित होते हैं।

वशी लक्षं मन्त्रं प्रजपति हविष्याशनरतो।
दिवा मातर्युष्मच्चरणयुगलध्याननिपुणः ॥
परं नक्तं नग्नो निधुवनविनोदेन च मनुं।
जनो लक्षं स स्यात्स्मरहरसमान, क्षितितले ॥

हे जगन्मातः ! जो इन्द्रियों को अपने वशीभूत रखकर हविष्य भोजनपूर्वक प्रातः काल से दिन के दूसरे प्रहर तक तुम्हारे दोनों चरणों में चित्त लगाकर जप करते है, और पशु भाव से एक लाख जप का पुरश्चरण करते हैं, अथवा जो साधक रात्रि काल में नग्न और रति में लीन होकर वीरसाधनानुसार एक लाख जप का पुरश्चरण करते हैं, यह दोनों प्रकार के साधक पृथ्वी तल में स्मरहर शिव के समान होते हैं।

इदं स्तोत्रं मातस्तवमनुसमुद्धारणजपः ।
स्वरूपाख्यं पादाम्बुजयुगलपूजाविधियुतम् ॥
निशार्द्धं वा पूजासमयमधि वा यस्तु पठति ।
प्रलापे तस्यापि प्रसरति कवित्वामृतरसः ॥

हे जननि ! मेरे द्वारा वर्णित इस स्तव में तुम्हारे मन्त्र का उद्धार और तुम्हारे स्वरूप का वर्णन हुआ है। तुम्हारे चरण कमल की पूजा विधि का भी विधान इसमें व्यक्त किया है। जो साधक निशा द्विपहर काल में अथवा पूजा काल में इस स्तव को पढ़ता है, उसकी अनर्थक वाणी भी कवित्व सुधारस को प्रवाहित करती है।

कुरंगाक्षीवृन्दं तमनुसरति प्रेमतरलं ।
वशस्तस्य क्षोणी पतिरपि कुबेरप्रतिनिधिः ॥
रिपुः कारागारं कलयति च तत्केलिकलया ।
चिरं जीवन्मुक्तः स भवति च भक्तः प्रतिजनुः ॥

मृग के समान नेत्रों वाली नारियाँ इस स्तव को पढ़ने वाले साधक को प्रिय जानकर उसकी अनुगामिनी होती हैं। कुबेर के समान राजा भी उसके वश में रहते हैं। उस साधक के शत्रु-गण कारागार में बन्द होते हैं। वह साधक प्रत्येक जन्म में जगदम्बिका का परम भक्त होता है। वह सर्वदा महाआनन्द से विहार करता हुआ अन्त में मोक्ष को प्राप्त करता है।

—: ० :—

जगन्मंगल कालीकवचम्

भैरव्युवाच

कालीपूजा श्रुता नाथ भावाश्च विविधः प्रभो ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम् ॥
त्वमेव शरणं नाथ त्रापि मां दुःखसंकटात् ।
त्वमेव स्रष्टा पाता च संहर्ता च त्वमेव हि ॥

भैरवी ने पूछा—हे नाथ ! हे प्रभो ! मैंने काली पूजा और उसके विविध भाव सुने । अब पूर्व में व्यक्त किया कवच सुनने की इच्छा हुई है, उसका वर्णन करके मेरी दुःख संकट से रक्षा कीजिये । आप ही सृष्टि की रचना करते हो, आप ही रक्षा करते हो और आप ही संहार करते हो । हे नाथ ! तुम्हीं मेरे आश्रय हो ।

भैरव उवाच

रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे ।
श्रीजगन्मंगलं नाम कवचं मंत्रविग्रहम् ।
पठित्वा धरयित्वा च त्रैलोक्यं मोहयेत् क्षणात् ॥

भैरव ने कहा—हे प्राण वल्लभे ! 'श्रीजगन्मंगलनामक' कवच कहता हूँ । सुनो ! इसका पाठ करने अथवा इसे धारण करने से शीघ्र त्रिलोकी को मोहित किया जा सकता है ।

नारायणोऽपि यद्धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम् ।
योगेशं क्षोभमनयद्यद्धृत्वा च रघूद्वहः ।
वरवृप्तान् जघानैव रावणादिनिशाचरान् ॥

नारायण ने इसको धारण करके नारी रूप से योगेश्वर शिव को मोहित किया था । श्रीराम ने इसी को धारण करके रावणादि राक्षसों का संहार किया था ।

यस्य प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्यविजयी प्रभुः ।
धनाधिपः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छत्रीपतिः ।
एवं हि सकला देवाःसर्व्वसिद्धीश्वराः प्रिये ॥

हे प्रिये ! इसके ही प्रसाद से मैं त्रैलोक्यजयी हुआ हूँ । कुबेर इसके प्रसाद से धनाधिप हुए हैं । शचीपति सुरेश्वर और सम्पूर्ण देवतागण इसी के प्रभुत्व से सर्वसिद्धिश्वर हुए हैं ।

श्रीजगन्मंगलस्यास्य कवचस्य ऋषिश्शिवः ।
छन्दोऽनुष्टुब्देवता च कालिका दक्षिणेरिता ॥
जगतां मोहने दुष्टानिग्रहे भुक्तिमुक्तिषु ।
योषिदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्त्तितः ॥

इस कवच के ऋषि शिव, छन्द अनुष्टुप्, देवता दक्षिण कालिका और मोहन दुष्टनिग्रह भुक्तिमुक्ति और योषिदाकर्षण के लिए विनियोग है ।

इसे विनियोग मन्त्र कहते हैं । प्रत्येक जपादि के अपने-अपने विनियोग होते हैं ।

शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरी परा।
क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटञ्च कालिका खंग धारिणी ॥
हुं हुं पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुती मम।
दक्षिणा कालिका पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी ॥
क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हुं हुं पातु कपोलकम्।
वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी ॥

कालिका और क्रींकारा मेरे मस्तक की क्रीं क्रीं क्रीं और खंगधारिणी कालिका मेरे ललाट की हुं हुं दोनों नेत्रों की ह्रीं ह्रीं मेरे कर्म की दक्षिण कालिका दोनों नासिकाओ की क्रीं क्रीं क्रीं मेरी जीभ की हुं हुं कपोलों की और ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी महाकाली मेरी सम्पूर्ण देह की रक्षा करें।

द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्या सुखप्रदा।
खंगमुण्डधरा काली सर्व्वांगमभितोऽवतु ॥
क्रीं हुं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम।
ऐं हुं ओं ऐं स्तनद्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम् ॥
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका।
क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं करौ पातु षडक्षरी मम ॥

बाईस अक्षर की गुह्य विद्या रूप सुखदायिनी महाविद्या मेरे दोनों स्कन्धों की खंगमुण्डधारिणी काली मेरे सर्व्वांग की क्रीं हुं ह्रीं चामुण्डा मेरे हृदय की ऐं हुं ओं ऐं मेरे दोनों स्तनों की ह्रीं फट् स्वाहा मेरे कन्धों की एवं अष्टाक्षरी महाविद्या मेरी

दोनों भुजाओं की और क्रीं इत्यादि षडक्षरी विद्या मेरे दोनों हाथों की रक्षा करें।

क्रीं नाभि मध्यदेशञ्च दक्षिणा कालिकाऽवतु।
क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठन्तु कालिका सा दशाक्षरी ॥
ह्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके हूं ह्रीं पातु कटीद्वयम्।
काली दशाक्षरी विद्या स्वाहा पातूरुयुग्मकम्।
ॐ ह्रां क्रीं मे स्वाहा पातु कालिका जानुनी मम ॥
कालीहृन्नामविद्येयं चतुर्वर्गफलप्रदा।

क्रीं मेरी नाभि की, दक्षिण कालिका मेरे मध्य, क्रीं स्वाहा और दशाक्षरी विद्या मेरी पीठ की ह्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके हूँ ह्री मेरी कटि की दशाक्षरीविद्या मेरे ऊरुओं की और ओ३म् ह्रीं क्रीं स्वाहा मेरी जानु की रक्षा करें। यह विद्या चतुर्वर्गफल-दायिनी है।

क्रीं ह्रीं ह्रीं पातु गुल्फं दक्षिणे कालिकेऽवतु।
क्रीं हूँ ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्द्दशाक्षरी मम ॥

क्रीं ह्रीं ह्रीं मेरे गुल्फ की क्रीं हूँ ह्रीं स्वाहा और चतुर्द्दशा-क्षरीविद्या मेरे शरीर की रक्षा करें।

खंगमुण्ड धरा काली वरदा भयवारिणी।
विद्याभिःसकलाभिः सा सर्व्वांगमभितोऽवतु ॥

खंग मुण्डधरा वरदा भवहारिणी काली सब विद्याओं के सहित मेरे सर्वांग की रक्षा करें।

काली कपालिनी कुल्वा कुरुकुल्ला विरोधिनी ।
विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता घनत्विषः ॥
नीला घना बालिका च माता मुद्रामिता च माम् ।
एताः सर्व्वाः खंगधरा मुण्डमालाविभूषिताः ॥

रक्षन्तु मां दिक्षु देवी ब्राह्मी नारायणी तथा ।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चापराजिता ॥
वाराही नारसिंही च सर्व्वाश्चामितभूषणाः ।
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु मां विदिक्षु यथा तथा ॥

ब्राह्मी, नारायणी, माहेश्वरी, चामुण्डा, कुमारी, अपराजिता, वाराही, नृसिंही देवियों ने सर्व आभूषण धारण किए हुये हैं। यह सब माताएँ मेरे दिक् विदिक् की सर्वदा सर्वत्र रक्षा करें।

इत्येवं कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम् ।
श्रीजगन्मंगलं नाम महामंत्रौघविग्रहम् ॥
त्रैलोक्याकर्षणं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम् ।
गुरुपूजां विधायाथ गृह्णीयात् कवचं ततः ।
कवचं त्रिःसकृद्वापि यावज्जीवञ्च वा पुनः ॥

यह 'जगन्मंगलनामक' महामन्त्रस्वरूपी परम अद्भुत दिव्य कवच कहा गया है। इसके द्वारा त्रिभुवन आकर्षित होता है। गुरु की पूजा करने के पश्चात् इस कवच को ग्रहण करना चाहिये। इसका एक बार वा तीन बार अथवा यावज्जीवन पाठ करें।

एतच्छतार्द्धमावृत्य त्रैलोक्यविजयो भवेत् ।
त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव कवचस्य प्रसादतः ।
महाकविर्भवेन्मासात्सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥

इसकी पचास आवृत्ति करने से त्रैलोक्य विजयी हो सकता है। इस कवच के प्रसाद से त्रिभुवन क्षोभित होता है। इस कवच के प्रसाद से एक मास में सर्व्वसिद्धीश्वर हुआ जा सकता है।

पुष्पाञ्जलीन् कालिकायैमूलेनैव पठेत् सकृत् ।
शतवर्षसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥

मूल मन्त्र द्वारा कालिका को पुष्पाञ्जलि देकर इस कवच का एक पाठ करने से शतसहस्रवार्षिकी पूजा का फल प्राप्त हो जाता है।

भूर्ज्जे विलिखितञ्चैव स्वर्णस्थं धारयेद्यदि ।
शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारयेद्यदि ॥
त्रैलोक्यं मोहयेत् क्रोधात् त्रैलोक्यं चूर्णयेतक्षणात् ।
बह्वपत्या जीवत्सा भवत्येव न संशयः ॥

भोजपत्र अथवा स्वर्णपत्र पर यह कवच लिखकर सिर वा दक्षिण हस्त या कण्ठ में धारण करने से धारक त्रिभुवन मोहित या चूर्णकृत करने में समर्थ हो जाता है। नारी जाति बहुत सन्तान देने वाली और जीव वत्सा होती है। इसमें संदेह नहीं करना चाहिए।

न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः ।
शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यश्चान्यथा मृत्युमाप्नुयात् ॥
स्पर्द्धामुद्धूय कमला वाग्देवी मंदिरे मुखे ।
पौत्रान्तस्थैर्य्यमास्थाय निवसत्येव निश्चितम् ॥

अभक्त अथवा परशिष्य को यह कवच प्रदान न करें। केवल भक्ति युक्त अपने शिष्य को ही दें। इसके अन्यथा करने से मृत्यु के मुख में गिरना होता है। इस कवच के प्रसाद से लक्ष्मी निश्चल होकर साधक के घर में और सरस्वती उसके मुख में वास करती है।

इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेत्कालिदक्षिणाम् ।
शतलक्षं प्रजप्यापि तस्य विद्या न सिध्यति ।
स शस्त्रघातमाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥

इस कवच को न जानकर जो पुरुष काली मन्त्र का जाप करता है वह सौ लाख जपने पर भी उसकी सिद्धि को प्राप्त नहीं कर पाता है और वह पुरुष शीघ्र ही शस्त्राघात से प्राण त्याग करता है।

—:०:—

तारामंत्र

भगवती तारा के आजकल तीन मन्त्र विशेष प्रचलन में हैं जो कि निम्नलिखित हैं—

(१) ह्रीं स्त्रीं हूं फट् ।
(२) श्रीं ह्रीं स्त्रीं हूं फट् ।
(३) ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् ॥

ऊपर तीन प्रकार के मन्त्र कहे गए हैं, साधक अपनी सुविधा के अनुसार इनमें से चाहे जिस मन्त्र के जप से उपासना कर सकता है।

ताराध्यान्

प्रत्यालीढपदां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम् ।
खर्व्वां लम्बोदरीं भीमां व्याघ्रचर्म्मावृत्तां कटौ ॥

नवयौवनसम्पन्नां पञ्चमूद्राविभूषिताम् ।
चतुर्भुजां लोलजिह्वां महाभीमां वरप्रदाम् ॥

खंगकर्तृ समायुक्तसव्येतरभुजद्वयाम् ।
कपोलोत्पलसंयुक्तसव्यपाणियुगान्विताम् ॥

पिंगाग्रैकजटां ध्यायेन्मौलावक्षोभ्यभूषिताम् ।
बालार्कमण्डलाकारलोचनत्रय भूषिताम् ॥

ज्वलच्चितामध्यगतां घोर्दंष्ट्राकरालिनीम् ।
स्वादेशस्मेरवदनां ह्यलंकारविभूषिताम् ॥
विश्वव्यापकतोयान्तः श्वेतपद्मोपरि स्थिताम् ॥

तारा देवी एक पाँव आगे किये वीर पद से विराजित है। यह घोररूपिणी है व मुण्डमाला से विभूषित है, सर्वा है, लम्बोदरी है, भीमा है, व्याघ्रचर्म्म पहिनने वाली है, नवयुवती है, पञ्चमुद्रा विभूषित है, चतुर्भुजा है। इनकी चलायमान जिह्वा है, यह महाभीमा है और ये वरदायिनी भी है। इनके दक्षिण दोनों हाथों में खंग और कैंची तथा वाम दोनों हाथों में कपाल और उत्पल विद्यमान है। इनकी जटा पिंगलवर्ण की है, तीनों नेत्रों में तरुण सूर्य के समान रक्त वर्ण हैं। यह जलती हुई चिता में स्थित है, घोर दंष्ट्रा है, कराला है, स्वीय आवेश सी हास्यमुखी है। यह सब प्रकार के अलंकारों से अलंकृत है एवं यह विश्व व्यापिनी जल के भीतर श्वेत पद्म पर स्थिर हैं।

तारा-स्तोत्र

तारा च तारिणी देवी नागमुण्डबिभूषिता ।
ललज्जिह्वा नीलवर्णा ब्रह्मरूपधरा तथा ॥
नामाष्टक मिदं स्तोत्रं य पठेत् शृणुयादपि ।
तस्य सर्व्वार्थसिद्धिः स्यात् सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥

तारा, तारिणी, नागमुण्डों से विभूषित, चलायमान जिह्वा वाली, नील वर्ण वाली, ब्रह्म रूपधारिणी है। यह नागों से अंचित कटी और नीलाम्बर धरा है। यह अष्टनामात्मक ताराष्टक स्तोत्र का पाठ अथवा श्रवण करने से सर्वार्थ सिद्धि प्राप्त होती है।

तारा-कवच

भैरव उवाच

दिव्यं हि कवचं देवि तारायाः सर्व्वकामदम् ।
शृणुष्व परमं तत्तु तव स्नेहात् प्रकाशितम् ।

भैरव ने कहा हे देवि! तारा देवी का दिव्य कवच सर्वकामप्रद और परम श्रेष्ठ है। तुम्हारे प्रति स्नेह के कारण ही उसको कहता हूँ।

अक्षोभ्य ऋषिरित्यस्य छन्दस्त्रिष्टुबुदाहृतम् ।
तारा भगवती देवी मंत्रसिद्धौ प्रकीर्त्तितम् ॥

इस कवच के ऋषि अक्षोभ्य, छंद, त्रिष्टुप्, देवता भगवती तारा और मन्त्र सिद्धि के निमित्त इसका विनियोग है।

ओंकारो मे शिरः पातु ब्रह्मरूपा महेश्वरी ।
ह्रीङ्कारः पातु ललाटे बीजरूपा महेश्वरी ॥
स्त्रीङ्कारः पातु वदने लज्जारूपा महेश्वरी ।
हुङ्कार पातु हृदये तारिणी शक्तिरूपधृक् ॥

ओ३म् ब्रह्म रूपा महेश्वरी मेरे मस्तक की, ह्रीं बीज रूपा महेश्वरी मेरे ललाट की, स्त्रीं लज्जा रूपा महेश्वरी मेरे मुख की और हुँ शक्ति रूप धारिणी तारिणी मेरे हृदय की रक्षा करें।

फट्कारः पातु सर्व्वांगे सर्वसिद्धि फलप्रदा ।
खर्वा मां पातु देवेशी गण्डयुग्मे भयापहा ॥
लम्बोदरी सदा स्कन्धयुग्मे पातु महेश्वरी ।
व्याघ्र चर्मावृता कठि पातु देवी शिवप्रिया ॥

फट् सर्वसिद्धि फलप्रदा सर्वांगस्वरूपिणी भयनाशिनी खर्वा-देवी मेरे दोनों कानों की, महेश्वरी लम्बोदरी देवी मेरे दोनों कंधे की और व्याघ्रचर्म्मावृता शिवप्रिया मेरी कमर की रक्षा करें।

पीनोन्नतस्तनी पातु पार्श्वयुग्मे महेश्वरी ।
रक्तवर्त्तुलनेत्रा च कटिदेशे सदावतु ॥
ललज्जिह्वा सदा पातु नाभौ मां भुवनेश्वरी ।
करालास्या सदा पातु लिंग देवी हरप्रिया ॥

पीनोन्नतस्तनी महेश्वरी मेरे दोनों पार्श्व की, रक्त गोल नेत्र वाली मेरी कटि की, ललजिह्वा भुवनेश्वरी मेरी नाभि की और कराल बदना हरप्रिया मेरे लिंग की सदा रक्षा करें।

विवादे कलहे चैव अग्नौ च रणमध्यतः ।
सर्व्वदा पातु मां देवी झिण्टीरूपा वृकोदरी ॥

झिण्टी रूपा वृकोदरी देवी विवाद एवं कलह में, अग्नि मध्य और रण में सदा मेरी रक्षा करें।

सर्व्वदा पातु मां देवी स्वर्गे मर्त्ये रसातले ।
सर्व्वास्त्रभूषिता देवी सर्व्वदेवप्रपूजिता ॥
क्रीं क्रीं हुं हुं फट् २ पाहि पाहि समन्ततः ॥

सब देवताओं से पूजित सर्वास्त्र से विभूषित महादेवी मेरी स्वर्ग लोक, मर्त्य लोक और रसातल लोक में मेरी रक्षा करें। 'क्रीं क्रीं हुं हुं फट् फट्' बीज मन्त्र मेरी सब तरफ से रक्षा करें।

कराला घोरदशना भीमनेत्रा वृकोदरी ।
अट्टहासा महाभागा विघूर्णितत्रिलोचना ॥
लम्बोदरी जगद्धात्री डाकिनी योगिनीयुता ।
लज्जारूपा योनिरूपा विकटा देवपूजिता ॥
पातु मां चण्डी मातंगी ह्यु्ग्रचण्डा महेश्वरी ॥

महाकराल घोर दांतों वाली भयंकर नेत्र और भेड़िये के समान उदर वाली, जोर से हँसने वाली, महाभाग वाली, घूर्णित नेत्र वाली, लम्बायमान उदर वाली, जगत् की माता, डाकिनी योगिनियों से युक्त, लज्जारूप, योनिरूप, विकट तथा देवताओं से पूजित, उग्रचण्डा, महेश्वरी मातंगी मेरी सर्वदा रक्षा करें।

जले स्थले चान्तरिक्षे तथा च शत्रुमध्यतः ।
सर्व्वतः पातु मां देवी खड्गहस्ता जयप्रदा ॥

खंग हाथ में लिये जय देने वाली देवी मेरी जल में, स्थल में, शून्य में; शत्रु मध्य में और अन्यान्य सब स्थानों में मेरी रक्षा करें।

कवचं प्रपठेद्यस्तु धारयेच्छृणुयादपि ।
न विद्यते भयं तस्य त्रिषु लोकेषु पार्व्वति ॥

जो साधक इस कवच का पाठ करते हैं या धारण करते हैं या सुनते हैं, हे पार्वती ! तीनों लोकों में कहीं भी उनको भय नहीं सता सकता।

भुवनेश्वरी मन्त्र

(१) ह्रीं
(२) ऐ ह्रीं
(३) ऐं ह्रीं ऐं

ऊपर कहे गए तीन मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र के द्वारा साधक भगवती भुवनेश्वरी का पूजन भजन कर सकता है।

भुवनेश्वरी का ध्यान

उद्यदहर्द्युतिमिन्दुकिरीटां ।
तुंगकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।।
स्मेरमुखीं वरदांकुशपाशा-
भीतिकरां प्रभजेद् भुवनेशीम् ।।

देवी के देह की कान्ति उदय होते हुए सूर्य के समान है। देवी के ललाट में अर्द्ध चन्द्र, मस्तक पर मुकुट, दोनों स्तन ऊँचे, तीन नेत्र और चेहरे पर सदा हास्य तथा चारों हाथों में वर, अंकुश, पास और अभयमुद्रा विद्यमान है।

भुवनेश्वरी स्तव

अथानन्दमयीं साक्षाच्छब्दब्रह्मस्वरूपिणीम् ।
ईडे सकलसम्पत्त्यै जगत्कारणमम्बिकाम् ।।

जो साक्षात् शब्द ब्रह्मस्वरूपिणी जगत्कारणी जगन्माता है। मैं सब सम्पत्ति लाभ होने के निमित्त उन्हीं आनन्दमयी भुवनेश्वरी की स्तुति करता हूँ।

आद्यामशेषजननीमरबिन्दयोने-
विष्णोः शिवस्य च वपुः प्रतिपादयित्रीम् ।
सृष्टिस्थितिक्षयकरीं जगतां त्रयाणां ।
स्तुत्वा गिरं विमलयाम्यहमम्बिके त्वाम् ।।

हे मातः ! तुम जगत् की आद्या हो, ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने वाली जगन्माता हो, ब्रह्मा, विष्णु, शिव को उत्पन्न करने वाली तुम ही हो। तुम ही सृष्टि की कर्त्ता, स्थिति तथा लय करने वाली हो। तुम्हारी स्तुति करके मैं अपनी वाणी को पवित्र करता हूँ।

पृथ्व्या जलेन शिखिना मरुताम्बरेण ।
होत्रेन्दुना दिनकरेण च मूर्तिभाजः ।।
देवस्य मन्मथरिपोरपि शक्तिमत्ता ।
हेतुस्त्वमेव खलु पर्वतराजपुत्रि ।।

हे पर्वतराज की पुत्री ! जो पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, यजमान, सोम और सूर्य में विराजमान हैं, जिन्होंने कामदेव को ध्वंस किया था, उन महादेव की भी त्रैलोक्य संहार शक्ति तुम्हारे ही द्वारा सम्पन्न हुई है।

त्रिस्रोतसः सकललोकसमर्चितताया ।
वैशिष्टयकारणमवैमि तदेव मातः ।।

त्वत्पादपंकजपरागपवित्रितासु ।
शम्भोर्जटासु नियतं परिवर्तनं यत् ॥

हे मातः ! तुम्हारे चरण कमलों की रेणु से पवित्र हुई शिव के सिर की जटाजूट में तीन स्रोत वाली भागीरथी सदा शोभा पाती रहती हैं। इस कारण ही उनकी सब पूजा करते हैं। इसी कारण वह सुन्दरी प्रधानता को प्राप्त हुई हैं।

आनन्दयेत्कुमुदिनीमधिपः कलानां ।
नान्यामिनः कमलिनीमथ नेतरां वा ॥
एकस्य मोदनविधौ परमेकमीष्टे ।
त्वन्तु प्रपञ्चमभिनन्दयसि स्वदृष्टया ॥

हे जननि ! जिस प्रकार चन्द्रमा केवल कुमुदिनी को ही आनन्दित करते हैं और अन्य को नहीं। सूर्य भी एकमात्र कमल का ही आनन्द बढ़ाते हैं और किसी को नहीं। इससे जाना जाता है कि जिस प्रकार एक-एक के आनन्द करने को एक-एक द्रव्य ही निर्दिष्ट हुआ है, इसी प्रकार सब जगत् को, एकमात्र तुम्हीं अपनी दृष्टि डालकर आनन्द देती हो।

आद्याप्यशेषजगतां नवयौवनासि ।
शैलाधिराजतनयाप्यतिकोमलासि ॥
त्रय्याः प्रसूरपि तया न समीक्षितासि ।
ध्येयापि गौरि मनसो न पथि स्थितासि ॥

हे जननि। सब जगत् की आदिभूत होकर भी तुम निरंतर नवयुवती हो। तुम पर्वतराज पुत्री होकर भी अतिकोमला हो।

तुम्हीं वेद प्रगट करने वाली हो। वेद तुम्हारा तत्त्व निरूपण करने में असमर्थ है। हे गौरी ! यद्यपि तुम ध्यान गम्य हो, किन्तु इस प्रकार होकर भी मन में स्थित नहीं होती हो।

आसाद्य जन्म मनुजेषु चिराद्दुरापं ।
तत्रापि पाटवमवाप्य निजेन्द्रियाणाम् ॥
नाभ्यर्च्चयन्ति जगतां जनयित्रि ये त्वां ।
निःश्रेणिकाग्रमधिरुह्य पुनः पतन्ति ॥

हे जगन्मातः ! जो दुर्लभ नरजन्म प्राप्त करके भी तुम्हारी पूजा नहीं करते हैं, वह मुक्ति की सीढ़ी पर चढ़कर भी पुनः गिरते हैं।

कर्पूरचूर्णहिमवारिविलोडितेन ।
ये चन्दनेन कुसुमैश्च सुजातगन्धैः ॥
आराधयन्ति हि भवानि समुत्सुकास्त्वां ।
ते खल्वशेषभुवनादिभुवं प्रथन्ते ॥

हे भवानि ! जो कर्पूर के चूर्ण संयुक्त शीतल जल से घिसे हुए चन्दन और सुगंधित पुष्पों के द्वारा उत्कंठित मन से तुम्हारी उपासना करते हैं, वह सब भुवनों के अधिपति होते हैं।

आविश्य मध्यपदवीं प्रथमे सरोजे ।
सुप्ताहिराजसदृशी विरचय्य विश्वम् ॥
विद्युल्लतावलयविभ्रममुद्वहन्ती ।
पद्मानि पञ्च विदलय्य समश्नुवाना ॥

हे जननि ! तुम मूलाधार पद्म में सोते हुए सर्पराज के

समान विराजमान होकर विश्व की रचना करती हो। वहाँ से बिजली की रेखा के समूह की समान क्रमानुसार ऊर्ध्व में स्थित पंच पद्म को भेदकर सहस्र दल पद्म की कर्णिका के मध्य में स्थित परम शिव के सहित संगत होती हो! यह विद्युल्लता योग से जागती है।[1]

तन्निर्गतामृतरसैरभिषिच्य गात्रं।
मार्गेण तेन विलयं पुनरप्यवाप्ता॥
येषां हृदि स्फुरति जातु न ते भवेयु-
र्मातर्महेश्वरकुटुंबिनि गर्भभाजः॥

हे जननि हरगृहिणी! तुम सहस्र दल कमल से निर्गत हुए सुधारस से शरीर को अभिषिक्त करती हुई सुषुम्ना नाडी के मार्ग में फिर प्राप्त होकर लय हो जाती हो, तुम जिसके हृदय कमल में उदित नहीं होती, वह बार-बार गर्भ में प्रवेश अर्थात पुनः पुनः जन्मने का दुःख पाता है।

आलम्बिकुन्तलभरामभिरामवक्त्रा-
मापीवरस्तनतटीं तनुवृत्तमध्याम्॥
चिन्ताक्षसूत्रकलशालिखिताढ्यहस्तां।
मातर्नमामि मनसा तव गौरि मूर्तिम्॥

हे जननि! तुम्हारे केश लम्बे हैं। तुम्हारा मुख अत्यन्त मनोहर है। तुम ऊँचे कठोर स्तन वाली हो। तुम्हारी कमर

१. यहाँ पर कुल कुण्डलिनी तन्त्र के विषय पर स्पष्ट घोषणा की जा रही है। जरा गम्भीरता से मनन करें।
—यशपाल भारती

पतली है और तुम्हारी चार भुजा में, ज्ञानमुद्रा, जपमाला, कलश और पुस्तक विद्यमान है। हे गौरी! तुम्हारी ऐसी मूर्ति को नमस्कार है।

आस्थाय योगमवजित्य च वैरिषट्क-
मावध्य चेन्द्रियगणं मनसि प्रसन्ने॥
पाशांकुशाभयवराढ्यकरां सुवक्त्रा-।
मालोकयन्ति भुवनेश्वरि योगिनस्त्वाम्॥

हे भुवनेश्वरी! योगिजन योग का आश्रय लेकर काम क्रोधादि शत्रुओं को जीतकर इन्द्रियों को रोककर प्रफुल्लित चित्त से पाशाँकुशाभय, वरयुक्त हाथ वाली, सुशोभनमुखी तुम्हारा दर्शन करते हैं।

उत्तप्तहाटकनिभा करिभिश्चतुर्भि-
रावर्तितामृतघटैरभिषिच्यमाना॥
हस्तद्वयेन नलिने रुचिरे वहन्ती।
पद्मापि साभयकरा भवसि त्वमेव॥

हे जननि! जो तपे हुए कांच के समान वर्ण वाली है। चार हाथी जल पूरित घट से जिनका अभिषेक करते हैं। जो एक तरफ के दोनों हाथों में पद्म और अन्य दोनों हाथों में अभय तथा वर मुद्रा धारण करती है वह लक्ष्मी देविस्वरूपिणी तुम्हीं हो।

अष्टाभिरुग्रविविधायुधवाहिनीभि-
र्दोर्वल्लरीभिरधिरुह्य मृगाधिराजम्॥

दूर्व्वादलद्युतिरमर्त्यविपक्षपक्षान् ।
न्यक्कुर्व्वती त्वमसि देवि भवानि दुर्गे ॥

हे देवि भवानि ! जो सिंह के ऊपर चढ़कर नाना रूप वाले अस्त्र आठ हाथों से उठाती है। जो दूर्वादल के समान कान्ति वाली है। जिन्होंने देवताओं के शत्रुओं को परास्त किया है। वह दुर्गास्वरूपिणी माता तुम्हीं हो।

आर्विनिदाघजलशीकरशोभिवक्त्रां ।
गुञ्जाफलेन परिकल्पितहारयष्टिम् ॥
रत्नांशुकामसितकान्तिमलंकृतान्त्वा-
माद्यां पुलिन्दतरुणीमसकृत स्मरामि ॥

पसीने की निकली हुई बूंदों से जिनका मुखमण्डल शोभा पाता है। जिन्होंने चौंटली के बीजों से बनी हार धारण की है। पत्रावली जिनके वसन हैं। उन्हीं कृष्णकान्ति वाली अनंग के वश में वर्त्तने वाली वा अनंग को वश में करने वाली आद्या पुलिन्दर मणी को बारम्बार स्मरण करता हूँ।

हंसैर्गतिक्वणितनूपुरदूरकृष्टै-
र्मूर्तैरिवाप्तवचनैरनुगम्यमानौ ॥
पद्माविवोर्ध्वमुखरूढसुजातनालौ ।
श्रीकण्ठपत्नि शिरसैव दधे तवांघ्री ॥

हे नीलकंठ की पत्नी ! हंस जिस प्रकार नूपुर के शब्द द्वारा दूर से खिंचे आते हैं, इसी प्रकार वेद तुम्हारे चरण कमलों का अनुगमन करते हैं। किन्तु तुम्हारे चरण कमल श्रेष्ठ नीलकमल के समान विराजमान हैं। मैं तुम्हारे दोनों चरण मस्तक पर धारण करता हूँ।

द्वाभ्यां समीक्षितुमतृप्तिमितेन दृग्भ्या-
मुत्पाद्यता त्रिनयनं वृषकेतनेन ॥
सान्द्रानुरागभवनेन निरीक्ष्यमाणे ।
जंघे उभे अपि भवानि तवानतोऽस्मि ॥

हे भवानि ! वृषभध्वज श्रीमहादेव जी ने दोनों नेत्रों से तुम्हारे रूप का दर्शन करके तृप्त न होने से ही मानों तीसरे नेत्र को उन्नत कर अत्यन्त गाढ़ अनुराग सहित तुम्हारी जंघा का दर्शन किया है। अतएव मैं तुम्हारी उन दोनों जंघाओं को नमस्कार करता हूँ।

ऊरू स्मरामि जितहस्तिकरावलेपौ ।
स्थौल्येन मार्द्दवतया परिभूतरम्भौ ॥
श्रोणी भवस्य सहनौ परिकल्प्य दत्तौ ।
स्तम्भाविवांगवयसा तव मध्यमेन ॥

हे जननि ! तुम्हारी ऊरु हाथियों की सूंड का गर्व नष्ट करती है। स्थूलता और कोमलता से केले के वृक्ष को परास्त करती है। तुम्हारा नितम्ब देखने से बोध होता है, मानो मध्य देश ने ही स्तम्भ स्वरूप में उसकी कल्पना करी है।

श्रोण्यौ स्तनौ च युगपत्प्रथयिष्यतोच्चै-
र्बाल्यात्परेण वयसा परिकृष्टसारः ।
रोमावलीविलसितेन विभाव्य मूर्त्ति-
र्मध्यन्तव स्फुरति मे हृदयस्य मध्ये ॥

हे देवि ! तुम्हारा मध्य देश देखने में अनुमान होता है कि,

मानों तुम्हारे नितम्ब और स्तनमण्डल दोनों ने उच्चता विस्तार के कारण यौवन द्वारा मध्य देश का सार ग्रहण किया है। इसी कारण तुम्हारा मध्य देश अत्यन्त क्षीण हो गया है। हे जननि! तुम्हारा यह मध्य देश मेरे हृदय में स्फुरित हो।

सख्यः स्मरस्य हरनेत्रहुताशभीरो-
र्लावण्यवारिभरितं नवयौवनेन।
आपाद्य दत्तमिव पल्वलमप्रधृष्यं।
नाभिं कदापि तव देवि न विस्मरेयम्॥

हे जननि! नवयुवती शिव की नेत्राग्नि से डरी हुई रति का लावण्य जलपूर्ण करके अल्पसरोवर के समान तुम्हारी नाभि बनाई गई है, तुम्हारी इस नाभि को मैं कभी नहीं भूलूँगा।

ईशोपगूहपिशुनं भसितं दधाने।
काश्मीरकर्द्दममनु स्तनपंकजे ते॥
स्नानोत्थितस्य करिणः क्षणलक्षफेनौ।
सिन्दूरितौ स्मरयतः समदस्य कुम्भौ॥

हे जननि! तुहारे दोनों उन्नत कुचों ने भस्म धारण की है, उसके द्वारा हरका आलिंगन प्रतीत हुआ होता है। और यह दोनों स्तन पद्म मूल से अनुलिप्त होने के कारण स्नान से उठे मदयुक्त हाथी के क्षण मात्र को फेन से लक्षित गण्ड स्थल का स्मरण कराते हैं।

कण्ठातिरिक्तगलदुज्ज्वलकान्तिधारा।
शोभौ भुजौ निजरिपोर्मकरध्वजेन॥

कण्ठग्रहाय रचितौ किल दीर्घपाशौ।
मातर्म्मम स्मृतिपथं न विलंघयेताम्॥

तुम्हारे दोनों हाथ देखने से अनुमान होता है, मानो कामदेव ने अपने शत्रु हर का कंठग्रहण करने के लिए दीर्घ पाश बनाया है। हे मातः! तुम्हारे यह दोनों हाथ मैं कभी न भूलूँगा।

नात्यायतं रचितकम्बुविलास चौर्य्यं।
भूषाभरेण विविधेन विराजमानम्॥
कण्ठं मनोहरगुणं गिरिराजकन्ये।
सञ्चिन्त्य तृप्तिमुपयामि कदापि नाहम्॥

हे गिरिराजपुत्रि! जो अत्यन्त दीर्घ नहीं है ऐसे अनेक प्रकार के अलंकृत मनोहरगुण तुम्हारे कंबुकंठ की मैं भावना करता हुआ कभी तृप्त न हूँ।

अत्यायताक्षमभिजातललाटपट्टं।
मन्दस्मितेन दरफुल्लकपोलरेखम्॥
बिम्बाधरं वदनमुन्नतदीर्घनासं।
यस्ते स्मरत्यसकृदम्ब स एव जातः॥

तुम्हारे मुख मण्डल में बहुत चौड़े नयन विराजमान हैं। भाल परम मनोहर दिखाई देता है। मृदुहास्य द्वारा कपोल प्रफुल्लित हुए हैं। अधर बिम्ब फल के समान शोभा पाते हैं। सुन्दर चेहरे पर उन्नत दीर्घ नासिका विराजमान है। जो पुरुष तुम्हारी ऐसी देह का स्मरण करते हैं। उनका ही जन्म सफल होता है।

आविस्तुषारकरलेखमनल्पगन्ध-
पुष्पोपरि भ्रमदलिव्रजनिर्विशेषम् ॥
यश्चेतसा कलयन्ते तव केशपाशं ।
तस्य स्वयं गलति देवि पुराणपाशः ॥

हे देवि ! तुम्हारे केश चन्द्रमा की चाँदनी से प्रकाशित होते हैं। वह स्वल्प गंधयुक्त फल के ऊपर भ्रमण करने वाले भौंरे के समान प्रतीत होते हैं। जो पुरुष तुम्हारे ऐसे केशपाश की भावना करते हैं। उनका सनातन संसारपाश कट जाता है।

श्रुतिसुरचितपाकं धीमतां स्तोत्रमेतत् ।
पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा ॥
स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्रः ।
क्षितिपमुकुटलक्ष्मीलक्षणानां चिराय ॥

जो पुरुष बुद्धिमानों के श्रुति सुख दायक इस स्तोत्र को आद्र होकर प्रतिदिन पढ़ते हैं, वह सम्पूर्ण सम्पदाओं के स्वामी होते हैं, और राजा लोग सदा उनके चरण कमलों में झुका करते हैं।

—:०:—

पातक दहन भुवनेश्वरी-कवच

शिव उवाच

पातकं दहनं नाम कवचं सर्व्वकामकम् ।
शृणु पार्व्वति वक्ष्यामि तव स्नेहात्प्रकाशितम् ॥

श्रीशिवजी बोले—हे पार्वती ! 'पातकदहन नामक' भुवनेश्वरी का कवच कहता हूं। सुनो। इसके द्वारा सब कामना पूर्ण होती हैं। तुम्हारे प्रति स्नेह के कारण इसको व्यक्त करता हूं।

पातकं दहनस्यास्य सदाशिव ऋषिःस्मृतः ।
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च भुवनेशी प्रकीर्त्तिता ।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्त्तितः ॥

इस कवच के ऋषि सदाशिव, छंद अनुष्टुप्, देवता भुवनेश्वरी और धर्मार्थकाममोक्ष के निमित्त इसका विनियोग है।

ऐं बीजं मे शिरः पातु ह्रीं बीजं वदनं मम ।
श्रीं बीजं कटिदेशन्तु सर्वांगं भुवनेश्वरी ।
दिक्षु चैव विदिक्ष्वीयं भुवनेशी सदावतु ॥

ऐं मेरे मस्तक की, ह्रीं मेरे मुख की, श्रीं मेरे कमर की और भुवनेश्वरी मेरे सर्वांग की रक्षा करे। क्या दिशा क्या विदिशा सर्वत्र भुवनेशी ही मेरी रक्षा करे।

अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोऽपि धनेश्वरः ।
तस्मात्सदा प्रयत्नेन पठेयुर्मानवा भुवि ॥

इस कवच को पढ़ने के प्रसाद से कुबेर जी तत्काल धनाधिपति हैं। अतएव साधकों को इसका सदा पाठ करना चाहिए।

भैरवी-मंत्र

हसरैं हसकलरीं हसरौः ।
हसरैं हसकलरीं हसरौः ॥

भैरवी ध्यान

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां ।
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम् ।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्तारविन्दश्रियं ।
देवीं बद्धहिमांशुरक्तमुकुटां वन्दे समन्दस्मिताम् ॥

देवी के देह की कान्ति उदय हुए सहस्र सूर्य के समान है। रक्त वर्ण वस्त्र पहिने, गले में मुण्ढमाला और दोनों स्तन रक्त से भीगे हुए हैं। इनके चारो हाथों में जपमाला, पुस्तक, अभय मुद्रा, तथा वर मुद्रा और ललाट में चन्द्र विद्यमान है। इनके तीनों नेत्र लालकमल के समान हैं। मस्तक में रत्न जड़ित मुकुट और मुख पर मृदु हास्य विराजित है।

जप होम

दीक्षां प्राप्य जपेन्मंत्रं तत्त्वलक्षं जितेन्द्रियः ।
पुष्पैर्भानुसहस्राणि जुहुयाद्ब्रह्मवृक्षजैः ॥

उपरोक्त मन्त्र का दश लाख जप करने से पुरश्चरण पूर्ण होता है और ढाक के फूलों से बारह हजार होम करना उचित रहता है।

भैरवी-स्तव

स्तुत्याऽनया त्वां त्रिपुरे स्तोष्येऽभीष्टफलाप्तये ।
यया व्रजन्ति तां लक्ष्मीं मनुजाः सुरपूजिताम् ॥

हे त्रिपुरे ! मैं वांछित फल प्राप्त होने की आशा से तुम्हारी स्तुति करता हूं। इस स्तुति के द्वारा मनुष्यगण देवताओं से पूजित धन देवी को प्राप्त करते हैं।

ब्रह्मादयः स्तुतिशतैरपि सूक्ष्मरूपां ।
जानन्ति नैव जगदादिमनादिमूर्त्तिम् ।
तस्माद्वयं कुचनतां नवकुंकुमाभां ।
स्थूलां स्तुमः सकलवाङ्मयमातृभूताम् ॥

हे जननि ! तुम जगत् की आद्या हो। तुम्हारा आदि नहीं है। इसी कारण ब्रह्मादि देवतागण भी सैकड़ों स्तुति करके सूक्ष्मरूपिणी तुमको समझ पाने में समर्थ नहीं हैं। उनकी ऐसी वाक्सम्पत्ति ही नहीं हो पाती है, कि जो तुम्हारी स्तुति करने में समर्थ हों। इस कारण हम कुंकुम के समान कांतिवाली वाक्यरचना की जननी उन्नत पुष्टस्तन वाली तुम्हारी स्तुति-गान करते हैं।

सद्यः समुद्यतसहस्रदिवाकराभां ।
विद्याक्षसूत्रबरदाभयचिह्नहस्ताम् ।

नेत्रोत्पलैस्त्रिभिरलंकृतवक्त्रपद्मां ।
त्वां हारभाररुचिरां त्रिपुरे भजामः ॥

हे त्रिपुरे ! तुम्हारे देह की कांति नये उदित होते हजार सूर्यों के समान उज्ज्वल है। तुम चारों हाथों में विद्या, अक्षयसूत्र और अभय धारण करती हो। तुम्हारे तीनों नेत्रकमलों से मुखकमल अलंकृत हुआ है। तुम्हारा गला हार से विराजमान है। ऐसी मैं तुम्हारी आराधना करता हूं।

सिन्दूरपूररुचिरं कुचभारनम्रं ।
जन्मान्तरेषु कृतपुण्यफलैकगम्यम् ।
अन्योन्यभेदकलहाकुलमानसास्ते ।
जानन्ति किं जडधियस्तव रूप मम्ब ॥

हे जननि ! तुम्हारा रूप सिन्दूर के समान लालवर्णा है। तुम्हारा देहांश भारी एवं उन्नत स्तनों के भार से झुक रहा है, जिन्होंने जन्म जन्मान्तर से बहुत पुण्य संचय किया है। वही उस पुण्य के प्रभाव से तुम्हारा ऐसा रूप देखने में समर्थ होगा। जो पुरुष निरंतर परस्पर कलह से कुंठित हैं, वह जड़मती पुरुष तुम्हारा ऐसा रूप किस प्रकार जान सकते हैं ?

स्थूलां वदन्ति मुनयः श्रुतयो गृणन्ति ।
सूक्ष्मां वदन्ति वचसामधिवासमन्ये ।
त्वां मूलमाहुस्परे जगतां भवानि ।
मन्यामहे वयमपारकृपाम्बुराशिम् ॥

हे भवानी ! मुनिगण तुमको स्थूल कहकर वर्णन करते हैं। श्रुतियें तुमको स्थूल कहकर स्तुति करती हैं। कोई जन तुमको वाक्य की अधिष्ठात्री देवी कहते हैं। अपरापर अनेक विद्वान पुरुष जगत् का मूल कारण कहते हैं। किन्तु मैं तुम्हें केवल मात्र दया की देवी करुणेश्वरी जानता हूं।

चन्द्रावतंसकलितां शरदिन्दुशुभ्रां ।
पञ्चाशदक्षरमयीं हृदि भावयन्ति ।
त्वां पुस्तकं जपवटीममृताढ्यकुम्भं ।
व्याख्याञ्च हस्तकमलैर्दधतीं त्रिनेत्राम् ॥

हे जननि ! तुम चंद्र से अलंकृत हो। तुम्हारे देह की कांति शरद के चंद्रमा के समान शुभ है। तुम्हीं पचास वर्णों वाली वर्णमाला हो। तुम्हारे चार हाथों में पुस्तक, जपमाला, सुधा-वर्ण कलश और व्याख्यानमुद्रा विद्यमान है। तुम्हीं त्रिनेत्रा हो। साधक इस प्रकार से तुम्हारा अपने हृदयकमल में ध्यान करते हैं।

शम्भुस्त्वमद्रितनया कलितार्द्धभागो ।
विष्णुस्त्वमन्यकमलापरिबद्धदेहः ।
पद्मोद्भवस्त्वमसि वागाधिवासभूमिः ।
येषां क्रियाश्च जगति त्रिपुरे त्वमेव ॥

हे जननि ! तुम्हीं अर्द्धनारीश्वर शंभु रूप से शोभायमान हो। तुम्हीं कमलाश्लिष्टा विष्णु रूपिणी हो। तुम्हीं कमलयोनि ब्रह्मस्वरूपिणी हो। तुम्हीं वागाधिष्ठात्री—देवी हो। ब्रह्मादिक की सृष्टिक्रिया शक्ति भी केवल तुम्हीं हो।

आकुञ्च्य वायुमवजित्य च वैरिषट्क-
मालोक्य निश्चलधियो निजनासिकाग्रम् ।
ध्यायन्ति मूर्ध्नि कलितेन्दुकलावतंसं ।
तद्रूपमम्ब कृति तस्तरुणार्कमित्रम् ॥

हे अम्बे ! विद्वान् पुरुष वायु का निरोध करके काम क्रोधादि छः शत्रुओं को जीतकर अपनी नासिका का अग्र भाग देखते हुए चन्द्रस्वरूपी नये उदय हुए सूर्य समान तुम्हारे रूप का सहस्र कमल में ध्यान करते हैं।

त्वं प्राप्य मन्मथरिपोर्वपुरर्द्धभागं ।
सृष्टिं करोषि जगतामिति वेदवादः ।
सत्यं तदद्रितनये जगदेकमात-
र्नोचेदशेषजगतः स्थितिरेव न स्यात् ॥

हे पर्वतराजपुत्रि ! तुमने काम का दमन करने वाले महादेव के शरीर का अर्द्धांश अवलम्बन करके जगत् को उत्पन्न किया है। वेद में जो इस प्रकार वर्णन है, वह सत्य ही जान पड़ता है। हे विश्वजननि ! यदि ऐसा न होता, तो कभी जगत् की स्थिति संभव नहीं होती।

पूजां विधाय कुसुमैः सुरपादपानां ।
पीठे तवाम्ब कनकाचलगह्वरेषु ।
गायन्ति सिद्धवनिताः सह किन्नरीभि-
रास्वादितामृतरसारुणपद्मनेत्राः ॥

हे जननि ! जो कि सिद्धों की स्त्रियों के किन्नरीगणों के सहित एकत्र मिलकर आसव रस पान किया, इस कारण उनके नेत्रकमलों ने लोहित कांति धारण की है। वह पारिजातादि सुरतरु के फूलों से तुम्हारी पूजा करती हुई कैलाश पर्वत की कन्दराओं में तुम्हारे नाम का गायन करती हैं।

विद्युद्विलासवपुषं श्रियमुद्वहन्तीं ।
यान्तीं स्ववासभवनाच्छिवराजधानीम् ।
सौन्दर्यराशिकमलानि विकाशयन्तीं ।
देवीं भजे हृदि परामृतसिक्तगात्राम् ॥

हे देवी ! जिन्होंने विजली की रेखा के समान दीप्तमान् देह धारण किया है। जो अतिशय शोभा से युक्त है। जो अपने वासस्थान मूलाधार पद्म से सहस्र बार कमल में जाने के समय सुषुम्णा में स्थित पद्म समूह को विकसित करती है। जिनका शरीर परम अमृत से अभिषिक्त है। वह देवी तुम्हीं हो। मैं तुम्हारी आराधना करता हूँ।

आनन्दजन्मभवनं भवनं श्रुतीनां ।
चैतन्यमात्रतनुमम्ब तवाश्रयामि ।
ब्रह्मेशविष्णुभिरुपासितपादपद्मां ।
सौभाग्यजन्मवसतीं त्रिपुरे यथावत् ॥

हे त्रिपुरे ! तुम्हारा देह आनन्द भवन है। तुम्हारे शरीर से ही श्रुतियाँ उत्पन्न हुई हैं। यह देह चैतन्यमय है। ब्रह्मा, विष्णु और महादेव तुम्हारे चरणकमलों की आराधना करते

हैं। सौभाग्य तुम्हारे शरीर का आश्रय करके शोभा पाता है। मैं तुम्हारे ऐसे शरीर का आश्रय ग्रहण करता हूं।

सर्व्वार्थभावि भुवनं सृजतीन्दुरूपा।
या तद्विर्भत्त पुरनर्कतनुः स्वशक्त्या।
ब्रह्मात्मिका हरति तत् सकलं युगान्ते।
तां शारदां मनसि जातु न विस्मरामि॥

हे जननि! जो चन्द्ररूप से भवनों की सृष्टि, सूर्यरूप से पालन और प्रलय काल में अग्नि रूप से उस सबको ध्वंस करती हैं, उस शारदा देवी को मैं कभी न भूल सकूँ।

नारायणीति नरकार्णवतारिणीति।
गौरीति खेदशमनीति सरस्वतीति।
ज्ञानप्रदेति नयनत्रयभूषितेति।
त्वामद्रिराजतनये विबुधा वदन्ति॥

हे पर्वतराजकन्ये! साधकगण तुम्हारी नारायणी, नरकरूप सागर से तारने वाली देवी, गौरी, दुःखनाशिनी, सरस्वती, ज्ञानदाती, और तीन नेत्रों से भूषिता इत्यादि रूप से आराधना करते हैं।

ये स्तुवन्ति जगन्माता श्लोकैर्द्वादशभिः क्रमात्।
त्वामनुप्राप्य वाक्सिद्धि प्राप्नुयुस्ते परां गतिम्॥

हे जगन्मातः! जो पुरुष इन बारह श्लोकों से तुम्हारी

स्तुति करते हैं, वह तुमको प्राप्त करके वाक्सिद्धि को प्राप्त कर लेते हैं, और देह के अंत में परमगति को प्राप्त होते हैं।

भैरवी-कवच

भैरवी कवचस्यास्य सदाशिव ऋषिः स्मृतः।
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च भैरवी भयनाशिनी।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्त्तितः॥

भैरवी कवच के ऋषि सदाशिव, छंद अनुष्टुप्, देवता भयनाशिनी भैरवी और धर्मार्थ काममोक्ष की प्राप्ति के लिए इसका विनियोग कहा गया है।

हसरैं मे शिरः पातु भैरवी भयनाशिनी।
हसकलरीं नेत्रञ्च हसरौश्च ललाटकम्।
कुमारी सर्व्वगात्रे च वाराही उत्तरे तथा।
पूर्व्वे च वैष्णवी देवीं इन्द्राणीं मम दक्षिणे।
दिग्विदिक्षु सर्व्वत्रैव भैरवी सर्व्वदावतु।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्देविभैरवीम्।
कल्पकोटिशतेनापि सिद्धिस्तस्य न जायते॥

हसरैं मेरे मस्तक की, हसकलरीं मेरे नेत्र की, हसरौः मेरे ललाट की, और कुमारी मेरे गात्रकी रक्षा करें। वाराही उत्तर दिशा में, वैष्णवी पूर्व दिशा में, इन्द्राणी दक्षिण दिशा में, और भैरवी दिशा विदिशा में सर्वत्र सदा मेरी रक्षा करें। इस कवच को बिना जाने जो कोई भैरवी मंत्र का जप करता है, सौ करोड़ कल्प में भी उसको सिद्धि प्राप्त नहीं होती।

छिन्नमस्ता मन्त्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा ॥

छिन्नमस्ता ध्यान

प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरःकर्त्तृकां ।
दिग्वस्त्रां स्वकबन्धशोणितसुधाधारां पिबन्तीं मुदा ॥
नगाबद्धशिरोमणिं, त्रियनयनां हृद्युत्पलालंकृतां ।
रत्यांसक्तमनोभवोपरि दृढां ध्यायेज्जपासन्निभाम् ॥
दक्षे चातिसिताविमुक्तचिकुरा कर्तृस्तथा खर्परं ।
हस्ताभ्यां दधती रजोगुणभवो नाम्नापिसा वर्णिनी ॥
देव्याश्छिन्नकबन्धतः पतदसृग्धारां पिबन्तीं मुदा ।
नागाबद्धशिरोमणिर्म्मनुविदा ध्येय सदा सा सुरैः ॥
वामे कृष्णतनूस्तथैव दधती खंगं तथा खर्परं ।
प्रत्यालीढपदाकबन्धविगलद्रक्तं पिबन्ती मुदा ॥
सैषा या प्रलये समस्तभुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी ।
शक्तिः सापि परात् परा भगवती नाम्ना
परा डाकिनी ॥

देवी प्रत्यालीढपदा हैं, अर्थात् युद्ध के लिये आगे चरण किये और एक पीछे करके वीर वेष करके खड़ी हैं। इन्होंने छिन्नशिर

और खंग धारण किया हुआ है। देवी नग्न हैं और अपने छिन्न गले से निकली हुई शोणित धारा का पान करती हैं। उनके मस्तक में सर्पाबद्ध मणि है, तीन नेत्र हैं और वक्षःस्थल कमलों की माला से अलंकृत है। यह रति में आसक्त काम करके ऊपर दंडायमान है। इनकी देह की कांति जपा पुष्प के समान रक्त वर्णा है। देवी के दहिने भाग में श्वेत वर्ण वाली, खुले केश, कैंची और खर्पर धारिणी एक देवी खड़ी है जिनका नाम 'वर्णिनी' है। यह वर्णिनी देवी के छिन्न गले से गिरती हुई रक्त-धारा का पान करती है। इनके मस्तक में नागाबद्ध मणि है। बायीं तरफ खंग खर्पर धारिणी कृष्ण वर्णा दूसरी देवी खड़ी है। यह देवी के छिन्न गले से निकली हुई रुधिर धारा का पान करती हैं। इनका दाहिना पाँव आगे और बायाँ पाँव पीछे के भाग में स्थित है। यह प्रलय काल के समय सम्पूर्ण जगत् का भक्षण करने में समर्थ हैं। इनका नाम 'डाकिनी' है।

छिन्नमस्ता स्तोत्र

नाभौ शुद्धसरोजरक्तविलसद्बन्धूकपुष्पारुणं ।
भास्वद्भास्करमण्डलं तदुदरे तद्योनिचक्रम्महत् ॥
तन्मध्ये विपरीत मैथुन रतप्रद्युम्नतत्कामिनी ।
पृष्ठस्थां तरुणार्ककोटिविलसत्तेजः स्वरूपां शिवाम् ॥

उनकी नाभि में खिला हुआ कमल है। उसके मध्य में बंधूक पुष्प के समान लाल वर्ण प्रदीप्त सूर्य मण्डल है, उस रवि मण्डल के मध्य में बड़ा योनि चक्र है। उसके मध्य में विपरीत मैथुन क्रीडा में आसक्त कामदेव और रति विराजमान हैं। इन कामदेव और रति की पीठ में प्रचण्ड अर्थात छिन्नमस्ता स्थित

हैं। यह करोड़ तरुण सूर्य के समान तेज शालिनी और मंगलमयी हैं।

वामे छिन्नशिरोधरां तदितरे पाणौ महत्कर्तृकां।
प्रत्यालीढपदां दिगन्तवसनामुन्मुक्तकेशव्रजाम्॥
छिन्नात्मीयशिरः समुल्लसदसृग्धारां पिबन्तीं परां।
बालादित्यसमप्रकाशविलसन्नेत्रत्रयोद्भासिनीम्॥

इनके बायें हाथ में छिन्न मुण्ड है। दाहिने हाथ में भीषण कृपाण है। देवी एक चरण आगे एक चरण पीछे किये वीरवेष से स्थित हैं। दिशा के वस्त्रों को धारण किये हुए हैं। उनके केश खुले हुए हैं। यह अपने सिर को काटकर उसकी रुधिर धारा का पान कर रही हैं। इनके तीनों नेत्र प्रातः कालीन सूर्य के समान प्रकाशमान हैं।

वामादन्यत्र नालं बहु बहुलगलद्रक्तधाराभिरुच्चैः।
पायन्तीमस्थिभूषां करकमललसत्कर्तृकामुग्ररूपाम्॥
रक्तामारक्तकेशीमपगतवसनां वर्णिनीमात्मशक्ति।
प्रत्यालीढोरुपादामरुणितनयनां योगिनीं योगनिद्राम्॥

इस देवी के दक्षिण और वाम भाग में निज शक्तिरूपा दो योगिनियाँ विराजमान हैं। इनके दक्षिण भाग स्थित योगिनी के हाथ में बड़ी कैंची है। यह योगिनी की उग्र मूर्ति है। यह रक्तवर्णा और रक्त केशी हैं। यह नग्न है और प्रत्यालीढपद से स्थित हैं। इनके नेत्र लाल हैं। इसको छिन्न मस्ता देवी अपनी देह से निकलती हुई रुधिर धारा का पान करा रही है।

दिग्वस्त्रां मुक्तकेशीं प्रलयघटघटाघोररूपां प्रचण्डां।
दंष्ट्रांदुष्प्रेक्ष्यवक्त्रोदरविवरलसल्लोलजिह्वाग्रभागाम्॥
विद्युल्लोलाक्षियुग्मां हृदयतटलसद्भोगिभीमां सुमूर्ति।
सद्यश्छिन्नात्मकण्ठप्रगलितरुधिरैर्डाकिनीं वर्द्धयन्तीम्॥

जो योगिनी वाम भाग में स्थित है, वह नग्न है और उसके केश खुले हुए हैं। उसकी मूर्ति प्रलय काल के मेघ के समान भयंकर है। वह प्रचण्ड स्वरूपा है। इसका मुखमण्डल दांतों से दुर्निरीक्ष हो रहा है। ऐसे मुख मण्डल के मध्य में चलायमान जीभ शोभित हो रही है। इसके तीनों नेत्र बिजली के समान चंचल हैं। इसके हृदय में सर्प विराजमान है। इसकी अत्यन्त भयानक मूर्ति है। छिन्नमस्ता देवी इस डाकिनी को अपने कंठ के रुधिर से तृप्त कर रही हैं।

ब्रह्मेशानाच्युताद्यैः शिरसि विनिहितामंदपादार-
विंदामात्मज्ञैर्योगिमुख्यैः सुनिपुणमनिशं चिन्तिता-
चित्यरूपाम् संसारे सारभूतां त्रिभुवनजननीं छिन्न
मस्तां प्रशस्तामिष्टां तामिष्टदात्रीं कलिकलुषहरां
चेतसा चिन्तयामि॥

ब्रह्मा, शिव और विष्णु आदि आत्मज्ञ योगीन्द्रगण इन छिन्नमस्ता देवी के पादारविन्द को मस्तक में धारण करते हैं। वह प्रतिदिन इनके अचिन्त्य रूप का मनन करते हैं। यह संसार का सारभूत हैं। यह तीनों लोकों को उत्पन्न करने वाली हैं। यह मनोरथों को सिद्ध करने वाली हैं। इस कारण, कलियुग के पापों को हरने वाली इन देवी जी का मैं मन में ध्यान करता हूँ।

उत्पत्तिस्थितिसंहृतीर्घटयितुं धत्ते त्रिरूपां तनुं ।
त्रैगुण्याज्जगतो मदीयविकृतिर्ब्रह्माच्युतः शूलभृत् ॥
तामाद्यां प्रकृतिं स्मरामि मनसा सर्व्वार्थसंसिद्धये ।
यस्याः स्मेरपदारविन्दयुगले लाभं भजन्तेऽमराः ॥

यह संसार की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश करने के निमित्त ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र इन तीन मूर्तियों को धारण करती हैं। देवता इनके खिले कमल के समान दोनों चरणों का सदा भजन करते रहते हैं। सम्पूर्ण अर्थों की सिद्धि के निमित्त छिन्नमस्ता देवी का मन में ध्यान करता हूँ।

अपि पिशित-परस्त्री-योगपूजापरोऽहं ।
बहुविधजडभावारम्भसम्भावितोऽहम् ॥
पशुजनविरतोऽहं भैरवीसंस्थितोऽहं ।
गुरुचरणपरोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥

मैं सदा मद्य माँस, परस्त्री आसक्त तथा योगपरायण हूँ। मैं जगदम्बा के चरण कमल में, संलिप्त हो बाह्य जगत् में रहकर जडभावापन्न हूँ। मैं पशुभावापन्न साधक के अंग से अलग हूँ। मैं सदा भैरवीगणों के मध्य में स्थित रहता हूँ। मैं गुरु के चरण चमलों का ध्यान करता रहता हूँ। मैं भैरव स्वरूप और मैं ही शिवस्वरूप हूँ।

इदं स्तोत्रं महापुण्यं ब्रह्मणा भाषितं पुरा ।
सर्व्वसिद्धिप्रदं साक्षान्महापातकनाशनम् ॥

यह महापुण्य का देने वाला स्तोत्र पहिले ब्रह्मा जी ने कहा

है। यह स्तोत्र सम्पूर्ण सिद्धियों का देने वाला है। बड़े बड़े पातक और उपपातकों का यह नाश करने वाला है।

यः पठेत प्रातरुत्थाय देव्याः सन्निहितोऽपि वा ।
तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि वाञ्छितार्थप्रदायिनी ॥

जो मनुष्य प्रातः काल के समय शय्या से उठकर वा छिन्नमस्ता देवी के पूजा काल में इस स्तोत्र का पाठ करता है, हे देवि ! उनकी मनोकामना शीघ्र पूर्ण ही होती है।

धनं धान्यं सुतां जायां हयं हस्तिनमेव च ।
वसुन्धरां महाविद्यामष्टसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥

इस स्तोत्र के पाठ करने वाले मनुष्य को धन, धान्य, पुत्र, कलत्र, घोड़ा, हाथी और पृथ्वी प्राप्त होती है। वह अष्ट सिद्धि और नव सिद्धियों को निश्चय ही लाभ पाता है।

वैयाघ्राजिनरञ्जितस्वजघने रम्ये प्रलम्बोदरे ।
खर्व्वेऽनिर्वचनीयपर्व्वसुभगे मुण्डावलीमण्डिते ॥
कर्त्रीं कुन्दरुचिं विचित्ररचनां ज्ञानं दधाने पदे ।
मातर्भक्तजनानुकम्पितमहामायेऽस्तु तुभ्यं नमः ॥

हे मातः ! तुमने व्याघ्रचर्म द्वारा अपनी जंघाओं को रंजित किया हुआ है। तुम अत्यन्त मनोहर आकृति वाली हो। तुम्हारा उदर अधिक लम्बायमान है। तुम छोटी आकृति वाली हो। तुम्हारा देह अनिर्वचनीय त्रिवली से शोभित है। तुम मुक्ता से विभूषित हो। तुमने हाथ में कुन्दवत् श्वेत वर्ण विचित्र कतरनी शस्त्र धारण कर रखा है। तुम भक्तों के ऊपर सदा दया करती हो। हे महामाये ! तुमको मैं बारम्बार नमस्कार करता हूं।

छिन्न मस्ता कवच

हुं बीजात्मिका देवी मुण्डकर्त्तृ धरापरा ।
हृदयं पातु सा देवी वर्णिनी डाकिनीयुता ॥

देवी डाकिनी से युक्त मुण्डकर्त्तृ को धारण करने वाली, हूँ बीजयुक्त महादेवी मेरे हृदय की रक्षा करें।

श्रीं ह्रीं हुं ऐं चैव देवी पूर्व्वस्यां पातु सर्वदा ।
सर्व्वांगं मे सदा पातु छिन्नमस्ता महाबला ॥

श्रीं ह्रीं हुं ऐं बीजात्मिका देवी मेरी पूर्व की ओर छिन्न-मस्ता सदा मेरे सर्वांग की रक्षा करे।

वज्रवैरोचनीये हुं फट् बीजसमन्विता ।
उत्तरस्यां तथाग्नौ च वारुणे नैर्ऋ तेऽवतु ॥

'वज्रवैरोचनीये हूं फट्' देवी उत्तर में, अग्नि, वरुण और नैऋत्य दिशा में रक्षा करे।

इन्द्राक्षी भैरवी चैवासितांगी च संहारिणी ।
सर्व्वदा पातु मां देवी चान्यान्यासु हि दिक्षु वै ॥

इद्राक्षी, भैरवी, असितांगी और संहारिणी देवी सर्वदा मेरी सब दिशाओं में मेरी कक्षा करे।

इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेच्छिन्नमस्तकाम् ।
न तस्य फलसिद्धिः स्यात्कल्पकोटिशतैरपि ॥

इस कवच को बिना जाने जो पुरुष छिन्नमस्ता का मंत्र जपता है वह सौ करोड़ कल्प में भी उसका फल प्राप्त नहीं कर पाता है।

धूमावती मन्त्र

घूँ धूँ धूमावती स्वाहा ।

धूमावती का ध्यान

विवर्णा चञ्चला रुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विवर्णकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ॥
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा ।
सूर्यहस्तातिरूक्षाक्षी धृतहस्ता वरान्विता ॥
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्द्दिता नित्यं भयदा कलहप्रिया ॥

धूमावती देवी विवर्णा, चंचला, रुष्टा और दीर्घांगी हैं। इनके पहिनने के वस्त्र मलिन, केश विवर्ण और रूक्ष हैं। सम्पूर्ण दाँत छीदे छीदे से और दोनों स्तन लम्बे हैं। यह विधवा और काकध्वजा वाले रथ में विराजमान रहती हैं। देवी के दोनों नेत्र रूक्ष हैं। इनके एक हाथ में सूर्य और दूसरे हाथ में वरमुद्रा है। इनकी नासिका बड़ी और देह तथा नेत्र कुटिल हैं। यह भूख प्यास से आतुर हैं। इसके अतिरिक्त यह भयंकर मुख वाली और कलह में तत्पर है।

धूमावती स्तव

भद्रकाली महाकाली डमरूवाद्यकारिणी ।
स्फारितनयना चैव टकटंकितहासिनी ॥

धूमावती जगत्कर्त्री शूर्पहस्ता तथैव च ।
अष्टनामात्मकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिसंयुक्तः ॥
तस्य सर्व्वार्थसिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं हि पार्वति ॥

भद्रकाली, महाकाली, डमरू बाजा बजाने वाली, खुले हुए नेत्र वाली, टंक टंक करके हँसने वाली, धूमावती जगत्कर्त्री, छाज हाथ में लिये हुए है। यह धूमावती का अष्टनामात्मक स्तोत्र पढ़ने से सर्वार्थ की सिद्धि होती है।

धूमावती कवच

धूमावती मुखं पातु धूं धूं स्वाहा स्वरूपिणी ।
ललाटे विजया पातु मालिनी नित्यसुंदरी ॥

धं धूं स्वाहा स्वरूपिणी धूमावती मेरे मुख की और नित्य सुन्दरी, मालिनी और विजया मेरे ललाट की रक्षा करें।

कल्याणी हृदयं पातु हसरीं नाभिदेशके ।
सर्व्वांगं, पातु देवेसी निष्कला भगमालिनी ॥

कल्याणी मेरे हृदय की, हसरीं मेरी नाभि की और निष्कला भगमालिनी देवी मेरे सवाँग की रक्षा करें।

सुपुण्यं कवचं दिव्यं यः पठेद्भक्तिसंयुक्तः ।
सौभाग्यमतुलं प्राप्त चांते देवीपुरं यथौ ॥

इस पवित्र दिव्य कवच का भक्तिपूर्वक पाठ करने मात्र से इस लोक में अतुल सुख संभोग कर अन्त समय देवीपुर का लाभ प्राप्त हो जाता है।

—:०:—

बगला मन्त्र[१]

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व्वदुष्टानां ।
वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय ।
कीलय बुद्धि नाशाय ह्लीं ॐ स्वाहा ॥

बगलामुखी ध्यान

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डयरत्नवेदी-
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषितांगीं ।
देवीं स्मरामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून्
परिपीडयतीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां
द्विभुजां नमामि ॥

सुधा सागर में मणिमय का मण्डप है। उसमें रत्न निर्मित वेदी के ऊपर सिंहासन है। बगलामुखी देवी उसी सिंहासन के ऊपर विराजमान हैं। यह पीतवर्ण और पीले वस्त्र पहिने हुए हैं। पीत वर्ण के ही इनके गहने और पीत वर्ण की ही माला से यह विभूषित हैं। इनके एक हाथ में मुद्गर और दूसरे हाथ में

---

१. इस महाविद्या पर मेरी अलग से एक पुस्तक उपलब्ध है— त्रैलोक्य स्तम्भनि बगलामुखी महासाधना।

वैरी की जीभ है। यह बायें हाथ में शत्रु की जीभ का अग्र भाग धारण करके दाहिने हाथ के गदाघात से शत्रु को पीड़ित कर रही हैं। बगलामुखी देवी पीत वस्त्र से सज्जित दो भुजा वाली हैं।

बगलामुखी जप होम

साधक पीले वस्त्र पहिनकर हल्दी की गाँठों से बनी माला से नित्य एक लाख जप करें। पीले वर्ण के पुष्पों से ही दशांश होम करें।

बगला स्तोत्र

बगला सिद्धविद्या च दुष्टनिग्रहकारिणी।
स्तम्भिन्यार्काषणी चैव तथोच्चाटनकारिणी॥
भैरवी भीमनयना महेशगृहिणी शुभा।
दशानामात्मकं स्तोत्रं पठेद्वा पाठयेद्यदि॥
स भवेत् मंत्रसिद्धश्च देवीपुत्र इव क्षितौ॥

बगला, सिद्ध विद्या, दुष्टों का निग्रह करने वाली, स्तम्भिनी, आकर्षिणी, उच्चाटन करने वाली, भैरवी, भयंकर नेत्रों वाली, महेश की पत्नी शुभा दशनामात्मक देवी स्तोत्र का जो साधक पाठ करता है या दूसरे से पाठ कराता है, वह मन्त्र सिद्ध होकर पार्वती के पुत्रके समान पृथ्वी पर विचरण करता है।

बगला कवच

ॐ ह्लीं मे हृदयं पातु पादौ श्रीबगलामुखी।
ललाटे सततं पातु दुष्टनिग्रहकारिणी॥

'ओ३म् ह्लीं' मेरे हृदय की श्रीबगलामुखी मेरे दोनों पैरों की और दुष्टनिग्रहकारिणी सदा मेरे ललाट की रक्षा करें।

रसनां पातु कौमारी भैरवी चक्षुषोर्म्मम।
कटौ पृष्टे महेशानी कर्णौ शंकरभामिनी॥

कौमारी मेरी जीभ की, भैरवी मेरे नेत्रों की महेशानी मेरी कमर की तथा पीठ की, शंकर की पत्नी मेरे कानों की रक्षा करें।

वर्ज्जितानि तु स्थानानि यानि च कवचेन हि।
तानि सर्व्वाणि मे देवी सततं पातु स्तम्भिनी॥

जो जो स्थान कवच में नहीं कहे गये, स्तम्भिनी देवी मेरे उन सब स्थानों की सदा रक्षा करें।

अज्ञात्वा कवचं देवि यो भजेद्बगलामुखीम्।
शस्त्राघातमवाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः॥

हे देवि! इस कवच को जाने बिना जो साधक बगलामुखी की उपासना करता है, उसकी शस्त्राघात से मृत्यु होती है। इसमें संशय नहीं करना।

—:०:—

मातंगी मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंगयै फट् स्वाहा ।

मातंगी ध्यान

श्यामांगीं शशिशेखरां त्रिनयनां रत्नसिंहासन-
स्थिताम् वेदैः बाहुदण्डैरसिखेटकपाशांकुशधराम् ।।

मातंगी देवी श्याम वर्ण, अर्द्ध चन्द्रधारिणी और त्रिनयन हैं, यह चार हाथ में खंग, खेटक पाश और अंकुश यह चारों अस्त्र धारण करके रत्न निर्मित सिंहासन पर विराजमान हैं।

मातंगी स्तव

ईश्वर उवाच

आराध्य मातश्चरणाम्बुजे ते ब्रह्मादयो
विश्रुतकीर्त्तिमापुः ।
अन्ये परं वा विभवंमुनीन्द्राःपरां श्रियं
भक्तिभरेण चान्ये ।।

हे मातः ! ब्रह्मादि देवताओं ने तुम्हारे चरण कमलों की आराधना करके कीर्ति लाभ प्राप्त किया है। दूसरे मुनीन्द्र भी परम विभव को प्राप्त हुए हैं। और अपर अनेकों ने भक्ति

भाव से तुम्हारे चरण कमलों की आराधना करके अत्यन्त लाभ किया है।

नमामि देवीं नवचन्द्रमौलिं मातंगिनीं
चन्द्रकलावतंसाम् ।
आम्नायकृत्यप्रतिपादितार्थं प्रबोधयन्तीं हृदिसादरेण ।।

जिनके माथे पर चन्द्रमा शोभा पाता है। जो वेद प्रतिपादित अर्थ का सर्वदा आदर से हृदय में प्रबोधित करती हैं। उन्हीं मातंगिनी देवी को नमस्कार है।

विनम्रदेवासुरमौलिरत्नैर्विराजितं ते चरणारविन्दम् ।
अकृत्रिमाणां वचसां विगुल्फं पादात्पदं
सिञ्जितनूपुराभ्याम् ।
कृतार्थयन्तीं पदवीं पदाभ्यामास्फालयन्तीं
कुचवल्लकीं ताम् ।
मातंगिनीं मद्धृदयेधिनोमि लीलंकृतां
शुद्ध नितम्बबिम्बाम् ।।

हे देवी ! तुम्हारे चरण कमल सिर झुकाये देवासुरों के शिरों के रत्न द्वारा विराजित हैं। तुम अकृतिम वाक्य के अनुकूल हो। तुम्हीं शब्दायमान नपुरयुक्त अपने दोनों चरणों से इस पृथ्वी मण्डल को कृतार्थ करती हो। तुम्हीं सदा वीणा बजाती हो। तुम्हारे नितम्ब अत्यन्त शुद्ध हैं। मैं तुम्हारा हृदय में ध्यान करता हूं।

तालीदलेनार्पितकर्णभूषां माध्वीमदाघूर्णितनेत्रपद्माम् ।
घनस्तनीं शम्भुवधूं नमामि तडिल्लता-
कान्तवलक्षभूषाम् ॥

तुमने ताल का करों में विभूषण धारण किया है, माध्वीक मद्यपान से तुम्हारे नेत्र कमल विघूर्णित होते हैं। तुम्हारे स्तन अत्यन्त घने हैं। तुम महादेव जी की वधू हो। तुम्हारी कान्ति विद्युत के समान मनोहर है। तुमको नमस्कार है।

चिरेण लक्षं प्रददातु राज्यं स्मरामि
भक्त्या जगतामधीशे ।
वलित्रयांगं तव मध्यमम्ब नीलोत्पलं
सुश्रियमावहन्तीम् ॥

हे मातः ! मैं भक्ति सहित तुम्हारा स्मरण करता हूँ। तुम बहुतकाल का नष्ट हुआ राज्य प्रदान करती हो। तुम्हारी देह का मध्य भाग तीन वलियों से सज्जित है। तुमने नीलोत्पल के समान श्री धारण कर रखी है।

कान्त्या कटाक्षैर्जगतां त्रयाणां विमोहयतीं
सकलान् सुरेशि ।
कदम्बमालाञ्चितकेशपाशं मातंगकन्यां
हृदि भावयामि ॥

हे सुरेश्वरी ! तुम कांति और कटाक्ष द्वारा तीनों लोकों को मोहित करती हो। तुम्हारे केश कदम्ब माला से बंधे हुए हैं। तुम्हीं मातंग कन्या हो। मैं तुम्हारी हृदय में भावना करता हूँ।

ध्यायेयमारक्तकपोलबिम्बं बिम्बाधर-
न्यस्तललाम वश्यम् ।
अलोललीलाकमलायताक्षं मन्दस्मितं
ते वदनं महेशि ॥

हे देवि ! तुम्हारे जिस मोहक मुख पर गालों के नीचे रक्त वर्ण के होंठ परम सुन्दरता से सुसज्जित हैं, जिसमें चंचल अलकावली विराजमान है। आपके नेत्र बड़े हैं और आपके मुख पर मंद मंद हास्य शोभा पाता है। उसी मुख कमल का मैं ध्यान करता हूं।

स्तुत्याऽनया शंकरधर्मपत्नी मातंगिनीं
वागधिदेवतां ताम ।
स्तुवन्ति ये भक्तियुता मनुष्याःपरां
श्रियं नित्यमुपाश्रयन्ति ॥

जो पुरुष भक्तिमान् होकर शंकर की धर्म पत्नी वाणी की अधिष्ठात्री मातंगिनी की इस स्तव द्वारा स्तुति करता है, वह सर्वदा परम श्री को प्राप्त करता है।

मातंगिनी कवच

शिरोमातंगिनी पातु भुवनेशी तु चक्षुषी ।
तोतला कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं मम ॥

मातंगी मेरे मस्तक की, भुवनेशी मेरे चक्षुकी, तोतला मेरे कर्ण और त्रिपुरा मेरे मुख की रक्षा करें।

पातु कण्ठे महामाया हृदि माहेश्वरी तथा ।
त्रिपुरा पार्श्वयोः पातु गुह्ये कामेश्वरी मम ॥

महामाया मेरे कण्ठ की, माहेश्वरी मेरे हृदय की, त्रिपुरा मेरे पार्श्व की और कामेश्वरी मेरे गुह्य की रक्षा करें ।

ऊरुद्वये तथा चण्डी जंघायाञ्च रतिप्रिया ।
महामाया पदे पायात्सर्वांगेषु कुलेश्वरी ॥

चण्डी दोनों ऊरू की, रतिप्रिया मेरी जंघा की, महामाया मेरे पाँवों की और कुलेश्वरी सर्वांग की रक्षा करें ।

य इदं धारयेन्नित्यं जायते सर्वदानवित् ।
परमैश्वर्य्यमतुलं प्राप्नोति नात्र संशयः ॥

जो पुरुष इस कवच को धारण करते हैं, वह सर्वदानज्ञ होते हैं और अतुल ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं । इसमें सन्देह नहीं करना ।

—:०:—

कमला मन्त्र

(१) श्रीं ।

(२) श्री कमलायै नमः ॥

भगवती कमला की पूजा जपादि करने के लिये उपरोक्त मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का चुनाव करें ।

कमला ध्यान

कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै-
र्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम् ॥
विभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां ।
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

कमला देवी स्वर्ण के समान कान्तिमान् हैं। इनका हिम-गिरि के समान विशाल आकार वाले चार हाथी सूंड उठाकर सुधा से पूर्ण सुवर्ण घड़ों से अभिषेक करते हैं । इनके चार हाथों में वर और अभयमुद्रा तथा दो कमल स्थित हैं । इनके भाल पर रत्न मुकुट हैं और यह कमल पर स्थित हैं ।

कमला स्तोत्र

शंकर उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि लक्ष्मीस्तोत्रमनुत्तमम ।
पठनात् श्रवणाद्यस्य नरो मोक्षमवाप्नुयात् ॥

श्रीमहादेव जी बोले, हे पार्वती ! अब अति उत्तम लक्ष्मी-स्तोत्र कहता हूं, इसको पढ़ने वा सुनने से मनुष्यों को मुक्ति प्राप्त होती है।

गुह्याद् गुह्यतरं पुण्यं सर्वदेवनमस्कृतम् ।
सर्वमंत्रमयं साक्षाच्छ्रृणु पर्वतनन्दिनि ॥

हे पर्वतनन्दिनि ! यह स्तोत्र गुह्य से गुह्यतर सर्वदेवों से नमस्कृत और सर्वमन्त्रमयी है। श्रवण करो।

अनन्तरूपिणी लक्ष्मीरपारगुणसागरी ।[1]
अणिमादिसिद्धिदात्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि लक्ष्मी ! तुम अनन्तरूपिणी और गुणों का सागर हो। तुम्हीं प्रसन्न होकर अणिमादि सिद्धि का प्रसाद देती हो। तुमको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूं।

आपदुद्धारिणी त्वं हि आद्या शक्तिः शुभा परा ।
आद्या आनन्ददात्री च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम्हीं प्रसन्न होकर अपने भक्तों का विपद से उद्धार करती हो। तुम्हीं कल्याणी हो। तुम्हीं आद्या शक्ति हो। तुम्हीं सबकी आदि हो एवं तुम्हीं आनन्ददायिनी हो। तुमको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूं।

इन्दुमुखी इष्टदात्री इष्टमंत्रस्वरूपिणी ।
इच्छामयी जगन्मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

---

१. यह अकार से प्रारम्भ होकर क्षकार पर समाप्त होने वाला विशेष प्रभावशाली स्तोत्र है। —यशपाल

हे देवि जगन्माता लक्ष्मी ! तुम्हीं अभीष्ट प्रदान करती हो। तुम्हारा मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशमान है। तुम्हीं इष्ट-मन्त्र स्वरूपिणी और इच्छामयी हो। तुमको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूं।

उमा उमापतेस्त्वन्तु ह्यत्कण्ठाकुलनाशिनी ।
उर्व्वीश्वरी जगन्मातर्लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे देवि लक्ष्मी ! तुम्हीं उमापति की उमा हो। तुम्हीं पृथ्वी की ईश्वरी हो। तुमको नमस्कार करता हूं।

ऐरावतपतिपूज्या ऐश्वर्याणां प्रदायिनी ।
औदार्य्यगुणसम्पन्ना लक्ष्मि देवि नमोस्तु ते ॥

हे देवि ! तुम्हीं ऐरावतपति देवराज इन्द्र की वन्दनीय हो। तुम्हीं प्रसन्न होने पर सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान कर सकती हो। तुम्हीं उदार गुणों से विभूषित हो। तुमको नमस्कार करता हूँ।

कृष्णवक्षःस्थिता देवि कलिकल्मषनाशिनी ।
कृष्णचित्तहरा कर्त्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवी ! तुम सदा श्रीकृष्ण के वक्षःस्थल में विराजमान रहती हो। तुम्हारे बिना और कोई भी कलिकल्मषध्वंस करने में समर्थ नहीं है। तुमने ही श्रीकृष्ण का चित्त हरण किया है। अतः केवल सर्वकारिणी तुम्हीं हो। तुमको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

खञ्जनाक्षी खंजनासा देवि खेदविनाशिनी ।
खंजरीटगतिश्चैव शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम खञ्जन के नेत्र के समान सुनयना हो।

तुम्हारी नासिका गरुड़ की नासिका के समान मनोहर है। तुम आश्रितों के क्लेश का विनाश करती हो। तुम्हारी गति खंजरीट के समान है। मैं तुमको सिर झुकाकर नमस्कार करता हूँ।

गोविन्दवल्लभा देवी गन्धर्व्वकुलयावनी ।
गोलोकवासिनी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननि ! तुम्हीं बैकुण्ठपति गोविन्द की प्रियतमा हो। तुम्हारे अनुग्रह से ही गन्धर्वकुल पवित्र हुआ है। तुम्हीं सर्वदा गोलोकधाम में विहार करती हो। मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

ज्ञानदा गुणदा देवि गुणाध्यक्षा गुणाकरी ।
गन्धपुष्पधरा मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे मातः ! एकमात्र तुम्हीं ज्ञान की देने वाली हो एवं तुम ही एकमात्र गुण की खान हो। तुम्हीं गुणों की अध्यक्ष हो। तुम्हीं गुणों की आधार हो। तुम्हीं गन्धपुष्प द्वारा निरन्तर शोभित रहती हो। मैं सिर झुकाकर तुमको नमस्कार करता हूँ।

घनश्यामप्रिया देवि घोरसंसारतारिणी ।
घोरपापहरा चैव शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे कमले ! तुम्हीं घनश्याम की प्रियतमा हो। एकमात्र तुम्हीं घोरतम संसार सागर से रक्षा कर सकती हो। तुम्हारे अतिरिक्त और कोई भी भयंकर पापों से उद्धार करने में समर्थ नहीं है अतः मैं तुमको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

चतुर्व्वेदमयी चिन्त्या चित्तचैतन्यदायिनी ।
चतुराननपूज्या च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम्हीं चतुर्वेदमयी हो। एकमात्र तुम्हीं योगियों का ध्यान हो। तुम्हारे प्रसाद से ही चित्त में चैतन्यता का संचार होता है। जगत्पति चतुरानन भी तुम्हारी पूजा करते हैं। अतएव हे जननि ! मैं तुमको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

चैतन्यरूपिणी देवि चन्द्रकोटिसमप्रभा ।
चन्द्रार्कनखरज्योतिर्लक्ष्मि देवि नमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम्हीं चैतन्यरूपिणी हो। तुम्हारे देह की कान्ति करोड़ों चन्द्रमा के समान रमणीय है। तुम्हारे चरणों की दीप्ति चन्द्र सूर्य की कान्ति से भी अधिक देदीप्यमान है। मैं तुमको नमस्कार करता हूँ।

चपला चतुराध्यक्षी चरमे गतिदायिनी ।
चराचरेश्वरी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि लक्ष्मी ! तुम सदा एक स्थान में वास नहीं करती हो। इसीलिए तुम्हारा 'चपला' नाम हुआ है। अन्त काल में एकमात्र तुम्हीं गति देती हो। तुम्हीं चराचर जीवों की अधीश्वरी हो। मैं तुमको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

छत्रचामरयुक्ता च छलचातुर्य्यनाशिनी ।
छिद्रौघहारिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननि ! तुम्हीं शोभायमान छत्र और चामर से परम शोभा पाती हो। छलचातुरी तुम्हारे प्रभाव से नाश को प्राप्त होते हैं। तुम्हीं पाप समूह को नष्ट करती हो। अतः मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

जगन्माता जगत्कर्त्री जगदाधाररूपिणी ।
जयप्रदा जानकी च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननि ! तुम्हीं जगत् की जननी हो । तुम्हीं जगत् का एकमात्र आधार हो । तुम जयदात्री हो । तुम्हीं जानकी रूप से पृथ्वी पर अवतीर्ण हुई हो । मैं सिर झुकाकर तुमको नमस्कार करता हूँ ।

जानकीशप्रिया त्वं हि जनकोत्सवदायिनी ।
जीवात्मनां च त्वं मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननी ! तुम जानकी, रघुवर की सहधर्मिणी हो । तुम्हीं जनक को आनन्द देने वाली हो । तुम्हीं सर्वजीवों की आत्मस्वरूपा हो । मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ ।

झिञ्जीरवस्वना देवि झंझावातनिवारिणी ।
झर्झरप्रियवाद्या च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम्हारे कण्ठ का स्वर झिञ्जीरव के समान मधुर है । तुम्हारे अनुग्रह से झंझा वर्षायुक्त वायु के हाथ से सहज में ही रक्षा लाभ होता है । तुम गोवर्द्धनादि पर्वतों में झर्झर वाद्य में अत्यन्त अनुरक्त हो, मैं तुमको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ ।

ञर्थप्रदायिनी त्वं हि त्वञ्च ठकाररूपिणी ।
ढक्कादिवाद्यप्रणया डम्फवाद्यविनोदिनी ॥
डमरूप्रणया मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननि ! एकमात्र तुम्हीं धन प्रदान करती हो । तुम्हीं ठकाररूपिणी हो । डमरू और डम्फ वाद्य से तुमको अत्यन्त प्रसन्नता होती है । ढक्कादि वाद्य तुम्हें प्रीतिकर हैं । मैं सिर झुकाकर तुम्हारे चरण कमलों में प्रणाम करता हूँ ।

तप्तकांचनवर्णाभा त्रैलोक्यलोकतारिणी ।
त्रिलोकजननी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि लक्ष्मी ! तुम्हारा वर्ण तपे हुए कञ्चन के समान उज्ज्वल है । तुम त्रैलोक्यवासी जीवों की रक्षा करती हो । तुम्हीं त्रिलोक को उत्पन्न करने वाली हो । मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ ।

त्रैलोक्यसुंदरी त्वं हि तापत्रयनिवारिणी ।
त्रिगुणधारिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननि ! तुम त्रिभुवन में परम रूपवती हो । तुम्हीं तीनों तापों का नाश करती हो । तुम्ही सत्त्व, रज और तमोगुण धारिणी हो । मैं तुमको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ ।

त्रैलोक्यमंगला त्वं हि तीर्थमूलपदद्वया ।
त्रिकालज्ञा त्राणकर्त्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम्हीं तीनों लोकों का मंगल विधान करती हो । तुम्हारे चरण कमलों में सम्पूर्ण तीर्थ विराजमान रहते हैं । तुम भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों को जानती हो । तुम्हीं जीवों की रक्षा किया करती हो । मैं तुमको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ ।

दुर्गतिनाशिनी त्वं हि दारिद्र्यापद्विनाशिनी ।
द्वारकावासिनी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननी ! तुम आपदा, दुर्गति और दरिद्रों की दरिद्रता, आपदा को दूर करती हो। तुम्हीं द्वारकापुरी में विराजमान रहती हो। मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

देवतानां दुराराध्या दुःखशोकविनाशिनी ।
दिव्याभरणभूषांगी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! देवता भी बहुत तपस्यादि बहुत से कष्ट से तुमको प्राप्त करते हैं। तुम प्रसन्न होने पर सम्पूर्ण शोकों को नष्ट कर देती हो। तुम दिव्य आभूषणों से शोभायमान हो रही हो। मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

दामोदरप्रिया त्वं हि दिव्ययोगप्रदर्शिनी ।
दयामयी दयाध्यक्षी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननि ! तुम दामोदर की प्रिया हो। तुम्हारे प्रसाद से ही दिव्य योग प्राप्त किया जा सकता है। तुम्हीं दयामयी हो। तुम ही दया की अधिष्ठात्री देवी हो। तुमको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

ध्यानातीता धराध्यक्षा धनधान्यप्रदायिनी ।
धर्म्मदा धैर्यदा मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे माता ! तुम ध्यान से भी अतीत हो। तुम्हीं पृथ्वी की अध्यक्ष हो। तुम्हीं भक्तों को धन धान्यादि प्रदान करती हो। तुम्हीं धर्म्म और धैर्य की शक्ति देती हो। मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

नवगोरोचना गौरी नन्दनन्दनगेहिनी ।
नवयौवनचार्वंगी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि। तुम नवीन गोरोचन के समान गौरवर्णा हो। तुम्हीं नन्दनन्दन की प्रियतमा हो। तुम्हीं नवयौवन के कारण कान्ति-प्रदा हो। मैं तुमको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

नानारत्नादिभूषाढ्या नानारत्नप्रदायिनी ।
नितम्बिनी नलिनाक्षी लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे देवि ! तुम अनेक प्रकार के रत्नादि आभूषणों से विभूषित होकर परम शोभा को पाती हो। तुम्हीं प्रसन्न होने पर नाना-रत्नादि प्रदान करती हो। तुम्हीं विशाल नितम्ब वाली हो। तुम्हारे नेत्र कमल के समान सुन्दर हैं। तुमको सिर झुकाकर नमस्कार करता हूँ।

निधुवनप्रेमानन्दा निराश्रयगतिप्रदा ।
निर्व्विकारा नित्यरूपा लक्ष्मिदेवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मीदेवि ! तुम विकाररहित और नित्यरूपिणी हो। निधुवन में विहार करने से तुमको प्रेमानन्द की प्राप्ति होती है। तुम्हीं निराश्रय को पार लगा देती हो। तुमको नमस्कार है।

पूर्णानन्दमयी त्वं हि पूर्णब्रह्मसनातनी ।
परा शक्तिः परा भक्तिर्लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे देवि कमले ! तुम पूर्णानन्दमयी हो। तुम्हीं पूर्ण ब्रह्म-स्वरूपिणी हो। तुम्हीं परम शक्ति हो। तुम्हीं परम भक्तिस्वरूपा हो। तुमको नमस्कार करता हूँ।

पूर्णचन्द्रमुखी त्वं हि परानन्दप्रदायिनी ।
परमार्थप्रदा लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम्हारी देह पूर्णचन्द्रमा के समान शोभायमान है। तुम्हीं परमानन्द और परमार्थ का दान देती हो। मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

पुण्डरीकाक्षिणी त्वं हि पुण्डरीकाक्षगेहिनी ।
पद्मरागधरा त्वं हि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

तुम्हारे नेत्र कमल के समान सुन्दर हैं। तुम्हीं पुण्डरीकाक्ष की गेहिनी हो। तुम्हीं पद्मरागमणि धारण करके परम शोभा को प्राप्त होती हो। मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

पद्मा पद्मासना त्वं हि पद्ममालाविधारिणी ।
प्रणवरूपिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे माता ! तुम पद्मासन पर विराजमान रहती हो। इसी कारण तुम्हारा 'पद्मा' नाम प्रसिद्ध हुआ है। तुम्हारे गले में मनोहर पद्ममाला सुन्दरता से पड़ी रहती है। तुम्हीं ओंकार रूपिणी हो। मैं तुमको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

फुल्लेन्दुवदना त्वं हि फणिवेणिविमोहिनी ।
फणिशायिप्रिया मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे माता ! तुम्हारा मुख चन्द्रमा की किरणों के समान मनोहर है। तुम्हारे सिर की वेणी ने फणि के समान लम्बायमान होकर परम शोभा धारण कर रखी है। तुम्हीं क्षीरोद सागर में शेष शय्या पर शयन करने वाले हरि की गृहिणी हो। मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

विश्वकर्त्री विश्वभर्त्री विश्वत्रात्री विश्वेश्वरी ।
विश्वाराध्या विश्वबाह्या लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मी देवी ! तुम्हीं संसार की सृष्टि करने वाली हो। तुम्हीं विश्व का पालन करने वाली हो। तुम्हीं केवल सम्पूर्ण विश्व की ईश्वरी हो। तुम्हीं विश्ववासी जीवों की पूजनीया हो। तुम्हीं विश्व में सर्वत्र रहती हो, किन्तु तो भी तुम जगत में लिप्त नहीं हो। तुम्हीं विश्व के बाहर स्थित हो। तुम्हीं विश्व के भीतर स्थित हो। तुमको नमस्कार करता हूँ।

विष्णुप्रिया विष्णुशक्तिर्बीजमंत्रस्वरूपिणी ।
वरदा वाक्यसिद्धा च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

तुम्हीं विष्णु की प्रिया हो। तुम्हीं विष्णु की एकमात्र शक्ति हो। तुम्हीं बीजमंत्र स्वरूपिणी हो। तुम्हीं वर का दान देने वाली हो। तुम्हीं वाक्सिद्धियुक्त हो। मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

वेणुवाद्यप्रिया त्वं हि वंशीवाद्यविनोदिनी ।
विद्युद्गौरी महादेवि लक्ष्मी देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे महादेवि ! हे लक्ष्मी देवि ! तुम विद्युत् के समान गौर-वर्णा हो। तुम्हें वेणु का वाद्य अति प्रिय है। तुम वंशी की धुन से विनोदनी हो जाती हो। तुमको सिर झुकाकर नमस्कार करता हूँ।

भुक्तिमुक्तिप्रदा त्वं हि भक्तनुग्रहकारिणी ।
भवार्णवत्राणकर्त्री लक्ष्मि देवि नमोस्तु ते ॥

हे लक्ष्मी देवि ! तुम भुक्ति और मुक्ति को प्रदान करती हो। तुम भक्तों के प्रति अनुग्रह रखती हो। तुम्हीं आश्रितों को भवसागर से पार करती हो। तुमको नमस्कार करता हूँ।

भक्तप्रिया भागीरथी भक्तमंगलदायिनी ।
भयदा भयदात्री च लक्ष्मि देवि नमोस्तु ते ॥

हे लक्ष्मी देवी ! तुम भक्तों के प्रति आन्तरिक स्नेह रखती हो। तुम्ही भागीरथी गंगास्वरूपिणी हो। तुम भक्तों का कल्याण करती हो। तुम्हीं दुष्टों का नाश करती हो। तुम शरणागतों को अभय करती हो। तुमको नमस्कार करता हूँ।

मनोऽभीष्टप्रदा त्वं हि महामोहविनाशिनी ।
मोक्षदा मानदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मी देवि ! तुम कामना पूर्ण करतो हो। तुम मोह का विनाश करती हो। तुम्हीं मोक्ष देती हो। तुम सन्मान देती हो। तुमको नमस्कार करता हूँ।

महाधन्या महामान्या माधवस्यात्ममोहिनी ।
मोक्षदा मानदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मी देवि ! तुम्ही महाधन्या हो। तुम महा माननीय हो। तुमने ही माधव को मोहित किया हुआ है। जो बहुत बोलने वाले अर्थात चुगलखोर हैं। तुम उनका नाश करती हो। तुमको नमस्कार करता हूँ।

यौवनपूर्णसौन्दर्या योगमाया तथेश्वरी ।
युग्मश्रीफलवृक्षा च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मी देवि ! तुम पूर्ण यौवन को धारण करके सुन्दर लग रही हो। तुम्हीं योगमाया हो। तुम्हीं योग की ईश्वरी हो। तुम्हारे वक्ष पर दो नारियल के समान ऊँचे दो स्तन शोभा पा रहे हैं। तुमको नमस्कार करता हूँ।

युग्मांगदविभूषाढ्या युवतीनां शिरोमणिः ।
यशोदासुतपत्नी च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मी देवि ! तुम्हारे दोनों बाहुओं में दो बाजूबन्द विद्यमान हैं। तुम्हीं युवतियों की शिरोमणि हो। तुम्हीं यशोदा नन्दन की पत्नी हो। तुमको नमस्कार करता हूँ।

रूपयौवनसम्पन्ना रत्नालंकारधारिणी ।
राकेन्दुकोटिसौन्दर्या लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मी देवि। तुम रूप एवं यौवन से सम्पन्न हो। तुम्हीं रत्न अलंकार से विभूषित हो। तुम्हारी कान्ति करोड़ चन्द्रमा से भी उज्ज्वल है। तुमको नमस्कार करता हूँ।

रमा रामा रामपत्नी राजराजेश्वरी तथा ।
राज्यदा राज्यहन्त्री च लक्ष्मिदेवि नमोऽस्तु ते ।

हे लक्ष्मी देवि ! तुम्हारा ही नाम 'रमा' और 'रामा' है। तुम्हीं राम की पत्नी हो। तुम्हीं राज राजेश्वरी हो। तुम्हीं राज्य प्रदान करती हो। तुम्हीं राज्य का नाश करती हो। तुमको नमस्कार करता हूँ।

लीलालावण्यसम्पन्ना लोकानुग्रहकारिणी ।
ललना प्रीतिदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे जननि ! तुम्हीं लीला और लावण्य से सम्पन्न हो। तुम्हीं लोकों पर अनुग्रह करती हो। स्त्रीजन तुम्हारे द्वारा परम प्रीति को प्राप्त करती हैं। तुमको नमस्कार करता हूँ।

विद्याधरी तथा विद्या वसुदा त्वन्तु वन्दिता ।
विन्ध्याचलवासिनी च लक्ष्मि देवि नमोस्तु ते ॥

हे लक्ष्मी देवि ! तुम्हीं विद्या हो। तुम्हीं विद्याधरी हो। तुम्हीं वसुदा हो। तुम्हीं वंदनीय हो। तुम्हीं विन्ध्यवासिनी रूप से विन्ध्याचल में निवास करती हो। तुमको नमस्कार करता हूँ।

शुभ काञ्चनगौरांगी शंखकंकणधारिणी ।
शुभदा शीलसम्पन्ना लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मी देवि ! तुम शुभ कञ्चन के समान गौर वर्णा हो। तुमने अपने हाथ में शंख और कंकण धारण किये हैं। तुम शुभ-दायक हो। तुम अत्यन्त शीलवती हो, तुमको नमस्कार करता हूँ।

षट्चक्रभेदिनी त्वं हि षडैश्वर्य्यप्रदायिनी ।
षोडसी वयसा त्वन्तु लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मी देवी ! तुम्हीं षड्चकभेदिनी हो। तुम्हीं छः प्रकार का ऐश्वर्य प्रदान करती हो। तुम्हीं सोलह वर्ष की अवस्था वाली नवयुवती हो। तुमको नमस्कार करता हूँ।

सदामन्दमयी त्वं हि सर्वसम्पत्तिदायिनी ।
संसारतारिणी देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम सर्वदा आनन्दमयी हो। तुम्हीं सर्वसम्पत्ति देती हो। तुम्हीं संसार से पार करती हो। मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

सुकेशी सुखदा देवि सुंदरी सुमनोरमा ।
सुरेश्वरी सिद्धिदात्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम्हारे केश मनोहर हैं। तुम सुख देती हो। तुम सुन्दरी और मनमोहिनी हो। तुम्हीं देवताओं की ईश्वरी हो। तुम सिद्धि प्रदायिनी हो। मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

सर्वसंकटहन्त्री त्वं सत्यसत्त्वगुणान्विता ।
सीतापतिप्रिया देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम सम्पूर्ण संकट दूर करती हो। तुम सत्य-नारायण हो। तुम सत्त्वगुणशालिनी हो। तुम ही सीतापति रामचन्द्र की प्रिय पत्नी हो। मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

हेमांगिनी हास्यमुखी हरिचित्तविमोहिनी ।
हरिपादप्रिया देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम पिघले कांच के समान गौरवर्णा हो। तुम सर्वदा प्रसन्न रहती हो। तुमने हरि का चित्त मोहित किया हुआ है। हरि के चरणों में ही तुम्हारा अत्यन्त अनुराग है। मैं सिर झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

क्षेमंकरी क्षमादात्री क्षौमवासोविधारिणी ।
क्षीणमध्या च क्षेत्रांगी लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मी देवि ! तुम कल्याण करने वाली हो। तुम क्षमा दात्री हो। क्षौमवस्त्र को धारण करती हो। तुम्हारी कमर ने

पतली होने से परम शोभा दिखा रखी है। तुम्हारे अंग में संपूर्ण तीर्थ और क्षेत्र विद्यमान रहते हैं। तुमको नमस्कार करता हूं।

श्रीशंकर उवाच

अकारादि क्षकारान्तं लक्ष्मीदेव्याः स्तव शुभम्।
पठितव्यं प्रयत्नेन त्रिसन्ध्यञ्च दिने दिने॥

श्रीमहादेव जी बोले—हे पार्वती! तुम्हारे प्रश्नानुसार अकारादि से क्षकारान्त वर्ण वाला लक्ष्मी स्तोत्र वर्णन किया है। इस कल्याणकारक स्तोत्र का प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में प्रयास करके पाठ करना चाहिये।

पूजनीया प्रयत्नेन कमला करुणामयी।
वाञ्छाकल्पलता साक्षाद्भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी॥

इसे पूजना चाहिये क्योंकि यह कमला देवी करुणा से परिपूर्ण है। यह अभिलाषाएँ पूर्ण किया करती है। यही साक्षात् भक्ति एवं मुक्ति देने वाली है।

इदं स्तोत्र पठेद्यस्तु शृणुयात् श्रावयेदपि।
इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य सत्यं सत्यं हि पार्वति॥

जो पुरुष इस लक्ष्मी स्तोत्र को पढ़ते हैं या सुनते हैं या दूसरे मनुष्य को सुनाते हैं। हे पार्वति! उनके सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं। इसमें सन्देह नहीं करना।

इदं स्तोत्रं महापुण्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः।
तञ्च दृष्ट्वा भवेन्मूको वादी सत्यं न संशयः॥

हे गौरि! जो साधक भक्ति सहित इस पवित्र स्तोत्र का

पाठ करते हैं, उनके दर्शन मात्र से ही वादी मूकता को प्राप्त होता है, इसमें सन्देह नहीं।

शृणुयाच्छ्रावयेद्यस्तु पठेद्वा पाठयेदपि।
राजानो वशमायान्ति तं दृष्ट्वा गिरिनन्दिनि॥

हे गिरिनन्दिनि! जो इस स्तोत्र को सुनते हैं। जो दूसरों को सुनाते हैं। जो स्वयं पढ़ा करते हैं। जो दूसरों को पढ़ाते हैं। उनके दर्शनमात्र से ही राजा लोग वशीभूत होते हैं।

तं दृष्ट्वा दुष्टसंघाश्च पलायन्ते दिशो दश।
भूतप्रेतग्रहा यक्षा राक्षसा पन्नगादयः॥
विद्रवन्ति भयार्ता वै स्तोत्रस्यापि च कीर्त्तनात्॥

जो पुरुष इस लक्ष्मी स्तोत्र का कीर्तन करते हैं, उनके दर्शन मात्र से ही दुष्टगण दशों दिशा में भाग जाते हैं। भूत, प्रेत, ग्रह, यक्ष, राक्षस, सर्प इत्यादि सभी उससे डरकर अन्यत्र चले जाते हैं। इसमें सन्देह नहीं करना।

सुराश्च ह्यसुराश्चैव गंधर्वकिन्नरादयः।
प्रणमन्ति सदा भक्त्या तं दृष्ट्वा पाठकं मुदा॥

जो व्यक्ति इस स्तोत्र का पाठ करते हैं, देवता, दानव, गन्धर्व, किन्नर, उसको देखते ही आनन्द और भक्ति सहित प्रणाम करते हैं।

धनार्थी लभते चार्थं पुत्रार्थी च सुतं लभेत्।
राज्यार्थी लभते राज्यं स्तवराजस्य कीर्त्तनात्॥

इस अनुत्तम स्तव का कीर्त्तन करने से धनार्थी धन, पुत्रार्थी पुत्र और राज्यार्थी राज्य को प्राप्त किया करता है।

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्व्वंगनागमः।
महापापोपपापञ्च तरन्ति स्तवकीर्त्तनात् ॥

ब्रह्म हत्या, सुरापान, चोरी, गुरु स्त्रीगमन, महापातक, उपपातक, इस स्तव के कीर्त्तन करने मात्र के प्रभाव से सम्पूर्ण पापों से छुटकारा पा जाते हैं।

गद्यपद्यमयी बाणी मुखात्तस्य प्रजायते।
अष्टसिद्धिमवाप्नोति लक्ष्मीस्तोत्रस्य कीर्तनात् ॥

इस लक्ष्मी स्तोत्र के कीर्त्तन करने से आपने आप ही मुख से गद्य पद्यमयी वाणी प्रादुर्भूत हुआ करती है। इसका कीर्तन करने वाला आठ प्रकार की सिद्धि को प्राप्त किया करता है।

वन्ध्या चापि लभेत् पुत्रं गर्भिणी प्रसवेत्सुतम्।
पठनात्स्मरणात् सत्यं वच्मि ते गिरिनन्दिनि ॥

हे पर्वतनन्दिनि! तुमसे सत्य ही कहता हूं। इस स्तोत्र के पढ़ने वा स्मरण करने मात्र से ही वंध्या पुत्र प्राप्त करती है, और गर्भवती स्त्री को उत्तम पुत्र प्राप्त होता है।

भूर्ज्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुंकुमेन तु।
भक्त्या संपूजयेद्यस्तु गन्धपुष्पाक्षतैस्तथा ॥

धारयेदक्षिणे बाहौ पुरुषः सिद्धिकांक्षया।
योषिद्वामभुजे धृत्वा सर्व्वसौख्यमयी भवेत् ॥

जो पुरुष लक्ष्मी की कामना करते हैं। वे भोजपत्र के ऊपर गोरोचन और कुंकुम द्वारा इस स्तव को लिखकर गन्धपुष्पादि से भक्ति के साथ पूजा अर्चना करके दाहिने बाहु में धारण करे। स्त्रियाँ भी बाईं भुजा में धारण करने से सर्व सुखों से सुखी हो सकती हैं।

विषं निर्विषतां याति अग्निर्याति च शीतताम्।
शत्रवो मित्रतां यान्ति स्तवस्यास्य प्रसादतः ॥

इस स्तवराज के प्रसाद से विष में निर्विषता, अग्नि में शीतलता और शत्रुओं में मित्रता प्राप्त होती है।

बहुना किमिहोक्तेन स्तवस्यास्य प्रसादतः।
वैकुण्ठे च वसेन्नित्यं सत्यं वच्मि सुरेश्वरि ॥

हे सुरेश्वरि! इसका महात्म्य और अधिक क्या वर्णन करूँ? अन्त समय नित्य दिवस बैकुण्ठ में वास होता है। इसमें सन्देह नहीं करना।

—:०:—

लक्ष्मी कवच

लक्ष्मीर्मे चाग्रतः पातु कमला पातु पृष्ठतः ।
नारायणी शीर्षदेशे सर्व्वांगे श्रीस्वरूपिणी ॥

लक्ष्मी मेरे अग्र भाग की रक्षा करें। कमला मेरी पीठ की रक्षा करें। नारायणी मेरे सिर की और श्रीस्वरूपिणी देवी मेरे सर्वांग की रक्षा करें।

रामपत्नी प्रत्यंगे तु सदावतु रमेश्वरी ।[1]
विशालाक्षी योगमाया कौमारी चक्रिणी तथा ॥

जयदात्री धनदात्री पाशाक्षमालिनी शुभा ।
हरिप्रिया हरिरामा जयंकरी महोदरी ॥

कृष्णपरायणा देवी श्रीकृष्णमनोमोहिनी ।
जयंकरी महारौद्री सिद्धिदात्री शुभंकरी ॥

सुखदा मोक्षदा देवी चित्रकूटनिवासिनी ।
भयं हरेत्सदा पायाद् भवबन्धाद्विमोचयेत् ॥

जो रामपत्नी अर्थात रामेश्वरी हैं, वह विशाल नेत्र वाली योगमाया लक्ष्मी मेरे सम्पूर्ण अंगों की रक्षा करें। वही कौमारी है, वही चक्रधारिणी है, वही जय देने वाली है, वही धनदाता

१. केवल इन पंक्तियों का पाठ करने से भी अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। —यशपाल भारती

है, वही पाशअक्षमालिनी है, वही कल्याणी है, वही हरिप्रिया है, वही हरिरामा है, वही जय देने वाली है, वही महोदरी है, वही कृष्ण परायणा है, वही श्रीकृष्ण मोहिनी है, वही महारौद्री है, वही सिद्धि देने वाली है, वही शुभ करने वाली है, वही सुख देने वाली है, वही मोक्ष देने वाली है। वही चित्रकूटनिवासिनी है। वही अनपायिनी लक्ष्मी देवी मेरा भय दूर करें। सर्वदा मेरी रक्षा करें। मेरा भव बन्धन हटायें।

कवचन्तु महापुण्यं यः पठेत् भक्तिसंयुक्तः ।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यम्वा मुच्यते सर्व्वसंकटात् ॥

जो भक्तियुक्त होकर प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में या एक सन्ध्या में ही इस परम पवित्र लक्ष्मी कवच का पाठ करता है, वह सम्पूर्ण संकटों से छूट जाता है।

पठणं कवचस्यास्य पुत्रधनविवर्द्धनम् ।
भीति विनाशनञ्चैव त्रिषु लोकेषु कीर्त्तितम् ॥

इस कवच के पाठ करने से पुत्र और धनादि की वृद्धि होती है। साधक का भय दूर होता है। इसका माहात्म्य त्रिभुवन में प्रसिद्ध है।

भूर्ज्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुंकुमेन तु ।
धारणाद्गलदेशे च सर्वसिद्धिर्भविष्यति ॥

भोज पत्र के ऊपर गोरोचन और कुंकुम से इसको लिखकर कण्ठ में धारण करने से सर्वकामना पूर्ण होती हैं।

अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ।
मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति कवचस्य प्रसादतः ॥

इस कवच के प्रसाद से अपुत्र को पुत्र लाभ होता है। धनार्थी को धन लाभ और मोक्षार्थी को मोक्ष प्राप्त होता है। इसमें सन्देह नहीं करना।

गर्भिणी लभते पुत्र वन्ध्या च गर्भिणी भवेत् ।
धारयेद्यदि कण्ठे च अथवा वामबाहुके ।।

यदि नारियाँ इसे कण्ठ अथवा वाम बाहु पर नियमपूर्वक धारण करें, तो गर्भवती उत्तम पुत्र को प्राप्त करती हैं और वन्ध्या स्त्री भी गर्भवती हो जाती है।

यः पठेन्नियतो भक्त्या स एव विष्णुवद्भवेत् ।
मृत्युव्याधिभयं तस्य नास्ति किञ्चिन्महीतले ।।

जो कोई नित्य भक्तिपूर्वक इस कवच का पाठ करता है, वह विष्णु की समानता को प्राप्त होता है। पृथ्वी में मृत्यु एवं व्याधि उस पर आक्रमण नहीं कर सकती।

पठेद्वा पाठयेद्वापि शृणुयाच्छ्रावयेदपि ।
सर्व्वपापविमुक्तस्तु लभते परमां गतिम् ।।

जो पुरुष इस कवच को पढ़ते हैं या पढ़ाते हैं या स्वयं सुनते हैं या दूसरों को सुनाते हैं, वह सम्पूर्ण पापों से छूट कर परम गति को प्राप्त होते हैं।

विपदि संकटे घोरे तथा च गहने वने ।
राजद्वारे च नौकायां तथा च रणमध्यतः ।
पठन द्धारणादस्य जयमाप्नोति निश्चितम् ।।

विपद, घोर संकट, गहन वन, राजद्वार, नौका मार्ग, रण-मध्य में, इस कवच के पाठ अथवा धारण किए रखने से सर्वत्र जय प्राप्त होती है।

अपुत्रा च तथा वन्ध्या त्रिपक्षं शृणुयादपि ।
सुपुत्रं लभते सा तु दीर्घायुष्कं यशस्विनम् ।।

बांझ स्त्री तीन पक्ष पर्यन्त यह कवच सुने, तो दीर्घायु महा-यशस्वी पुत्र को जन्म दे सकती है। इसमें सन्देह नहीं करना।

शृणुयाद्यः शुद्धबुद्धया द्वौ मासौ विप्रवक्त्रतः ।
सर्व्वान्कामानवाप्नोति सर्व्वबन्धाद्विमुच्यते ।।

जो पुरुष शुद्ध मन से दो महीने तक ब्राह्मण के मुख से यह कवच सुनता है, उसकी सम्पूर्ण कामना सिद्ध होती है। वह सर्व प्रकार के भवबन्धनों से छूट जाता है।

मृतवत्सा जीववत्सा त्रिमासं शृणुयाद्यदि ।
रोगी रोगाद्विमुच्येत पठनान्मासमध्यतः ।।

जिस स्त्री के पुत्र उत्पन्न होकर जीवित नहीं रहते हों अर्थात मृतवत्सा हो वह तीन महीने पर्यन्त इस कवच को भक्ति सहित सुने तो जीववत्सा होती है। रोगी पुरुष इसका पाठ करे तो एक महीने में ही रोग का नाश हो जाता है।

लिखित्वा भूर्जपत्रे च ह्यथवा ताडपत्रके ।
स्थापयेन्नियतं गेहे नाग्निचौरभयं क्वचित् ।।

जो पुरुष भोजपत्र या ताड़पत्र पर इस कवच को लिखकर घर में स्थापित करता है, उसको अग्नि, चोर इत्यादि का भय नहीं रहता है?

शृणुयाद्धारयेद्वापि पठेद्वा पाठयेदपि ।
यः पुमान्सततं तस्मिन्प्रसन्ना सर्व्वं देवताः ।।

जो पुरुष प्रतिदिन यह कवच सुनता है या पढ़ता है या दूसरे को पढ़ाता है या जो कोई इसको धारण करता है, उस पर देवता सदा सर्वदा सन्तुष्ट रहते हैं ।

बहुना किमिहोक्तेन सर्व्वजीवेश्वरेश्वरी ।
आद्या शक्तिः सदा लक्ष्मीर्भक्तानुग्रहकारिणी ।
धारके पाठके चैव निश्चला निवसेद् ध्रुवम् ।।

अधिक और क्या कहूं ? जो पुरुष इस कवच का पाठ करते हैं या इसे लिखकर धारण करते हैं, आद्या शक्ति कमला (लक्ष्मी) अटल होकर उसके गृह में स्थित होती है ।

—: ० :—

महाविद्या मन्त्र

हूँ श्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं ।

महाविद्या ध्यान

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ।
महाभीमां करालास्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम् ।।
मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम् ।
एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थ सिद्धये ।।

देवी चतुर्भुजा, सर्प का यज्ञोपवीत धारण करने वाली है ये महाभीमा है, करालवदना है, सिद्ध और विद्याधरों से वेष्टित है, ये मुण्डमाला से अलंकृत है। इनके केश खुले व लहरा रहे हैं और ये हास्यमुखी है । सर्वकामार्थ सिद्धि के लिये देवी का इस प्रकार ध्यान करना चाहिये ।

महाविद्या स्तोत्र

श्रीशिव उवाच

दुर्ल्लभं तारिणींमार्गं दुर्ल्लभं तारिणींपदम् ।
मन्त्रार्थं मंत्रचैतन्यं दुर्ल्लभं शवसाधनम् ।।

सृष्टि का रहस्य : दशमहाविद्या —यशपाल भारती

श्मशानसाधनं योनिसाधनं ब्रह्मसाधनम् ।
क्रियासाधनं भक्तिसाधनं मुक्तिसाधनम् ॥
तव प्रसादाद्देवेशि सर्व्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः ॥

शिव ने कहा—तारिणी का उपासना मार्ग अत्यन्त दुर्लभ है। उनके पद की प्राप्ति भी अति कठिन है। इनके मन्त्रार्थ ज्ञान, मन्त्र चैतन्य, शव साधन, श्मशान साधन, योनि साधन, ब्रह्म साधन, क्रिया साधन, भक्ति साधन और मुक्ति साधन; यह सब भी दुर्लभ हैं। किन्तु हे देवेशि ! तुम जिसके ऊपर प्रसन्न होती हो, उसको सब विषय में सिद्धि प्राप्त होती है।

नमस्ते चण्डिके चण्डि चण्डमुण्डविनाशिनि ।
नमस्ते कालिके कालमहाभयविनाशिनि ॥

हे चण्डिके ! तुम प्रचण्डस्वरूपिणी हो। तुमने ही चण्डमुण्ड का विनाश किया है। तुम्हीं काल का नाश करने वाली हो। तुमको नमस्कार है।

शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरवल्लभे ।
प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम् ॥
जगत्क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम् ।
करालां विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम् ॥
हराच्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम् ।
गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालंकार भूषिताम् ॥
हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम् ॥

हे शिवे जगद्धात्रि हरवल्लभे ! मेरी संसार से रक्षा करो। तुम्हीं जगत् की माता हो और तुम्हीं अनन्त जगत् की रक्षा करती हो। तुम्हीं जगत् का संहार करने वाली हो और तुम्हीं जगत् को उत्पन्न करने वाली हो। तुम्हारी मूर्ति महाभयंकर है। तुम मुण्डमाला से अलंकृत हो। तुम हर से सेवित हो। हर से पूजित हो और तुम ही हरिप्रिया हो। तुम्हारा वर्ण गौर है। तुम्हीं गुरुप्रिया हो और श्वेत आभूषणों से अलंकृत रहती हो। तुम्हीं विष्णु प्रिया हो। तुम ही महामाया हो। सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी तुम्हारी पूजा करते हैं। तुमको नमस्कार है।

सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम् ।
मंत्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिंग शोभिताम् ॥
प्रणमामि महामायां दुर्गा दुर्गतिनाशिनीम् ॥

तुम्हीं सिद्ध और सिद्धेश्वरी हो। तुम्हीं सिद्ध एवं विद्याधरों से युक्त हो। तुम मंत्रसिद्धि-दायिनी हो। तुम योनिसिद्धि देने वाली हो। तुम ही लिंग शोभिता महामाया हो। दुर्गा और दुर्गति नाशिनी हो। तुमको बारम्बार नमस्कार है।

उग्रामुग्रमयीमुग्रतारामुग्रगणैर्युताम् ।
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुंदरीम् ॥

तुम्हीं उग्रमूर्ति हो, उग्रगणों से युक्त हो, उग्रतारा हो, नीलमूर्ति हो, नीले मेघ के समान श्यामवर्णा हो और नील सुन्दरी हो। तुमको नमस्कार है।

श्यामांगी श्यामघटितांश्यामवर्णविभूषिताम् ।
प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्व्वार्थसाधिनीम् ॥

तुम्हीं श्याम अंग वाली हो एवं तुम श्याम वर्ण से सुशोभित जगद्धात्री हो, जो सब कार्य का साधन करने वाली हो। गौरी हो। तुमको नमस्कार है।

विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम् ।
आद्यमाद्यगुरोराद्यमाद्यनाथप्रपूजिताम् ॥
श्रीदुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम् ।
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम् ॥

तुम्हीं विश्वेश्वरी हो, महाभीमाकार हो, विकट मूर्ति हो। तुम्हारा शब्द उच्चारण महाभयंकर है। तुम्हीं सबकी आद्या हो, आदि गुरु महेश्वर की भी आदि माता हो। आद्यनाथ महादेव सदा तुम्हारी पूजा करते रहते हैं। तुम्हीं धन देने वाली अन्नपूर्णा और पद्मास्वरूपिणी हो। तुम्हीं देवताओं की ईश्वरी हो, जगत् की माता हो, हरवल्लभा हो। तुमको नमस्कार है।

त्रिपुरासुंदरीं बालमबलागणभूषिताम् ।
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम् ॥
सुंदरीं तारिणीं सर्व्वशिवागणविभूषिताम् ।
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्माविष्णुहरप्रियाम् ॥

हे देवि ! तुम्हीं त्रिपुरसुन्दरी हो। बाला हो। अबला गणों से मंडित हो। तुम शिव दूती हो, शिव आराध्या हो, शिव से

ध्यान की हुई, सनातनी हो, सुन्दरी तारिणी हो, शिवा गणों से अलंकृत हो, नारायणी हो, विष्णु से पूजनीय हो। तुम ही केवल ब्रह्मा, विष्णु तथा हर की प्रिया हो।

सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यगुणवर्जिताम् ।
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्च्चितां सर्व्वसिद्धिदाम् ॥

दिव्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम् ।
महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम् ॥
प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्द्दिनीम् ॥

तुम्हीं सब सिद्धियों की दायिनी हो, तुम नित्या हो, तुम अनित्य गुणों से रहित हो। तुम सगुणा, निर्गुणा हो, ध्यान के योग्य हो, पूजिता हो, सर्व सिद्धियाँ देने वाली हो, दिव्या हो, सिद्धिदाता हो, विद्या हो, महाविद्या हो, महेश्वरी हो, महेश की परम भक्ति वाली माहेशी हो, महाकाल से पूजित जगद्धात्री हो और शुम्भासुर की नाशिनी हो। तुमको नमस्कार है।

रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्द्दिनीम् ।
भैरवीं भुवनां देवी लोलजिह्वां सुरेश्वरीम् ॥

चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम् ।
त्रिपुरेशी विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम् ॥

अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम् ।
कमलां छिन्नभालाञ्च मातंगीं सुरसुंदरीम् ॥

षोडशीं विजयां भीमां धूम्राञ्च बगलामुखीम् ।
सर्व्वसिद्धिप्रदां सर्व्वविद्यामंत्रविशोधिनीम् ॥
प्रणमामि जगत्तारां साराञ्च मंत्रसिद्धये ॥

तुम्हीं रक्त से प्रेम करने वाली रक्तवर्णा हो। रक्त बीज का विनाश करने वाली, भैरवी, भुवना देवी, चलायमान जीभ वाली, सुरेश्वरी हो। तुम चतुर्भुजा हो, कभी दश भुजा हो, कभी अठारह भुजा हो, त्रिपुरेशी हो, विश्वनाथ की प्रिया हो, ब्रह्मांड की ईश्वरी हो, कल्याणमयी हो, अट्टहास से युक्त हो, ऊँचे हास्य से प्रीति करने वाली हो, धूम्रासुर की नाशिनी हो, कमला हो, छिन्नमस्ता हो, मातंगी हो, त्रिपुर सुन्दरी हो, षोडशी हो, विजया हो, भीमा हो, धूम्रा हो, बगलामुखी हो, सर्व सिद्धिदायिनी हो, सर्वविद्या और सब मन्त्रों की विशुद्धि करने वाली हो। तुम सारभूता और जगत्तारिणी हो। मैं मन्त्र सिद्धि के लिये तुमको नमस्कार करता हूँ।

इत्येवञ्च वरारोहे स्तोत्रं सिद्धिकरं परम् ।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि ॥

हे वरारोहे। यह स्तव परम सिद्धि देने वाला है। इसका पाठ करने से सत्य ही मोक्ष प्राप्त होता है।

कुजवारे चतुर्द्दश्याममायां जीववासरे ।
शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात् ।
त्रिपक्षे मंत्रसिद्धिः स्यात्स्तोत्रपाठाद्धि शंकरि ॥

मंगलवार की चतुर्दशी तिथि में, बृहस्पतिवार की अमा-

वस्या तिथि में और शुक्रवार निशा काल में यह स्तुति पढ़ने से मोक्ष प्राप्त होता है। हे शंकरि! तीन पक्ष तक इस स्तव के पढ़ने से मन्त्र सिद्धि होती है। इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए।

चतुर्द्दश्यां निशाभागे शनिभौमदिने तथा ।
निशामुखे पठेत्स्तोत्रं मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात् ॥

चौदश की रात में तथा शनि और मंगलवार की संध्या के समय इस स्तव का पाठ करने से मन्त्र सिद्धि होती है।

केवलं स्तोत्रपाठाद्धि मंत्रसिद्धिरनुत्तमा ।
जार्गति सततं चण्डी स्तोत्रपाठाद्भ‍ुजंगिनी ॥

जो पुरुष केवल इस स्तोत्र को पढ़ता है, वह अनुत्तमा सिद्धि को प्राप्त करता है। इस स्तव के फल से चण्डिका कुलकुण्डलिनी नाड़ी का जागरण होता है।

—: ० :—

महाविद्या कवच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम् ।
आद्याया महाविद्यायाः सर्व्वाभीष्टफलप्रदम् ।।

हे देवि ! महाविद्या का कवच कहता हूं—सुनो यह सब अभीष्टों का देने वाला है ।

कवचस्य ऋषिर्देवि सदाशिव इतीरितः ।
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च महाविद्या प्रकीर्तिता ।।
धर्मार्थकाममोक्षाणां विनियोगश्च साधने ।।

इस कवच के ऋषि सदाशिव, छन्द अनुष्टुप्, देवता महाविद्या धर्म, अर्थ, काम मोक्षरूप फल के साधन में इसका विनियोग है ।

ऐंकारः पातु शीर्षे मां कामबीजं तथा हृदि ।
रमाबीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ।।

ऐं बीज मेरे मस्तक, क्लीं बीज मेरे हृदय एवं श्रीं बीज मेरी नाभि, गुह्य और चरण की रक्षा करें ।

ललाटे सुंदरी पातु उग्रा मां कण्ठदेशतः ।
भगमाला सर्व्वगात्रे लिंगे चैतन्यरूपिणी ।।

सुन्दरी मेरे मस्तक की, उग्रा मेरे कंठ की, भगमाला सारे

शरीर की और चैतन्य रूपिणी देवी मेरे लिंग स्थान की रक्षा करें ।

पूर्वे मां पातु वाराही ब्रह्माणी दक्षिणे तथा ।
उत्तरे वैष्णवी पातु चेन्द्राणी पश्चिमेऽवतु ।।
माहेश्वरी च आग्नेय्यां नैर्ऋते कमला तथा ।
वायव्यां पातु कौमारी चामुण्डा ह्यीशकेऽवतु ।।

वाराही पूर्व दिशा में, ब्रह्माणी दक्षिण में, वैष्णवी उत्तर में, इन्द्राणी पश्चिम में, माहेश्वरी अग्नि कोण में, कमला नैर्ऋत कोण में, कौमारी वायु कोण में और चामुण्डा ईशान दिशा में सर्वदा मेरी रक्षा करें ।

इदं कवचमज्ञात्वा महाविद्याञ्च यो जपेत् ।
न फलं जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ।।

इस कवच के बिना जो साधक इस महाविद्या का मन्त्र जपता है वह सौ करोड़ कल्प में भी उसका फल प्राप्त नहीं कर पाता है ।

मन्त्र प्रयोग

मन्त्र दीक्षा, मन्त्र में ध्यान, मन्त्र में काल विचार, मन्त्र में आसन और माला, मन्त्र जप का विधान, द्वादश राशियों के मन्त्र, रोगनाशक मन्त्र, जीवन सुख के आठ मन्त्र, प्रभावशाली सिद्ध मन्त्र, नवग्रहों के मंत्र, गणपति के मंत्र, हनुमान जी के मंत्र, सुग्रीव मंत्र, नृसिंह मंत्र, सरस्वती मंत्र, लक्ष्मी प्रद मंत्र, तारा मंत्र, विवाह सिद्धिदायक मंत्र, महाशक्तियों के मंत्र व अन्य प्रसिद्ध मन्त्रों वाली उत्तम पुस्तक।

अंक ज्योतिष

लेखक—योगीराज यशपाल जी

यह पुस्तक अपने आप में नवीनता संजोए हुए है। अंक ज्योतिष पर अनेकों पुस्तकें देखी होंगी पर अभी तक ऐसी पुस्तक प्रकाशित ही नहीं हुई। इसमें कही गई प्रत्येक बात बड़े परिश्रम तथा अनुभव का निचोड़ है। इसमें भाग्य को अनुकूल बनाने में अनेक उपाय कहे गए हैं। योगीराज यशपाल जी ने अनेकों पाठकों की आवश्यकताओं को समक्ष रखकर इस पुस्तक का लेखन किया है। इनका कहना है कि इस पुस्तक में की गई सभी बातों के अनुसार विचार और आचरण किया जाए तो भाग्य को अपने आप अनुकूल कर सकते हैं।

श्री दुर्गा स्तुति

लेखक व गायक—एम. एस. पुण्डीर

इस पुस्तक में दुर्गा सप्तशती का सम्पूर्ण कविता पाठ, प्रार्थना, स्तुति कवच, अर्गला स्तोत्र, नवरात्र कथा तथा तारा रानी की कथा और आरतियाँ आदि दी गई हैं।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (२४९४०१)

तंत्र मंत्र यंत्र

प्रस्तुति—तांत्रिक बहल

प्रस्तुत पुस्तक का नाम अवश्य ही चकित कर देने वाला है, क्योंकि आचार्य चाणक्य राजनीति एवं अर्थशास्त्र के प्रकांड पंडित तो थे ही पर इनके साथ ही वह मंत्र तंत्र के भी प्रबल ज्ञाता थे, यह बात बहुत ही कम लोग जानते हैं। चाणक्य विरचित मंत्रों-तंत्रों का यह अनुपम संग्रह प्रस्तुत करने का श्रेय 'तांत्रिक बहल' को जाता है। इस विषय की अतीव रुचि के कारण और तन्त्र सबके लिए उपलब्ध कराने का दृढ़ संकल्प लिए प्रस्तुतकर्ता ने वास्तव में एक खोजपूर्ण और साहस का कार्य किया है। आशा है इस दुर्लभ ग्रन्थ के प्रकाशन से पाठक लाभान्वित होंगे।

इस पुस्तक के द्वितीय खण्ड—सरल तांत्रिक प्रयोग में लेखक ने सामान्य जीवन में काम आने वाले कुछ अनुभूत मंत्र-तंत्र भी दिए हैं।

लाटरी ज्योतिष

लेखक—तांत्रिक बहल

लाटरी—प्रायः लोग इसे प्रारब्ध या भाग्य का खेल कहते हैं लेकिन वास्तव में यह अंकों का चमत्कार है, क्योंकि अंक जिसके पक्ष में रहते हैं, भाग्य भी उसी का साथ देता है। इसी कारण ज्योतिष और तंत्र से इसका गहरा सम्बन्ध बन जाता है। इस पुस्तक में दिए गए निर्देशों का सहारा लेकर आप भी ज्ञात कर सकते हैं कि आपकी लाटरी निकलेगी या नहीं? कब निकलेगी? और कौन-कौन से योग-प्रयोग हैं जो आपको भी लाटरी का लाभ प्रदान कर सकते हैं।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (२४९४०१)

अथर्ववेद-सार

इस पुस्तक में 'अथर्ववेद' का ज्ञानामृत १०८ सूक्तियों में संकलित है जिसे पढ़ व समझकर व्यवहार में लायेंगे तो ज्ञान का संवर्धन होगा।

अथर्ववेदामृत से परिपूर्ण सूक्तियों की इस सूक्ति-माला को जीवन में व्यवहारिक रूप से जपेंगे तो ज्ञान से कर्म के लिए तत्पर होंगे।

इन सूक्तियों का चयन, संकलन एवं सम्पादन किया है, आपके प्रिय लेखक डॉ० उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर' ने। एक बार पढ़कर तो देखें, आपको लगेगा—ज्ञान, कर्म और भक्तियोग का अनुपम मार्ग पा लिया।

सामवेद-सार

इस पुस्तक में 'सामवेद' का ज्ञानामृत १०८ सूक्तियों में संकलित है जिसे पढ़ व समझकर व्यवहार में लायेंगे तो ज्ञान का संवर्धन होगा।

सामवेदामृत से परिपूर्ण सूक्तियों की इस सूक्ति-माला को जीवन में व्यवहारिक रूप से जपेंगे तो उन्नति पथ अवश्य प्रशस्त होगा।

इन सूक्तियों का चयन, संकलन एवं सम्पादन किया है, आपके प्रिय लेखक डॉ० उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर' ने। एक बार पढ़कर तो देखें, आपको लगेगा—अशान्त जीवन में शान्ति पाने का अनुपम मार्ग मिल गया।

प्रकाशक :

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (२४९४०१)

ऋग्वेद-सार

इस पुस्तक में 'ऋग्वेद' का ज्ञानामृत १०८ सूक्तियों में संकलित है जिसे पढ़ व समझकर व्यवहार में लायेंगे तो ज्ञान का संवर्धन होगा।

ऋग्वेदामृत से परिपूर्ण सूक्तियों की इस सूक्ति-माला को जीवन में व्यवहारिक रूप से जपेंगे तो कर्म के लिए तत्पर होंगे।

इन सूक्तियों का चयन, संकलन एवं सम्पादन किया है, आपके प्रिय लेखक डॉ० उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर' ने। एक बार पढ़कर तो देखें, आपको लगेगा—जीवन में आत्म-ज्ञान का अनुपम मार्ग मिल गया।

यजुर्वेद सार

इस पुस्तक में 'यजुर्वेद' का ज्ञानामृत १०८ सूक्तियों में संकलित है जिसे पढ़ व समझकर व्यवहार में लायेंगे तो ज्ञान का संवर्धन होगा।

यजुर्वेदामृत से परिपूर्ण सूक्तियों की इस सूक्ति-माला को जीवन में व्यवहारिक रूप से जपेंगे तो कर्म के लिए तत्पर होंगे।

इन सूक्तियों का चयन, संकलन एवं सम्पादन किया है, आपके प्रिय लेखक डॉ० उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर' ने। एक बार पढ़कर तो देखें, आपको लगेगा—उन्नत पथ पर बढ़ने का उत्कृष्ट कर्म-ज्ञान मिल गया।

प्रकाशक :

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (२४९४०१)

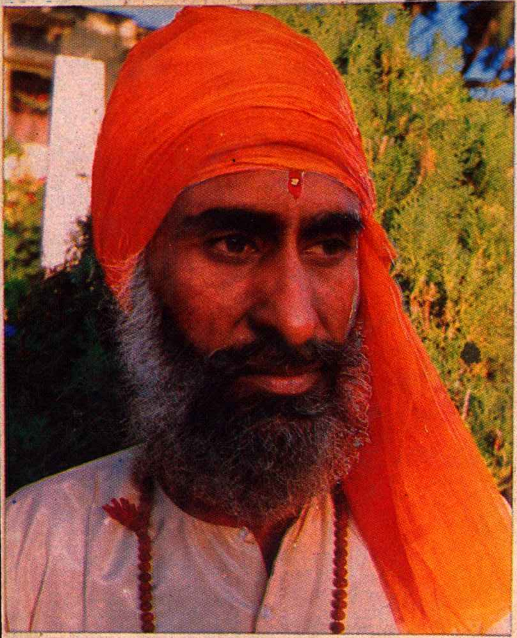

श्री यशपाल

संस्थापक एवं प्रबंध नि श
तंज्योति गुह्यविद्या स
एवं अनुसंधान केंद्र ह

भारतवर्ष की शिवालिक पर्वत की श्रेणियों से समूचे विश्व में भारतीय गुप्त विद्याओं, पराविज्ञान और ज्योतिषादिक विज्ञान का प्रचार-प्रसार करने वाले **योगीराज यशपालजी** ज्ञान महार्णव के एक शक्तिशाली प्रतीक बन कर उभरे हैं। सम्भवतः इसी कारण उन्हें ज्ञान भास्कर जैसी अनेकों उपाधियों से विभूषित किया जा चुका है। भारतीय आर्ष परम्पराओं में मंत्र, तंत्र व अध्यात्म के उपदेशक और पथ प्रदर्शक तथा विभिन्न गुह्य विधाओं के ग्रंथों के प्रणेता आज पूर्ण रूप से भगवान और ईश्वर रूपी इस संसार के लिए समर्पित हो चुके हैं। प्रस्तुत है उनकी शक्तिशाली लेखनी से निःसृत अत्यन्त खोजपूर्ण और साधकों के लिए संग्रहणीय एक और कृति।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (उ.प्र.)